राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मानदंडों पर आधारित हिंदी पाठ्यपुस्तक

सरस्वती सरगम

हिंदी पाठमाला 8

लेखिकाएँ

गीता बुद्धिराजा

एम०ए०, बी०एड्०

डॉ० जयश्री अय्यंगार

एम०ए०, एम०फिल० (हिंदी)

(एन०सी०ई०आर०टी०, डी०एस०ई०आर०टी० द्वारा पुरस्कृत)

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:

• Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
• Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
• Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
• Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
• Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
• Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2020

ISBN: 978-93-53621-57-5

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.

All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2SRG080HINAB19CBY

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

आमुख

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहरी तथा व्यावहारिक जीवन से जोड़ना चाहिए। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखकर यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इस पुस्तक के माध्यम से स्कूल और घर की दूरी कम करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने तथा रटा देने की प्रवृत्ति का प्रबल विरोध किया गया है। आशा है कि यह कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति में चर्चित बाल-केंद्रित शिक्षा की दिशा में सफलता प्रदान करवाएगा।

इस उद्देश्य में तभी सफलता मिलेगी, जब सभी स्कूलों के प्राचार्य/प्राचार्या और अध्यापक/अध्यापिकाएँ बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों, रचनात्मक प्रश्नों, पाठ से संबंधित प्रश्नों की मदद से सीखने और अपने अनुभवों पर विचार प्रकट करने का अवसर देंगे। हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि बच्चों को उचित अवसर, समय और स्वतंत्रता दी जाए तो वे अपने ज्ञान, सूझ-बूझ तथा कल्पना से ऊँची उड़ान भर सकते हैं। बच्चों के सामने यदि ज्ञान की सारी सामग्री परोस दी जाए तो वे अपनी क्षमता के अनुसार उसमें से बहुत अधिक ज्ञानवर्धक चीज़ें निकाल लेते हैं। यदि बच्चों को उपदेश दिया जाए तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। जब वे कहानी तथा कविता पढ़ते हैं या सुनते हैं, तो नैतिक तथा मानवीय-मूल्य सहजता से स्वीकार कर लेते हैं।

- पुस्तक को तैयार करते समय पाठों का चुनाव बच्चों की बौद्धिक क्षमता तथा भाषा-स्तर को ध्यान में रखते हुए किया गया है।
- पाठ के आरंभ में पाठ को स्पष्ट करने वाली भूमिका दी गई है।
- पाठों में दिए गए चित्र तथा अभ्यास बच्चों को आकर्षित करेंगे तथा वे कुछ-न-कुछ संदेश भी अवश्य ग्रहण करेंगे।
- सोचिए और बताइए यह प्रश्न बच्चों के सोचने, समझने और लिखने की क्षमता को बढ़ावा देता है।
- अभ्यास बनाते समय यह ध्यान रखा गया है कि बच्चे स्वयं सोचें तथा आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को प्रकट कर सकें।
- बच्चे जब अपने विचारों को प्रकट करेंगे तो उन्हें नए-नए शब्दों की जानकारी होगी तथा उनका शब्द-भंडार भी बढ़ेगा।
- बच्चे और खेल दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, इसलिए पुस्तक के बीच-बीच में बच्चों को आकर्षित करने के लिए खेल तथा खेल से संबंधित गतिविधियाँ भी दी गई हैं।
- हमारी संस्कृति, कलाओं तथा लोक-कलाओं से भरपूर है। बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए पुस्तक में उन्हें यथा स्थान दिया गया है।
- पुस्तक का निर्माण सी०बी०एस०ई० समेत विभिन्न राज्यों के शिक्षा बोर्ड्स के पाठ्यक्रम को ध्यान रखते हुए किया गया है।
- पाठ्यक्रम को तैयार करते समय अहिंदी भाषी क्षेत्रों के छात्रों का विशेष ध्यान रखा गया है।

शिक्षाविदों एवं अभिभावकों के ऐसे सुझावों का हम स्वागत करेंगे, जिससे पुस्तक के आवश्यक संशोधन में सहायता ली जा सके।

–लेखिकाएँ

विषय-सूची

• **कर्नाटक रत्न–डॉ० शिवकुमार स्वामी** ..... (*vi*)

1. **हम कर सकते हैं** (देशभक्ति कविता)
   –सुनीता यादव 07
2. **ताई** (मनोवैज्ञानिक कहानी)
   –विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' 13
3. **सदाबहार मिज़ोरम** (लेख)
   –विष्णु प्रभाकर 23
   ◆ भारत के तीर्थस्थान–केदारनाथ और बदरीनाथ (पर्यटन) (अतिरिक्त पठन) 30
4. **कर्ण का मित्र-प्रेम** (कविता)
   –रामधारी सिंह 'दिनकर' 32
5. **मुख्य अतिथि** (नाटक)
   –डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल 37
   ◆ पक्षी जैसी उड़ान (जानकारी)
   (अतिरिक्त पठन) 47
6. **प्रियतम** (कविता)
   –सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 48
7. **गूदड़ साँईं** (बाल मनोवैज्ञानिक कहानी)
   –जयशंकर प्रसाद 55
8. **रामायण और महाभारत के महापात्र** (व्यक्तित्व) 62
   ◆ संगीत जगत की दो धाराएँ (व्यक्तित्व) (अतिरिक्त पठन) 68
9. **जो बीत गई सो बात गई** (कविता)
   –हरिवंश राय बच्चन 70

10. **खोटा सिक्का** (कहानी)
–जगतराम आर्य 75

11. **जैसे उनके दिन फिरे** (व्यंग्य)
–हरिशंकर परसाई 82
◆ संसार रथ के दो पहिये (व्यक्तित्व) (अतिरिक्त पठन) 91

12. **हम दीवानों की क्या हस्ती** (कविता)
–भगवतीचरण वर्मा 93

13. **वेलकम एंजिल** (कहानी)
–रेनू मंडल 98
◆ कहाँ है वह गाँव? (कविता) (अतिरिक्त पठन)
–डॉ० जयश्री अय्यंगार 104

14. **घीसा** (रेखाचित्र)
–महादेवी वर्मा 105

15. **भक्ति धारा** (पद)
–सूरदास, रसखान, युगलप्रिया 113

16. **बूढ़ी अम्मा** (कहानी)
–आर्यावर्ती सरोज 'आर्या' 118

मेरा पन्ना (परियोजना कार्य) **125–137**
- परियोजना-1 – प्रस्ताव-लेखन 125
- परियोजना-2 – सार-लेखन 132
- परियोजना-3 – सूचना-लेखन 135
- परियोजना-4 – कहानी-लेखन 137

- शब्दकोश का प्रयोग 138
- हिंदी वर्तनी का मानकीकरण 139
- सीखने के प्रतिफल (Learning Outcome) 140

कर्नाटक रत्न-डॉ० शिवकुमार स्वामी

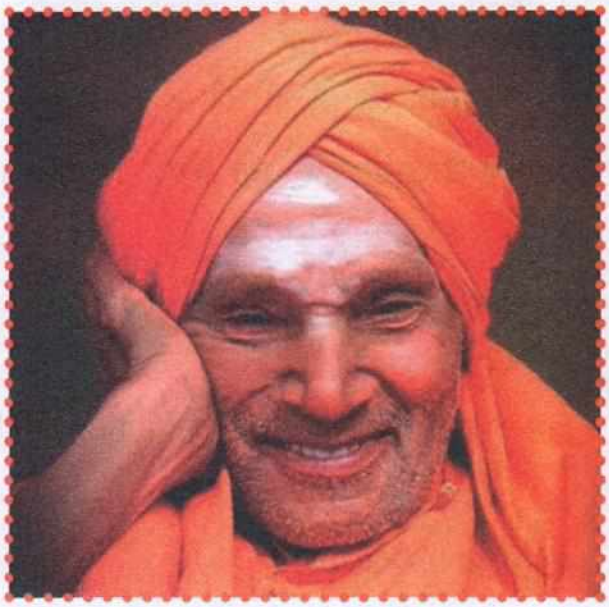

डॉ० शिवकुमार स्वामी जी

इतिहास गवाह है कि भारत की पावन भूमि पर समय-समय पर महान विभूतियों ने जन्म लिया। इनके नाम इतिहास के पन्नों पर हमेशा मार्गदर्शक के रूप में जगमगाते हैं। डॉ० शिवकुमार स्वामी जी भी इन्हीं महान हस्तियों में से एक माने जाते हैं। शिकुमार स्वामी जी का जन्म 1 अप्रैल, 1907 को कर्नाटक के रामनगर जिले के वीरपुरा नामक गाँव में हुआ था। बचपन से अपनी अलग पहचान बनाने वाले शिवकुमार जी 12वीं सदी के समाज सुधारक बसवण्णा से प्रभावित थे। इसी कारण लिंगायत समाज के सिद्धगंगा मठ के मठाधीश होने के बावजूद भी इन्होंने जाति, मत, संप्रदाय से परे 'त्रिविध दासोह' की व्यवस्था की, जिसमें करीब दस हज़ार छात्र लाभ उठा रहे हैं। यहाँ ज्ञान, निवास, अन्न की व्यवस्था नि:शुल्क रूप में निरत होती है। सिद्धगंगा एजुकेशन सोसायटी के तहत लगभग 125 शिक्षण संस्थान, इंजीनियरिंग तथा बिजनेस स्कूल संचालित हैं। के०जी० से पी०जी० तक ज्ञान संस्थाएँ चलती हैं।

यहाँ पर कोई जाति, मत या संप्रदाय की दीवार आड़े नहीं आती। यहाँ आश्रम में मुफ़्त निवास, आहार और ज्ञान दिया जाता है। आधुनिक तकनीकी विज्ञान के साथ संस्कृत का भी अध्ययन कराया जाता है। अनुशासन और अध्ययन के पाठ एक साथ पढ़ाए जाते हैं। इसलिए स्वामी जी को मानवता के पुजारी, चलते-फिरते भगवान के रूप में पूजा और माना जाता है। इन्हें 'कायक योगी' तथा 'त्रिविध दासोही' जैसे नामों से भी पुकारा गया। इनका कार्य इनकी पहचान है। भारत सरकार ने इन्हें पद्म भूषण से अलंकृत किया है। कर्नाटक सरकार ने 'कर्नाटक रत्न' से सम्मानित किया है। गरीबों की आवाज़ बने शिवकुमार स्वामी जी 111 साल की उम्र में शिवाधीन हो गए। पूरा कर्नाटक दुख के सागर में डूब गया, लेकिन भविष्य में इनके पद-चिह्नों पर चलने वाला कोई योगी ज़रूर अवतरित होगा।

–संकलित

1 हम कर सकते हैं

चिंतन-मनन

जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। चलते रहना ही जीवन का नाम है।

हम कर सकते, हम कर सकते,
बार-बार ये बोलो तुम।
ये काम हमसे नहीं होता,
इस पर होठ न खोलो तुम।

हरदम चींटी चलती रहती,
क्षमता से अति ढोती है।
मछली दिनभर दौड़ लगाती,
फिर भी कब वो सोती है।

गिरकर उठो, उठकर बैठो,
फिर दौड़ लगा दो तुम।

आज का काम आज करो तुम,
कल पर कभी न छोड़ो जी।
हिलमिल कर सब बढ़ते रहना,
सबसे मीठा बोलो जी।

सुबह-सवेरे बिस्तर छोड़ो,
रात में जल्दी सो लो तुम।
हम कर सकते, हम कर सकते,
बार-बार ये बोलो तुम।

–सुनीता यादव

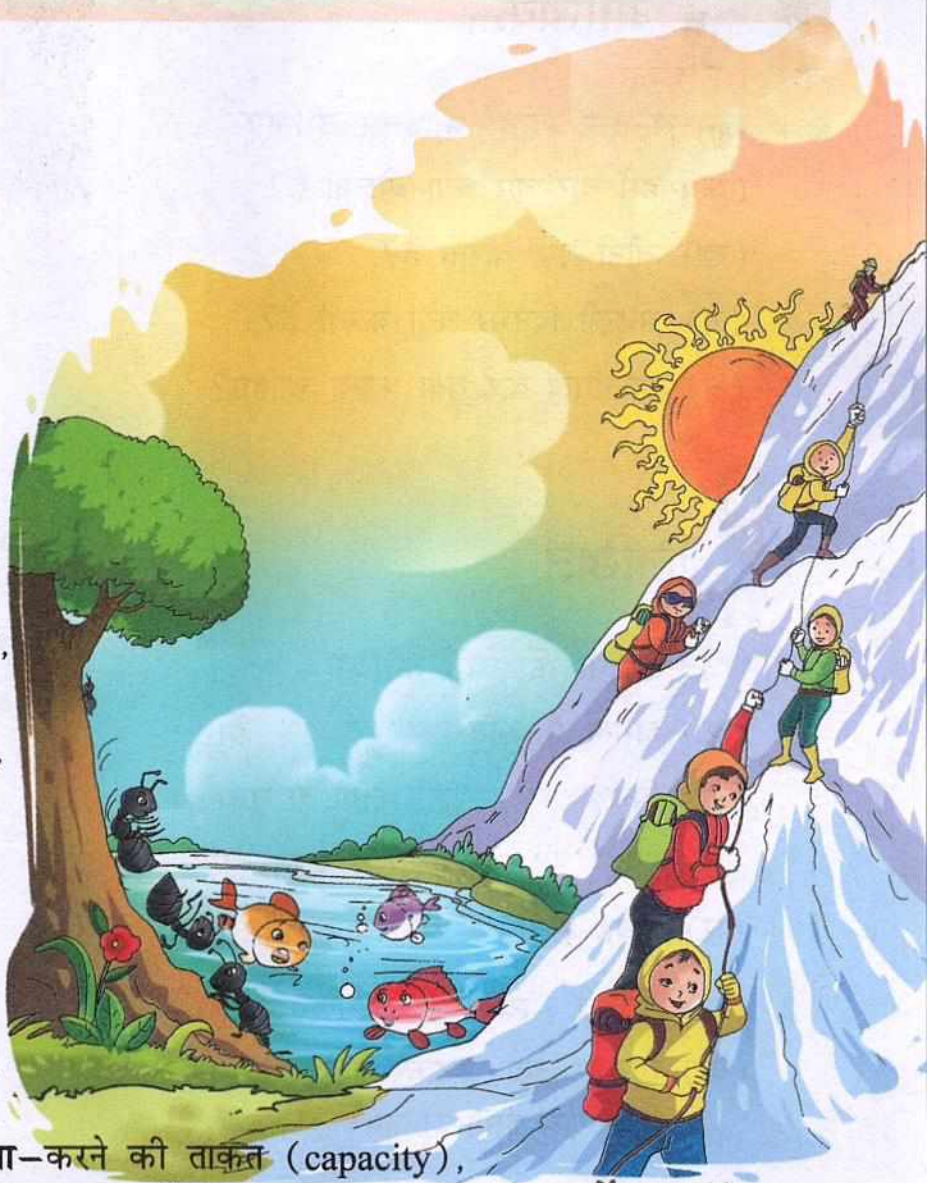

शब्दार्थ–**होठ**–ओष्ठ (lips), **क्षमता**–करने की ताक़त (capacity), **दौड़**–आगे बढ़ना (to go ahead), **बिस्तर**–बिछौना (bed)

कवयित्री परिचय

श्रीमती सुनीता यादव का जन्म 23 फरवरी, 1973 को भोपाल में हुआ। इन्होंने हिंदी में एम०ए० किया। इन्होंने कविता, कहानी एवं समीक्षा संबंधी लेखन किया। 'कविता प्रसून' साहित्यिक अकादमी के सहयोग से प्रकाशित हुई। इनकी अनेक बालोपयोगी रचनाएँ भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) हमें बार-बार क्या बोलना है?

(ख) चींटी क्या करती है?

(ग) मछली दिनभर क्या करती है?

(घ) हिलमिल कर क्या करना चाहिए?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) क्षमता से अति ..... है।

(ख) फिर ..... लगा दो तुम।

(ग) ..... कर सब बढ़ते रहना।

(घ) सुबह-सवेरे ..... छोड़ो।

2. संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) गिरकर उठो, उठकर बैठो,
फिर दौड़ लगा दो तुम।

(ख) हरदम चींटी चलती रहती,
क्षमता से अति ढोती है।
मछली दिनभर दौड़ लगाती,
फिर भी कब वो सोती है।

(ग) आज का काम आज करो तुम,
कल पर कभी न छोड़ो जी।
हिलमिल कर सब बढ़ते रहना,
सबसे मीठा बोलो जी।

3. जोड़कर लिखिए–

(क) हरदम चींटी	(*i*) आज करो तुम
(ख) मछली दिनभर	(*ii*) बढ़ते रहना।
(ग) आज का काम	(*iii*) दौड़ लगाती।
(घ) हिलमिल कर सब	(*iv*) बिस्तर छोड़ो।
(ङ) सुबह-सवेरे	(*v*) चलती रहती।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कौन-कौन काम में निरत रहते हैं?

(ख) आज का काम आज ही क्यों करना चाहिए?

(ग) मीठे बोल से क्या-क्या हो सकता है?

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) हम कर सकते हैं– भाव रखने से क्या लाभ होगा?

(ख) कविता का मूल भाव लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. वाक्य के अर्थ एवं भाव में बिना कोई बदलाव लाए उसे दूसरे वाक्य में बदलना, वाक्य परिवर्तन कहलाता है।

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं–**(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्र वाक्य।**

(क) सरल वाक्य–जिन वाक्यों में एक ही क्रिया हो अर्थात् एक ही विधेय हो, भले ही कर्ता (उद्देश्य) एक से अधिक हों, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं।

उदाहरण– 1. चिड़िया उड़ गई।

2. सीता और गीता बाज़ार गईं।

(ख) संयुक्त वाक्य–जिन वाक्यों के सभी उपवाक्य समान स्तर के होते हैं और कोई किसी पर आश्रित नहीं होता, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं।

उदाहरण– 1. आज पिता जी आने वाले थे किंतु नहीं आए।

2. अध्यापिका ने गुस्से से देखा और विद्यार्थी चुप हो गए।

(ग) मिश्र वाक्य–ऐसे वाक्य जिनमें एक प्रधान उपवाक्य और दूसरा आश्रित उपवाक्य होता है, वे मिश्र वाक्य कहलाते हैं।

उदाहरण– 1. हो सकता है हम नया घर खरीदें।

2. माता चाहती है कि उसकी बेटी अफ़सर बने।

निम्नलिखित वाक्यों को पहचानकर उनके भेद लिखिए–

(क) गिरकर उठो और उठकर बैठो। .....

(ख) यह काम हम कर सकते हैं। .....

(ग) चींटी चलती रहती है फिर भी थकती नहीं। .....

(घ) रात में जल्दी सोओ और सुबह जल्दी उठो। .....

(ङ) कोई काम कठिन न मानो। .....

2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कर लिखिए–

(क) चींटी चलती रहती है। – मिश्र वाक्य

.....

(ख) अपना काम कर लो और खाना खा लो। – सरल वाक्य

.....

(ग) हमें मिलजुल कर पढ़ना है। – संयुक्त वाक्य

.....

3. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) काम – .....

(ख) दौड़ – .....

(ग) मीठा – .....

(घ) सुबह – .....

(ङ) पढ़ना – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. यह कविता पढ़ने के बाद आपको कौन-सा दोहा याद आता है?
2. सोहनलाल द्विवेदी की कविता 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' का आशय इस कविता से जुड़ा है– भाव लिखिए।

क्रियाकलाप

- लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
  कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

  नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है
  चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
  मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
  चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
  आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
  कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियाँ सिंधु में .....

.....

.....

.....

.....

..... हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है .....

.....

.....

.....

.....

..... हार नहीं होती।

उक्त कविता सोहनलाल द्विवेदी की बहुचर्चित रचना है, इसे ढूँढ़कर पूर्ण कीजिए।

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. नौका कब पार नहीं होती?

   .....

2. नन्हीं चींटी हारती क्यों नहीं है?

   .....

3. किसकी मेहनत बेकार नहीं होती?

   .....

2 ताई

चिंतन-मनन

बच्चे प्यार के भूखे होते हैं। उनके साथ स्नेहपूर्वक व्यवहार करने से वे भी उसी प्रकार स्नेहपूर्ण व्यवहार करते हैं। वास्तव में नन्हे-मुन्ने भगवान के स्वरूप होते हैं।

1

"ताऊ जी, हमें लेलगाड़ी (रेलगाड़ी) ला दोगे?" कहता हुआ एक पाँच वर्ष का बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा। बाबू साहब ने दोनों बाँहें फैलाकर कहा, "हाँ बेटा, ला देंगे।" बालक को गोद में उठाकर उसका मुख चूमकर बोले, "क्या करेगा रेलगाड़ी का?"

बालक बोला, "उसमें बैठकर बली दूल जाएँगे। हम भी जाएँगे, चुन्नी को भी ले जाएँगे। पिता जी को नहीं ले जाएँगे। वे हमें लेलगाड़ी लाकर नहीं देते। ताऊ जी, तुम ला दोगे तो तुम्हें ले जाएँगे!"

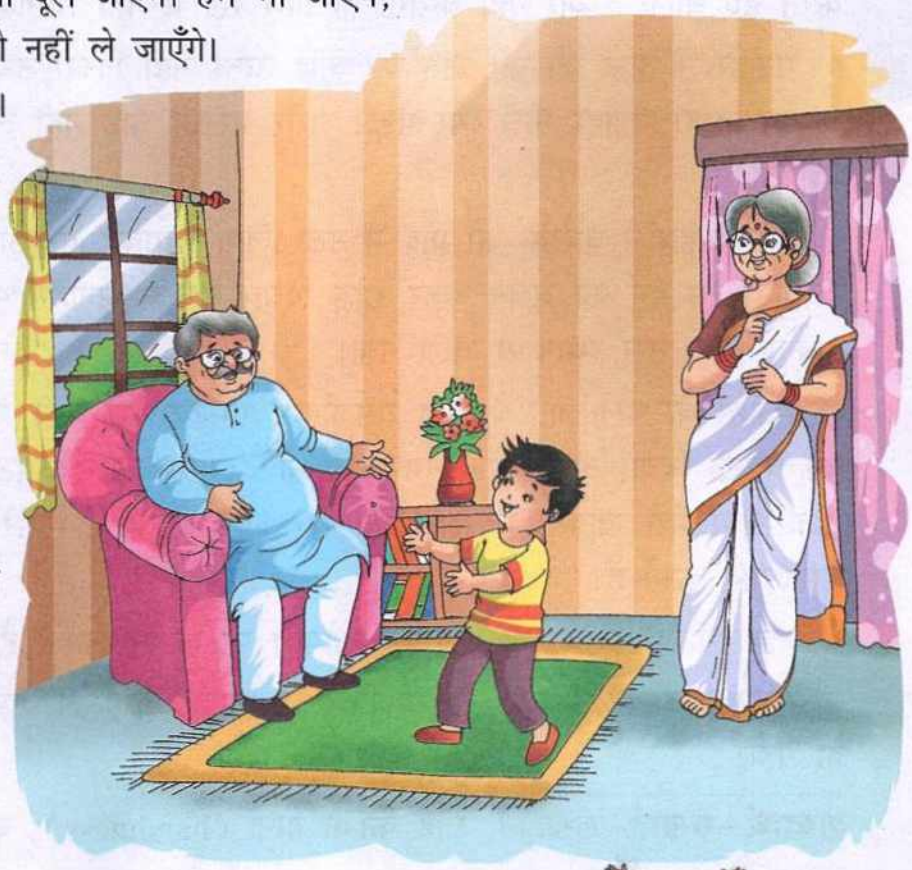

बाबू साहब ने कहा, "और किसे ले जाएगा?"

बालक क्षणभर सोचकर बोला, "बछ औल किसी को नहीं ले जाएँगे।"

पास ही बाबू रामजीदास की अर्धांगिनी बैठी थीं। बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा, "और अपनी ताई को नहीं ले जाएगा?"

शब्दार्थ–**अर्धांगिनी**–पत्नी (wife)

बालक कुछ देर तक अपनी ताई को देखता रहा। ताई जी उस समय कुछ चिढ़ी हुई-सी बैठी थीं। बालक को उनके मुख का भाव कुछ अच्छा न लगा। वह बोला, "ताई को नहीं ले जाएँगे।"

ताई जी सुपारी काटती हुई बोलीं, "अपने ताऊ जी को ही ले जा। मेरे ऊपर दया रख!" ताई ने यह बात बड़ी रुखाई के साथ कही। बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरंत समझ गया। बाबू साहब ने फिर पूछा, "ताई को क्यों नहीं ले जाएगा?"

"ताई हमें प्यार नहीं करतीं!"

"जो प्यार करेंगी तो ले जाएगा?"

बालक को इसमें कुछ संदेह था। ताई का भाव देखकर उसे यह आशा नहीं थी कि वे प्यार करेंगी। बालक मौन ही रहा। बाबू साहब ने फिर पूछा, "क्यों रे, बोलता क्यों नहीं? ताई प्यार करें तो रेल पर बिठाकर ले जाएगा?" बालक ने ताऊ जी को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया परंतु मुख से कुछ नहीं कहा।

बाबू साहब उसे अपनी अर्धांगिनी के पास ले गए और बोले, "लो, इसे प्यार कर लो तो यह तुम्हें भी ले जाएगा।" परंतु बच्चे की ताई श्रीमती रामेश्वरी को पति की यह चुहलबाज़ी अच्छी न लगी। वे तुनककर बोलीं, "तुम्हीं रेल पर बैठकर जाओ, मुझे नहीं जाना है!"

बाबू साहब ने रामेश्वरी की बात पर ध्यान नहीं दिया। बच्चे को उनकी गोद में बिठाने की चेष्टा करते हुए बोले, "प्यार नहीं करोगी तो फिर रेल में नहीं बिठाएगा, है न मनोहर?"

मनोहर ने ताऊ जी की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उधर ताई ने मनोहर को अपनी गोद से धकेल दिया। मनोहर नीचे गिर पड़ा। शरीर पर तो चोट नहीं लगी, पर हृदय में चोट लगी। बालक रो पड़ा।

बाबू साहब ने बालक को गोद में उठा लिया, चूमकर-पुचकारकर चुप कराया और कुछ पैसे तथा रेलगाड़ी ला देने का वचन देकर छोड़ दिया। बालक मनोहर भयपूर्ण दृष्टि से अपनी ताई की ओर ताकता हुआ उस स्थान से चला गया।

मनोहर के चले जाने के बाद रामजीदास रामेश्वरी से बोले, "तुम्हारा यह व्यवहार कैसा है? बच्चे को धकेल दिया! अगर चोट लग जाती तो?" रामेश्वरी मुँह मटकाकर बोलीं, "लग जाती तो अच्छा होता, क्यों मेरी खोपड़ी पर लादे देते थे? आप ही तो उसे मेरे ऊपर डालते थे और आप ही अब ऐसी बातें करते हैं।"

बाबू साहब कुढ़कर बोले, "इसे खोपड़ी पर लादना कहते हैं?"

रामेश्वरी बोलीं, "और नहीं तो किसे कहते हैं? तुम्हें तो अपने आगे किसी का दुख-सुख सूझता ही नहीं।

शब्दार्थ–**रुखाई**–रूखापन, स्नेह का न होना (harshness), **चुहल**–हँसी-मज़ाक (joking)

न जाने कब किसका जी कैसा होता है। तुम्हें इन बातों की कोई परवाह ही नहीं, बस अपनी चुहल से काम है!"

बाबू साहब, "बच्चों की प्यारी-प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो ही जाता है। मगर तुम्हारा हृदय न जाने किस धातु का बना हुआ है!"

रामेश्वरी, "तुम्हारा हो जाता होगा। और, होने को होता भी है, मगर वैसा बच्चा भी तो हो! पराए धन से भी कहीं घर भरता है?"

बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले, "यदि अपना सगा भतीजा भी पराया धन कहा जा सकता है तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे!"

रामेश्वरी कुछ उत्तेजित होकर बोलीं, "तुम्हारा भतीजा है, तुम चाहे जो समझो लेकिन मुझे ये बातें अच्छी नहीं लगतीं। आदमी संतान के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं– पूजा-पाठ करते हैं, व्रत रखते हैं; पर तुम्हें इन बातों से क्या काम? रात-दिन भाई-भतीजों में मगन रहते हो!"

बाबू साहब के मुख पर घृणा का भाव छलक आया। उन्होंने कहा, "पूजा-पाठ, व्रत सब ढकोसले हैं। जो वस्तु भाग्य में नहीं, वह पूजा-पाठ से कभी प्राप्त नहीं हो सकती। मेरा तो यह अटल विश्वास है।" यह कहकर वे बाहर की ओर चले गए।

2

बाबू रामजीदास धनी आदमी हैं। कपड़े की आढ़त का काम करते हैं, ब्याज पर रुपया भी लेते-देते हैं। इनका एक छोटा भाई है। उसका नाम है कृष्णदास। दोनों भाइयों का परिवार एक ही मकान में रहता है। बाबू रामजीदास की आयु पैंतीस वर्ष के लगभग है और छोटे भाई कृष्णदास की छब्बीस वर्ष के लगभग। रामजीदास निःसंतान हैं। कृष्णदास की दो संतानें हैं। एक पुत्र– वही पुत्र, जिससे पाठक परिचित हो चुके हैं– और एक कन्या है। कन्या की आयु दो वर्ष के लगभग है।

शब्दार्थ–ढकोसला–झूठा दिखावा (show-off)

रामजीदास अपने छोटे भाई और उनकी संतान पर बड़ा स्नेह रखते हैं–ऐसा स्नेह कि अपनी संतानहीनता कभी खटकती ही नहीं। छोटे भाई की संतान को वे अपनी ही संतान समझते हैं। दोनों बच्चे भी रामजीदास को अपने पिता से भी अधिक समझते हैं, परंतु रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी संतानहीनता का बड़ा दुख है। वे दिन-रात अपनी संतान की सोच में ही घुला करतीं! पति को अपने भाई के बच्चों से प्रेम करते देख उनका दुख और भी बढ़ जाता।

वे जब-तब अपने पति से कहतीं, "हमारे बाद हमारे वंश का नाम कैसे चलेगा?" बाबू साहब हँसकर कहते, "अरे! तुम भी कहाँ की बातें ले आईं। नाम संतान से नहीं चलता। नाम अपनी सुकृति से चलता है। तुलसीदास को देश का बच्चा-बच्चा जानता है। सूरदास को क्या हम भुला पाए हैं! और तो और नि:संतान गिरधारीलाल द्वारा बनवाई गई धर्मशाला और अनाथालय से उनका नाम अब तक चला आ रहा है।"

रामेश्वरी न कहा, "शास्त्र में लिखा है कि जिसके पुत्र नहीं होता, उसकी मुक्ति नहीं होती।"

बाबू साहब बोले, "तो क्या सभी पुत्रवानों को मुक्ति मिल जाती है? कैसी बातें करती हो!" पति के तर्कों के सामने रामेश्वरी निरुत्तर हो जातीं।

3

रामेश्वरी को माता बनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था किंतु उनके हृदय में वे सभी गुण विद्यमान थे, जो एक माता के हृदय में होते हैं। उनका हृदय उन बच्चों की ओर खिंचता तो था परंतु जब उन्हें ध्यान आता था कि ये बच्चे मेरे नहीं, दूसरे के हैं, तब उनके प्रति न जाने क्यों द्वेष उत्पन्न हो जाता था। विशेषकर उस समय उनके द्वेष की मात्रा और भी बढ़ जाती थी, जब वे देखती थीं कि उनके पतिदेव उन बच्चों पर प्राण देते हैं।

शाम का समय था। रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थीं। पास ही उनकी देवरानी बैठी थी। दोनों बच्चे छत पर दौड़-दौड़कर खेल रहे थे। रामेश्वरी उनका खेल देख रही थी। इस समय रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना-कूदना भला मालूम हो रहा था। वायु में उड़ते हुए उनके बाल, कमल की तरह खिले हुए उनके नन्हे-नन्हे मुख, उनकी प्यारी-प्यारी तोतली बातें, उनका चिल्लाना, भागना इत्यादि क्रीड़ाएँ उनके हृदय को शीतल कर रही थीं। सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा। वह खिलखिलाती हुई रामेश्वरी की गोद में जा गिरी। उसके पीछे-पीछे मनोहर भी दौड़ता हुआ आया और वह भी उन्हीं की गोद में जा गिरा। रामेश्वरी उस समय सारा द्वेष भूल गईं। उन्होंने दोनों बच्चों को हृदय से लगा लिया और जी भरकर दोनों को प्यार किया। उस समय यदि कोई अपरिचित मनुष्य उन्हें देखता तो उसे यही विश्वास होता कि रामेश्वरी ही उन बच्चों की माँ हैं।

शब्दार्थ–सुकृति–अच्छे कार्य (good work)

दोनों बच्चे बड़ी देर तक उनकी गोद में खेलते रहे। सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गईं।

"मनोहर, ले रेलगाड़ी," कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आए। उनका स्वर सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे। रामजीदास ने पहले दोनों को खूब प्यार किया, फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे। इधर रामेश्वरी की नींद टूटी। पति को बच्चों में मगन देखकर उनकी भौंहें तन गईं। बच्चों के प्रति हृदय में फिर वही द्वेष का भाव जाग उठा।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आए और मुसकराकर बोले, "आज तो तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में भी इनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है!"

रामेश्वरी को पति की यह बात बहुत बुरी लगी और अपनी कमज़ोरी पर बड़ा दुख हुआ। रामजीदास बोले, "इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपनी संतान के लिए सोच करना वृथा है। यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो तो तुम्हें ये ही अपनी संतान प्रतीत होने लगेंगे। मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो।" यह बात बाबू साहब ने नितांत शुद्ध हृदय से कही थी परंतु रामेश्वरी को इसमें व्यंग्य की तीक्ष्ण गंध मालूम हुई।

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा, "अब झेंपने से क्या लाभ? अपने प्रेम को छिपाने की चेष्टा करना व्यर्थ है; छिपाने की आवश्यकता ही नहीं!"

रामेश्वरी जल-भुनकर बोलीं, "मुझे क्या पड़ी है जो मैं प्रेम करूँगी। निगोड़े आप ही आ-आकर घुसते हैं। एक घर में रहने से कभी-कभी हँसना-बोलना पड़ता ही है। अभी परसों ज़रा यों ही धकेल दिया, उस पर तुमने सैकड़ों बातें सुनाईं। संकट में प्राण हैं, न यों चैन, न यों चैन!"

बाबू साहब को पत्नी के वाक्य सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कर्कश स्वर में कहा, "न जाने कैसे हृदय की स्त्री है। अभी अच्छी-खासी बैठी बच्चों को प्यार कर रही थी, मेरे आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगी। न जाने मेरी बातों में कौन-सा विष घुला रहता है! यदि मेरा कहना ही बुरा मालूम होता है तो नहीं कहूँगा लेकिन इतना याद रखो कि अब जो कभी इनके विषय में अपशब्द निकाले तो अच्छा न होगा।"

रामेश्वरी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। प्रायः बच्चों के पीछे पति-पत्नी में कहा-सुनी हो जाती थी और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे।

एक दिन रामेश्वरी छत पर टहल रही थीं कि मनोहर दौड़ता हुआ आया। संध्या का समय था। आकाश रंग-बिरंगी पतंगों से भरा था। यदि ये पतंगें कट-कटकर उसकी छत पर गिरें तो कितना

शब्दार्थ–**वृथा**–बेकार, व्यर्थ (unnecessary), **झेंपना**–लजाना, शर्मिंदा होना (embarrassing), **निगोड़ा**–अभागा, दुष्ट (hapless), **कर्कश**–कठोर, निर्दय (harsh)

आनंद आएगा! देर तक पतंग गिरने की प्रतीक्षा करने के बाद वह दौड़कर रामेश्वरी के पास आया और उनकी टाँगों से लिपटकर बोला, "ताई, हमें पतंग मँगा दो!"

रामेश्वरी ने झिड़ककर कहा, "चल हट, अपने ताऊ से जाकर माँग!"

मनोहर कुछ अप्रतिभ-सा होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा। अब उससे रहा न गया। इस बार उसने बड़े लाड़ में आकर अत्यंत करुण स्वर में कहा, "ताई, पतंग मँगा दो; हम भी उड़ाएँगे!"

इस बार उसकी भोली प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा कुछ पसीज गया। वे कुछ देर तक उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखती रहीं। फिर उन्होंने एक लंबी साँस लेकर मन-ही-मन में कहा—यदि यह मेरा पुत्र होता तो मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती! निगोड़ा इतना सुंदर है और कैसी प्यारी-प्यारी बातें करता है! जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लूँ!

यह सोचकर वे उसके सिर पर हाथ फेरने ही वाली थीं कि इतने में मनोहर उन्हें मौन देखकर बोला, "तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी तो ताऊ जी से तुम्हारी शिकायत करेंगे!"

यद्यपि बच्चे की इस भोली बात में भी बड़ी मधुरता थी तथापि रामेश्वरी का मुख क्रोध के मारे लाल हो गया। वे झिड़ककर बोलीं, "जा, कह दे अपने ताऊ जी से! देखूँ, वे मेरा क्या करेंगे!"

मनोहर भयभीत होकर उनके पास से हट गया और फिर सतृष्ण नेत्रों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा।

इधर रामेश्वरी ने सोचा—यह सब ताऊ के दुलार का ही फल है कि यह छोटा-सा लड़का मुझे धमकाता है।

उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई और रामेश्वरी के ऊपर से होती हुई छज्जे की ओर गई। पतंग छज्जे पर से होती हुई नीचे, घर के आँगन में जा गिरी। एक पैर छज्जे की मुँडेर पर

शब्दार्थ—**अप्रतिभ**—उदास (sad), **पसीजना**—दया से भीगना, आर्द्र होना (to be kind), **सतृष्ण**—ललचाई हुई (with greed), **मुँडेर**—छत के चारों ओर उठाई गई मेंड़ (a demarcation wall)

रखकर मनोहर ने नीचे आँगन में झाँका और पतंग को आँगन में गिरते देखकर प्रसन्नता के मारे फूला न समाया। वह नीचे जाने के लिए शीघ्रता से घूमा परंतु घूमते समय मुँडेर पर से उसका पैर फिसल गया। वह उसे पकड़कर लटक गया और रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया, "ताई!" रामेश्वरी ने धड़कते हुए हृदय से इस घटना को देखा। उधर मनोहर के हाथ मुँडेर पर से फिसलने लगे। अत्यंत भय तथा करुण नेत्रों से रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया, "अरी ताई!" रामेश्वरी की आँखें मनोहर की आँखों से जा मिलीं। मनोहर की वह करुणा दृष्टि देखकर रामेश्वरी का कलेजा मुँह को आ गया। उन्होंने व्याकुल होकर मनोहर को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उनका हाथ मनोहर के हाथ तक पहुँचा ही था कि मनोहर के हाथ से मुँडेर छूट गई। वह नीचे आ गिरा। रामेश्वरी चीख मारकर छज्जे पर गिर पड़ीं।

रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार में बेहोश पड़ी रहीं। कभी-कभी बड़े ज़ोर से चिल्ला उठतीं और कहतीं, "देखो...देखो... वह गिरा जा रहा है... उसे बचाओ... दौड़ो... मेरे मनोहर को बचा लो!" कभी वह कहतीं, "बेटा मनोहर, मैंने तुझे नहीं बचाया। हाँ, मैं चाहती तो बचा सकती थी, मैंने तुझे नहीं बचाया! मैंने देर कर दी!" इसी प्रकार के प्रलाप वे किया करतीं।

मनोहर की टाँग की हड्डी उखड़ गई थी। हड्डी बिठा दी गई। वह क्रमशः फिर अपनी असली हालत पर आने लगा। एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का ज्वर कम हुआ। होश आने पर उन्होंने पूछा, "मनोहर कैसा है?"

रामजीदास ने उत्तर दिया, "अच्छा है।" वे बोलीं, "उसे मेरे पास लाओ!"

मनोहर को रामेश्वरी के पास लाया गया। रामेश्वरी ने उसे बड़े प्यार से हृदय से लगाया। आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। हिचकियों से गला रुँध गया।

रामेश्वरी कुछ दिनों बाद पूर्ण स्वस्थ हो गईं। अब वे मनोहर की बहिन चुन्नी को भी खूब प्यार करतीं और मनोहर तो अब उनका प्राणाधार हो गया। दोनों के बिना उन्हें एक क्षण भी चैन नहीं पड़ता।

–विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

शब्दार्थ–प्रलाप–बड़बड़ाना, अपने हृदय के दुख को बताना (blether)

लेखक परिचय

विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' का जन्म 1891 में पंजाब के अंबाला नामक नगर में हुआ था। ये प्रेमचंद परंपरा के ख्याति प्राप्त कहानीकार थे। प्रेमचंद के समान साहित्य में आपका दृष्टिकोण भी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद था। इनकी अधिकांश कहानियाँ चरित्र प्रधान हैं। इनकी ताई कहानी हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– माँ, भिखारिणी, खोटा बेटा, चित्रशाला आदि। इनका निधन 1945 में हुआ।

अभ्यास के लिए

मौखिक

• **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) मनोहर की बहन का क्या नाम था?
(ख) रामेश्वरी को कौन-सा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था?
(ग) रामजीदास के छोटे भाई का नाम क्या था?
(घ) मनोहर ने ताई को क्या मँगवाकर देने के लिए कहा?
(ङ) छत से गिरने पर मनोहर को कहाँ चोट लगी?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) बाबू रामजीदास ..... आदमी थे।
(ख) शास्त्र में लिखा है कि जिसके ..... नहीं होता, उसकी मुक्ति नहीं होती।
(ग) एक दिन रामेश्वरी ..... पर टहल रही थी।
(घ) एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का ..... कम हुआ।

2. किसने, किससे कहा?

(क) "ताऊ जी, हमें लेलगाड़ी ला दोगे?" ....
(ख) "ताई को नहीं ले जाएँगे।" ....
(ग) "इसे खोपड़ी पर लादना कहते हैं?" ....
(घ) "उसे मेरे पास लाओ।" ....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) ताई से मनोहर नफ़रत करता था। इसका क्या कारण था?
(ख) ताई का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ?
(ग) रामेश्वरी बेहोशी की हालत में प्रलाप क्यों करती थी?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) रामजीदास रामेश्वरी को मनोहर से प्रेम करने के लिए क्यों कहते थे? रामेश्वरी मनोहर से घृणा क्यों करती थी?

(ख) रामेश्वरी को जब भी अवसर मिलता तो वह मनोहर पर किस प्रकार अपना क्रोध प्रकट करती? एक उदाहरण दीजिए।

भाषा ज्ञान

1. • हृदय में चोट लगना – दुख पहुँचना • खोपड़ी पर लादना – ज़बरदस्ती सिर पर लादना
• कलेजा मुँह को आना – चित्त व्याकुल होना • कलेजा पसीजना – दया उत्पन्न होना

इन वाक्यांशों का प्रयोग पाठ में हुआ है। ये वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं। इस प्रकार के वाक्यांशों को मुहावरा कहते हैं।

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) भौंहे तानना – .....

.....

(ख) गिरगिट की तरह रंग बदलना – .....

.....

(ग) मुँह ताकना – .....

.....

(घ) सोच में घुला करना – .....

.....

(ङ) हृदय से लगाना – .....

.....

2. निम्नलिखित गद्यांश में विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए–

बाबू साहब उसे अपनी अर्धांगिनी के पास ले गए और बोले लो इसे प्यार कर लो तो यह तुम्हें भी ले जाएगा परंतु बच्चे की ताई श्रीमती रामेश्वरी को पति की यह चुहलबाज़ी अच्छी न लगी

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. यदि ताई आपके सामने आकर खड़ी होतीं तो आप उनके साथ क्या बातें करते? वार्तालाप का अंश लिखिए।
2. 'बच्चे कभी झूठ नहीं बोलते, उनके मुख से सिर्फ़ सच निकलता है' इस विषय पर चर्चा करके एक परिच्छेद लिखिए।
3. 'पछतावा' तभी होता है जब व्यक्ति अपनी गलती को समझ जाता है। ऐसे में वह अपने जीवन में सुधार कैसे ला सकता है? इस विषय पर चर्चा कीजिए।

क्रियाकलाप

- सही शब्द चुनकर मुहावरे लिखिए–

3 सदाबहार मिज़ोरम

चिंतन-मनन

प्रस्तुत पाठ में मिज़ोरम के लोगों के रहन-सहन, रीति-रिवाज़, संस्कृति, उत्सव एवं उद्योग-धंधों की जानकारी दी गई है। एक पिछड़ी जनजाति के लोग जागृत हुए तथा एक राज्य का दर्जा प्राप्त कर चुका मिज़ोरम सबका मन मोह रहा है।

केंद्रशासित प्रदेश के रूप में मिज़ोरम अर्थात् मिज़ो भूमि का उद्घाटन भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 21 जनवरी, 1972 में किया था। इससे पूर्व यह असम का अभिन्न अंग था। पहले बाहर के लोगों के लिए मिज़ो 'लुशाई' कहलाते थे। वास्तव में लुशाई इन्हीं की एक उपजाति है। शासन भी अधिकतर इसी उपजाति के हाथ में रहा है। मिज़ो का अर्थ है–पहाड़ी आदमी।

इस क्षेत्र में लुशाई पहाड़ियाँ हैं। पहाड़ियाँ बहुत ऊँची नहीं हैं, लेकिन रहती हैं सदा हरी-भरी। यहाँ की प्रकृति बहुत मनोरम है, गरमियों में न अधिक गरमी और सरदियों में न अधिक सरदी।

माना जाता है कि मिज़ो लोग बर्मा के 'चिन' पहाड़ों से भारत में आए। इनका प्रारंभिक इतिहास कुछ लोक कथाओं तक ही सीमित है। एक किंवदंती के अनुसार इनके पूर्वज 'छिनलुड' यानी धरती के एक छेद से पैदा हुए थे। पहले ये लोग साईलो शासन के अधीन थे, पर बाद में उपद्रवी हो गए। अंततः सन 1895 में अंग्रेज़ों ने ज़िला आइजोल को इसका मुख्यालय बनाया, जोकि असम के अंतर्गत आता है। इनके मन में संदेह हो गया कि यह इनकी संस्कृति को मिटाने का एक षड्यंत्र है। बस इन्होंने विद्रोह का झंडा उठा लिया। पिछड़ी जनजाति के लोग जागृत हुए। इन्होंने 'मिज़ो कॉमन पीपुल्स यूनियन' नामक राजनीतिक पार्टी बनाई। इस पार्टी ने अपने अलग राज्य की माँग की। भारत की आज़ादी के कई वर्षों के बाद 20 फरवरी, 1987 को इसे एक राज्य का दर्जा प्राप्त हो गया।

शब्दार्थ–**मनोरम**–सुंदर (beautiful), **प्रारंभिक**–शुरुआत (beginning), **सीमित**–निश्चित (limited), **किंवदंती**–अफ़वाह (rumour), **उपद्रवी**–दुष्ट लोग (mob), **अंततः**–आखिर में (at last), **षड्यंत्र**–कुचक्र (conspiracy), **विद्रोह**–उत्पात (revolution), **दर्जा**–स्थान (class/place)

मिज़ो कबीले में अनेक उपजातियाँ हैं; जैसे–लुशाई, रालटे, हमार, चकमा, पवी और लाखेर। लाखेर और पवी उपजातियाँ पहले लड़ाकू थीं। मंगोलों से प्रभावित ये लोग गठीले और स्वस्थ बदन के होते हैं। मिज़ो पुरुष बालों का जूड़ा बनाकर पगड़ी बाँधते हैं। इनके विवाह के नियम बड़े कठोर होते हैं। उत्तराधिकार बड़े पुत्र को मिलता है। स्त्रियाँ बहुत मेहनत करती हैं। बाँस और बेंत की टोकरियाँ बनाना, कपड़े बुनना और रंगना आदि इनका मुख्य कार्य है। स्त्री और पुरुष दोनों धूम्रपान करते हैं। ये कृषिजीवी होते हैं और 'झूम पद्धति' से खेती करते हैं।

लुशाई, रालटे और हमार उपजातियों की अनेक शाखाएँ-प्रशाखाएँ हैं, पर ये सब लोग मिल-जुलकर रहते हैं। इनमें सहयोग की प्रबल भावना है। इनका समाज पितृसत्तात्मक है। मिज़ो पुरुष एक से अधिक विवाह कर सकते हैं। इनमें अधिकतर प्रेम-विवाह होते हैं, लेकिन विवाह-शुल्क को लेकर कड़ा मोल-भाव होता है। हाल में मिज़ो स्त्रियों की स्थिति में सुधार हुआ है। वे पुरुष के समान ही शिक्षित हैं। केरल के बाद सबसे अधिक साक्षरता यहीं है।

तूफ़ानी आँधियाँ चलती रहने के कारण यहाँ के मकान बहुत मज़बूत बनाए जाते हैं। मकान बनाने में अधिकतर बाँस और कड़ी का उपयोग किया जाता है। यहाँ त्योहार कम होते हैं। ये लोग नाटे कद के, पर स्वस्थ होते हैं। कपड़े बुनने में मिज़ो नारियाँ उस्ताद मानी गई हैं। पुरुष कंधे पर एक सुंदर थैला लटकाए रहते हैं, जिनमें खाने की चीज़ें भरी रहती हैं। स्त्री-पुरुष दोनों को आभूषण प्रिय हैं।

शब्दार्थ– **कृषिजीवी**–खेती पर आश्रित (depend on agriculture), **प्रबल भावना**–उत्कट इच्छा (strong desire), **उस्ताद**–गुरु, शिक्षक, प्रवीण (master)

इनके नृत्य में 'चेराव' लोकनृत्य बहुत ही लोकप्रिय है; परंतु इतना ही कठिन भी है। यह किसी की अकाल मृत्यु पर दिवंगत आत्मा के सम्मान के लिए किया जाता है। 'खुवाललम' नृत्य एक विशेष अवसर पर किया जाता है। ये लोग मानते हैं कि स्वर्ग जाने के लिए जीवन में सात उत्सव करने चाहिए। सातवें उत्सव पर यह नृत्य आयोजित होता है। 'सालकिया' नृत्य लाखेर और पवी जाति में लोकप्रिय है। यह पशुओं पर शिकारी की विजय के लिए होता है।

ये लोग अभी भी झूम पद्धति से खेती करते हैं। पहले ये लोग चावल की पर्याप्त पैदावार के कारण आत्मनिर्भर थे, परंतु अब कमी हो गई है। मछली भी कम है। ये हाथी, सूअर, मुरगी आदि सभी पशुओं का मांस खाते हैं। घरेलू उद्योगों में ये बाँस या बेंत के तारों की टोकरियाँ बनाते हैं। लोहे से घरेलू औज़ार और मिट्टी के बरतन भी बना लेते हैं।

पानी की कमी और कठिन चढ़ाई के कारण इस प्रदेश का विकास अभी कम हुआ है, लेकिन हाल के वर्षों में उसमें गति आई है। कॉफ़ी, कोको, रबर, इलायची और काजू के बीज बोने का कार्यक्रम चल रहा है। डीजल बिजली के पाँच स्टेशन भी बन चुके हैं।

–विष्णु प्रभाकर

शब्दार्थ–**लोकप्रिय**–सबको प्यारा, सर्वप्रिय (popular), **विजय**–जीत (victory), **आत्मनिर्भर**–स्वावलंबी (self-dependent)

लेखक परिचय

कथाकार विष्णु प्रभाकर ने सर्वप्रथम 'प्रेमबंधु' और 'विष्णु' नाम से लेखन कार्य आरंभ किया। बाद में 'प्रभाकर' भी इनके नाम में जुड़ गया। इनका जन्म सन 1912 में उत्तर प्रदेश के मुज़फ़्फ़रनगर ज़िले के एक गाँव में हुआ, लेकिन बाल्यकाल हरियाणा में गुज़रा, वहीं इनकी पढ़ाई-लिखाई भी हुई। मौलिक-लेखन के अतिरिक्त विष्णु प्रभाकर 60 से अधिक पुस्तकों का संपादन भी कर चुके हैं।

इन्होंने कहानी, उपन्यास, जीवनी, रिपोर्ताज, नाटक आदि विधाओं में रचना की। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं–आवारा मसीहा (शरत्चंद्र की जीवनी), प्रकाश और परछाइयाँ, बारह एकांकी, अशोक (एकांकी संग्रह), नव प्रभात, डॉक्टर (नाटक), ढलती रात, स्वप्नमयी (उपन्यास), जाने-अनजाने (संस्मरण) आदि।

आवारा मसीहा के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से नवाज़ा गया। दिल्ली में रहकर ये स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य में रत रहे। 11 अप्रैल, 2009 में इनका निधन हो गया।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) मिज़ोरम केंद्रशासित प्रदेश बनने से पहले किस राज्य का अभिन्न अंग था?

(ख) मिज़ो लोग बर्मा के किन पहाड़ों से भारत आए?

(ग) अंग्रेज़ों द्वारा ज़िला आइजोल को मुख्यालय बनाने से मिज़ो लोगों के मन में क्या संदेह उठा?

(घ) पिछड़ी जनजाति के लोगों ने कौन-सी राजनीतिक पार्टी बनाई?

(ङ) मिज़ोरम में किस पद्धति से खेती की जाती है?

(च) मिज़ोरम में कौन-सा नृत्य बहुत लोकप्रिय है?

लिखित

1. सही (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) मिज़ोरम में स्त्री और पुरुष दोनों धूम्रपान करते हैं। ☐

(ख) यहाँ विवाह के नियम कठोर नहीं होते। ☐

(ग) केरल के बाद सबसे अधिक साक्षरता मिज़ोरम में ही है। ☐

(घ) कपड़े बुनने में मिज़ो नारियाँ उस्ताद मानी गई हैं। ☐

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) मकान बनाने में अधिकतर ..... और कड़ी का उपयोग किया जाता है।

(ख) पशुओं पर शिकारी की विजय पर ..... नृत्य किया जाता है।

(ग) ये लोग अभी भी ..... पद्धति से खेती करते हैं।

(घ) 'तूफ़ानी आँधियाँ' में आँधियाँ ..... है।

(ङ) ..... के पाँच स्टेशन भी बन चुके हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) केंद्रशासित प्रदेश के रूप में मिज़ो भूमि का उद्घाटन किसने किया था?

(ख) लुशाई किसे कहते हैं?

(ग) मिज़ोरम में स्त्रियों का मुख्य कार्य क्या है?

(घ) मिज़ो कबीले का समाज किस प्रकार का है?

(ङ) मिज़ोरम के मकान किस प्रकार के होते हैं?

(च) मिज़ोरम में किन-किन चीज़ों की खेती की जाती है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) मिज़ोरम के नृत्यों के विषय में जानकारी दीजिए।

(ख) मिज़ोरम पर एक परिच्छेद लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. 'पहाड़ी आदमी' में पहाड़ी विशेषण है, जो आदमी की विशेषता बता रहा है।

निम्नलिखित शब्दों के आगे सही विशेषण लिखिए–

(क) ..... पहाड़ियाँ (ख) ..... प्रकृति

(ग) ..... जनजाति (घ) ..... थैला

(ङ) ..... मकान (च) ..... लोग

2. काम के करने या होने का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों से क्रिया शब्द छाँटकर लिखिए–

(क) यह असम के अंतर्गत आता है। .....

(ख) अपने अलग राज्य की माँग की। .....

(ग) विवाह को लेकर कड़ा मोल-भाव होता है। .....

(घ) मकान बहुत मज़बूत बनाए जाते हैं। .....

(ङ) मिट्टी के बरतन भी बना लेते हैं। .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. यदि आपको किसी पहाड़ी जगह पर घूमने जाना हो, तो आप कौन-सी जगह चुनेंगे? तर्क सहित लिखिए।
2. मिज़ोरम में हमेशा हरियाली ही रहती है। मिज़ो कबीले में अनेक उपजातियाँ हैं; जैसे–लुशाई, रालटे, हमार, चकमा, पवी और लाखेर। इनमें से किसी एक के रहन-सहन एवं रीति-रिवाज़ के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।
3. कल्पना कीजिए कि आप मिज़ोरम में रहने गए हैं। वहाँ की संस्कृति से कैसे समझौता करेंगे?

क्रियाकलाप

- ये किस राज्य के चित्र हैं? यहाँ की कला, संस्कृति और इतिहास के बारे में चर्चा करके लेख लिखिए।

ललिता महल

महाराजा पैलेस

जगन मोहिनी पैलेस

महिषासुर की प्रतिमा

अतिरिक्त पठन

भारत के तीर्थस्थान– केदारनाथ और बदरीनाथ

भारत एक वैभवशाली और धार्मिक देश है। यहाँ के लोगों को नैतिकता, धार्मिकता तथा दार्शनिक ज्ञान के साथ-साथ योग साधना आदि का अमूल्य लांभ मिलता है। हमारे तीर्थस्थान इस ज्ञान को अधिक समृद्ध बनाते हैं, भक्तों की श्रद्धा बढ़ाते हैं। भक्तों की श्रद्धा ही इस देश को पवित्र बना रही है।

केदारनाथ और बदरीनाथ ऐसे ही दो पवित्र स्थान हैं जिन्हें अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

केदारनाथ–केदारनाथ शिवजी के प्रसिद्ध बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह केदार नामक पहाड़ी पर स्थित है। इसे 'केदारेश्वर' भी कहते हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार नर और नारायण नामक ऋषि ने केदार पर्वत पर मिट्टी का शिवलिंग बनाकर पूजा की थी। शिवजी ने प्रसन्न होकर वर दिया था कि वह मनुष्यों को दर्शन देने के लिए केदार पर ही ज्योतिर्लिंग के रूप में रहेंगे। महाभारत युद्ध के बाद जब पांडव यहाँ तपस्या करने आए थे, तब उन्होंने केदारनाथ का मंदिर बनवाया था।

केदारनाथ मंदिर के द्वार पर नंदी की एक बहुत बड़ी मूर्ति है। मंदिर के भीतर केदारनाथ की तराशी हुई मूर्ति नहीं है, बल्कि तीन कोनोंवाला एक बड़ा-सा पर्वत खंड है। कहा जाता है कि यह केदारनाथ का एक भाग है और दूसरा भाग पशुपतिनाथ के रूप में नेपाल में है। इस मंदिर में गणपति, पार्वती, पांडव, कुंती और द्रौपदी की मूर्तियाँ भी हैं। भक्त यहाँ आकर परिक्रमा करते हैं। बाकी मंदिरों की तरह यहाँ भी मंदिर के बाहर परिक्रमा की जाती है। परिक्रमा करने की जगह पर अमृत कुंड, हंस कुंड, ईशान कुंड, रेतस कुंड, मधुगंगा, क्षीरगंगा, वासुकिताल आदि पवित्र स्थान भी हैं।

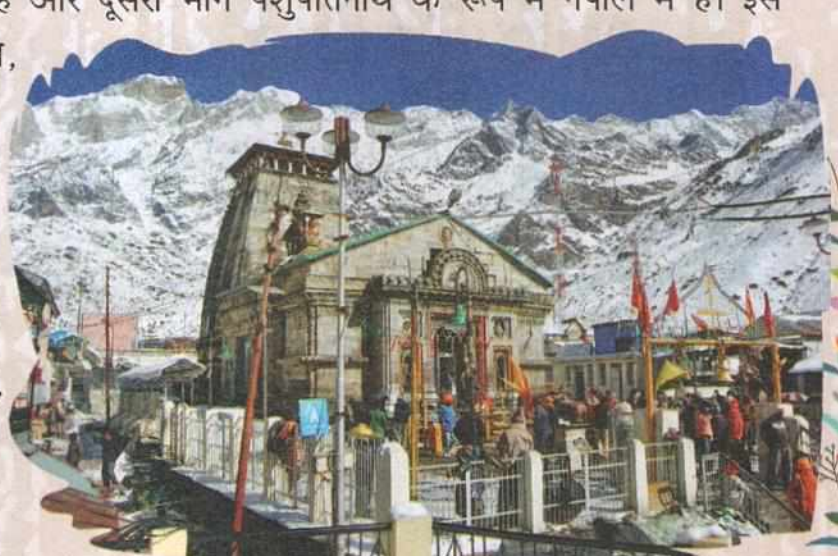

सरदियों में केदार क्षेत्र में चारों ओर बर्फ़ जम जाती है तब केदारनाथ के उपतीर्थ ऊखीमठ में पूजा होती है। ऊखीमठ में शिव जी के साथ-साथ बदरीनाथ, तुंगनाथ, ओंकारेश्वर, केदारनाथ, उषा, अनिरुद्ध आदि की भी मूर्तियाँ हैं।

बदरीनाथ–बदरीधाम अत्यंत पवित्र स्थान है। बदरीधाम के नामकरण के बारे में अलग-अलग मत है। पहले यहाँ बेर के वृक्षों का वन था, जिसके कारण इस क्षेत्र को बदरीवन कहा जाता था। बदरी का एक अर्थ बादल भी है। यहाँ खुले मौसम में भी बादलों का आभास होता है, इसलिए इसका नाम 'बदरीधाम' पड़ा होगा। शंकराचार्य के समय में इसे बदरीनाथ कहा जाने लगा। शंकराचार्य ने बदरीनाथ को प्रसिद्ध धाम माना था। इस स्थान की पवित्रता के कारण यहाँ पर व्यास मुनि का आश्रम था। उन्होंने तप भी किया था और ब्रह्मसूत्र ग्रंथ भी लिखा था। इसी कारण उन्हें बादरायण भी कहा जाता है।

नर और नारायण नाम के दो ऋषियों की घोर तपस्या के बाद भगवान विष्णु ने उन्हें दर्शन दिए थे। उन्हीं ऋषियों ने यहाँ बदरीनाथ के रूप में भगवान विष्णु की एक विशाल और भव्य मूर्ति स्थापित की थी। बौद्ध धर्म का प्रचार भारत के साथ-साथ तिब्बत और चीन की ओर होने लगा तो कुछ बौद्धों ने बदरीनाथ की मूर्ति को नारद कुंड में डाल दिया था। बाद में आदि शंकराचार्य ने मूर्ति को नारद कुंड से निकालकर गरुड़ गुफा में स्थापित कर दिया। इसके बाद गढ़वाल के एक राजा ने यहाँ वर्तमान मंदिर बनवाया और मंदिर पर सोने का शिखर इंदौर की रानी अहिल्याबाई ने चढ़वाया था।

बदरीनाथ के उत्तर में अलकनंदा नदी है। इसके दाहिने किनारे पर प्रसिद्ध ब्रह्म ताल है, जहाँ तीर्थयात्री अवश्य जाते हैं। अलकनंदा के बाएँ तट पर नारायण का एक मंदिर बना है। इस मंदिर पर सोने का एक कलश है। मंदिर के भीतर काले शालग्राम पत्थर से बनाई गई मूर्ति बहुत ही सुंदर है। इस मंदिर में गरुड़ और कुबेर की मूर्तियाँ भी हैं।

इन धामों की यात्रा करके हर भारतीय अपने आपको पावन समझता है।

–संकलित

4 कर्ण का मित्र-प्रेम

चिंतन-मनन

किसी के द्वारा किया गया उपकार मानना तथा उसके लिए सर्वस्व छोड़ देना ही साहसी लोगों का लक्षण होता है। ऐसे लोगों के लिए सांसारिक सुख तथा पद-प्रतिष्ठा भी अपने कर्तव्य से बढ़कर नहीं होती। मित्र वही जो एक मित्र की मदद करे। मित्रता सबसे श्रेष्ठ है।

हे कृष्ण! ज़रा यह भी सुनिए,
सच है कि झूठ मन में गुनिए।
धूलों में था मैं पड़ा हुआ,
किसका सनेह पा बड़ा हुआ?

किसने मुझको सम्मान दिया?
नृपता दे महिमावान किया।

है ऋणी कर्ण का रोम-रोम,
जानते सत्य यह सूर्य-सोम।
तन, मन, धन दुर्योधन का है,
यह जीवन दुर्योधन का है।
सुरपुर से भी मुख मोड़ूँगा,
केशव, मैं उसे न छोड़ूँगा।

जिस नर की बाँह गही मैंने,
जिस तरु की छाँह गही मैंने,
उस पर न वार चलने दूँगा,
कैसे कुठार चलने दूँगा?
जीते जी उसे बचाऊँगा,
या आप स्वयं कट जाऊँगा।।

शब्दार्थ–**गुनना**–सोचना, विचार करना (to assimilate), **सोम**–चंद्र (moon), **सुरपुर**–स्वर्ग (heaven), **तरु**–वृक्ष, पेड़ (tree), **कुठार**–कुल्हाड़ी (axe)

मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब इसे तौल सकता है धन?
धरती की तो है क्या बिसात?
आ जाए अगर बैकुंठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ,
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ–अनमोल–अमूल्य (precious), **रतन**–रत्न (gem), **बिसात**–हस्ती, शक्ति, सामर्थ्य (capacity), **न्योछावर**–अर्पित, कुर्बान (sacrifice)

कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' (सन् 1908-1974) राष्ट्रीय कवि के रूप में लोकप्रिय हैं। इनका जन्म बिहार के मुँगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ। इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था। दिनकर का काव्य सामाजिकता तथा राष्ट्रीयता से परिपूर्ण है। इनके काव्य का प्रमुख स्वर क्रांति का है। अपने काव्य द्वारा इन्होंने समाज को प्रगति और निर्माण के पथ पर आगे बढ़ाने का संदेश दिया। *रेणुका, हुंकार, रसवंती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी* आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। दिनकर जी ने उच्चकोटि का गद्य भी लिखा है। इनके 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक ग्रंथ को साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया है। 'उर्वशी' नामक ग्रंथ पर इन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) कर्ण किसका ऋणी है?

(ख) कृष्ण को कौन कथा बता रहा है?

(ग) तन, मन, धन कर्ण ने किसे समर्पित किया है?

(घ) कवि के अनुसार कौन-सा धर्म श्रेष्ठ है?

लिखित

1. भाव स्पष्ट कीजिए–

मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब इसे तौल सकता है धन?
धरती की तो है क्या बिसात?
आ जाए अगर बैकुंठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ,
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।

2. रिक्त स्थान भरिए–

है ..... कर्ण का .....,
जानते ..... यह सूर्य- .....।
तन, मन, धन ..... का है,
यह जीवन ..... का है।
..... से भी .....,
केशव, ... उसे न .....।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 'धूलों में था मैं पड़ा हुआ' का क्या तात्पर्य है?

(ख) रोम-रोम ऋणी होने का क्या अभिप्राय है?

(ग) कर्ण ने किसे तरु समान कहा है और क्यों?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) कर्ण अपने मित्र दुर्योधन की हर बात को क्यों मानता है? क्या हर बात मानना ठीक है?

(ख) मित्रता की तुलना किसी से भी नहीं हो सकती। इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

(ग) दुर्योधन के लिए कर्ण ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। यह कहाँ तक उचित था? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित रेखांकित पदों के आगे लिखिए कि वे विशेषण हैं या विशेष्य–

(क) ऋणी <u>कर्ण</u> ..... (ख) <u>अनमोल</u> रतन .....

(ग) <u>सत्य</u> वचन ..... (घ) छायादार <u>वृक्ष</u> .....

(ङ) <u>विशाल</u> धरती .....

2. एक-सा अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है।

निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

(क) स्नेह – .... (ख) धन – ....

(ग) तरु – .... (घ) धरती – ....

3. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) सुरपुर – .....

(ख) गुनना – .....

(ग) मुख मोड़ना – .....

(घ) न्योछावर करना – .....

(ङ) कुठार चलाना – .....

4. निम्नलिखित वाक्य शुद्ध कीजिए–

(क) कर्ण की रोम-रोम ऋणी है।

.....

(ख) कर्ण कृष्ण से कहा की मित्रता बड़ी अनमोल रतन है।

.....

(ग) दुर्योधन ने कर्ण की सम्मान दी।

.....

(घ) मेरा तन, मन, धन दुर्योधन की है।

.....

(ङ) धन मेरी लिए कुछ नहीं है।

.....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. मित्रता की मिसाल सुदामा और श्रीकृष्ण भी हैं। उस घटना को नाटक के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
2. 'मित्रता के लिए कर्ण एक मिसाल है।' इस पर विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. ''कठिनाई में जो साथ देता है, वही सच्चा मित्र होता है।'' इस उक्ति के आधार पर एक ऐसी कहानी लिखिए, जिसमें किसी ने अपने मित्र की परेशानी में उसकी मदद की हो।

क्रियाकलाप

- इतिहास में समय-समय पर अनेक मित्रों की जोड़ियाँ हुई हैं। ऐसी ही कुछ जोड़ियों के चित्र काटकर चिपकाइए। इसे आधार बनाते हुए मित्रता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

5 मुख्य अतिथि

चिंतन-मनन

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से समाज में निहित ऊँच-नीच के भेद-भाव को मिटाने का प्रयास किया है। समानता के बीज बोने से अच्छे समाज का निर्माण संभव है।

पात्र-परिचय

हरिराज – पंकज के पिता **शोभना** – पंकज की माता **पंकज** – एक समझदार बालक
प्रमिला – पंकज की बहन **सुक्खन** – विद्यालय के चपरासी व मुख्य अतिथि

(मंच पर एक परिवार के कुछ लोग दिखाई देते हैं। पंकज की नौवीं वर्षगाँठ है। उसी की तैयारी के संबंध में बातचीत चल रही है। पंकज स्वयं भी उपस्थित है। पंकज के डैडी हरिराज अपनी पत्नी शोभना से पूछते हैं।)

हरिराज – क्यों शोभना, क्या मेहमानों की लिस्ट तैयार कर ली तुमने?

शोभना – हाँ जी, लिस्ट तो तैयार हो गई। बस निमंत्रण-पत्र भिजवाने बाकी रह गए हैं।

हरिराज – कितने मेहमान हो जाएँगे कुल मिलाकर?

शोभना – यही कोई डेढ़ सौ के लगभग हो जाएँगे।

हरिराज – किस-किस को बुला रही हो इस बार?

शब्दार्थ–**निमंत्रण-पत्र**–आमंत्रण देना, बुलावा (invitation)

शोभना – ज़्यादातर तो पुरानी लिस्ट वाले नाम ही हैं, कुछ आपके दोस्त, कुछ मेरी सहेलियाँ, कुछ सगे-संबंधी, कुछ पंकज के साथी, कुछ विद्यालय के टीचर।

हरिराज – ज़रा लिस्ट देखूँ।

(शोभना लिस्ट लाकर पति को देती है। हरिराज लिस्ट पर एक नज़र डालते हैं और वापस शोभना को देते हैं।)

शोभना – नाश्ते में क्या करना है, इस बार?

हरिराज – इसकी व्यवस्था मैंने कर दी है। होटल पैराडाइज़ वालों को ठेका दे दिया है। वही सब करेंगे। हमें तो बस आइटम बताने हैं।

शोभना – वही तो मैं भी कह रही हूँ, आइटम तो तय कर लेने चाहिए।

हरिराज – हाँ, बताओ क्या-क्या होना चाहिए, इस बार?

पंकज – आइसक्रीम ज़रूर रखना पापा मेनू में।

हरिराज – (*हँसते* हुए) तुम तो पंकज बेटे, बस पूरे रसिया हो आइसक्रीम के। चलो और बताओ।

(शोभना कागज़-कलम लेकर खाने के सामान की लिस्ट बनाती है, तभी हरिराज की बड़ी बेटी प्रमिला चौंककर बोल उठती है, जैसे उसे बहुत ही महत्वपूर्ण बात याद आ गई है।)

प्रमिला – सबसे ज़रूरी बात तो आप भूल ही गए, डैडी।

हरिराज – कौन-सी बात, बताओ?

प्रमिला – वर्षगाँठ में मुख्य अतिथि के रूप में किसे बुलाएँगे, इस बार।

शोभना – इस बात पर तो अभी विचार ही नहीं किया हमने।

हरिराज – हाँ, यह भी तय कर लें, ताकि निमंत्रण-पत्र छपने को दिए जा सकें।

शोभना – (*कुछ सोचते* हुए) तुम अपनी फ़र्म के महाप्रबंधक श्री शुक्ला जी को आमंत्रित कर लो अबके भी।

प्रमिला – नहीं मम्मी! हर बार वही आ जाते हैं। बोर पर्सनेलिटी है उनकी। अबके वह नहीं।

शोभना – (*बेटी को समझाते* हुए) बात समझने की कोशिश करो बेटी, मिस्टर शुक्ला तुम्हारे डैडी से खुश होंगे तो उन्हें तरक्की मिलेगी। पर्सनेलिटी खराब होने से क्या होता है? उनका बुलाना तो हमारे हित में है।

शब्दार्थ–**रसिया**–चाहत रखने वाला (to like, fond), **मुख्य अतिथि**–कार्यक्रम के प्रमुख मेहमान (chief guest), **तरक्की**–प्रगति करना (to progress)

प्रमिला – उन्हें इनवाइट करने के और कई मौके आ सकते हैं, मम्मी। वर्षगाँठ पर उन्हें कष्ट न दें तो अच्छा रहेगा। अबके मुख्य अतिथि तो कोई और ही होना चाहिए।

हरिराज – चलो बेटी तुम्हारी बात मान लेते हैं। क्यों न इस बार डॉ० पी०एल० अग्रवाल को बुला लें!

शोभना – (*कुछ सोचते हुए*) हाँ, यह भी ठीक रहेंगे। पिछले दिनों जब पंकज बीमार हो गया था तो डॉ० अग्रवाल ने ही इलाज किया था उसका।

हरिराज – यों भी डॉ० अग्रवाल बाल रोग विशेषज्ञ हैं, पंकज की वर्षगाँठ में वही ठीक रहेंगे, क्यों पंकज?

पंकज – (*कुछ सोचते हुए*) नहीं पापा, मुझे तो बहुत डर लगता है डॉ० अग्रवाल से। रोज़-रोज़ इंजेक्शन देकर मेरा हाथ सुजा दिया था उन्होंने।

हरिराज – (*हँसकर*) पर वह इंजेक्शन न देते तो तुम ठीक कैसे होते, बेटे?

पंकज – मैंने तो उनसे कहा था डैडी, गोली दें या कैप्सूल, पर वे माने कहाँ?

शोभना – डॉक्टर तो अपने रोगी का वही इलाज करता है, जो वह ठीक समझता है बेटे! रोगी के कहने से नहीं दी जाती है दवाई।

प्रमिला – अच्छा अगर तुम डॉ० अग्रवाल को नहीं चाहते तो मैं तुम्हें एक बढ़िया सुझाव देती हूँ।

पंकज – (*खुश होते हुए*) बताइए दीदी, ज़रा जल्दी।

प्रमिला – तुम्हारे विद्यालय के प्रिंसिपल बढ़िया रहेंगे इस अवसर के लिए।

पंकज – (*मुँह बनाते हुए*) नहीं, वे आए तो मेरे स्कूल के मित्रों में से कोई भी नहीं आएगा यहाँ?

हरिराज – क्यों, तुम्हारे साथी क्यों नहीं आएँगे, बेटे?

पंकज – डैडी, वे तो बहुत ही क्रोधी हैं। उनकी तो परछाई से बचते हैं बच्चे!

शोभना – (*सबके साथ हँसी में सम्मिलित होते हुए*) अच्छा पंकज, तुम बताओ। कौन व्यक्ति पसंद है तुम्हें? तुम किसको मुख्य अतिथि बनाना चाहोगे?

पंकज – (*कुछ देर सोचता रहता है। फिर बोल उठता है*) सुक्खन चाचा को?

हरिराज – (*आश्चर्यचकित होकर*) कौन सुक्खन चाचा, बेटे!

प्रमिला – (*बीच में बोलते हुए*) चपरासी है डैडी इनके स्कूल का।

शोभना – हटो पंकज, बिलकुल बेकार। कहीं चपरासी भी मुख्य अतिथि बनते होंगे किसी आयोजन में!

पंकज – क्यों नहीं होते मम्मी?

हरिराज – तुम अभी बच्चे हो बेटे! इन बातों को नहीं समझ सकते हो अभी।

पंकज – क्यों नहीं समझ सकता? नौ वर्ष को हो गया हूँ डैडी। हर बात समझता हूँ। फ़र्स्ट आता हूँ हर बार।

शोभना – फ़र्स्ट आना और बात होती है बेटे! समाज की परंपराओं को समझना और बात है।

प्रमिला – इतने अच्छे-अच्छे लोगों के बीच फटे-हाल सुक्खन चाचा कैसे लगेंगे पंकज! क्या तुम सोच सकते हो?

पंकज – सोच क्यों नहीं सकता दीदी, सोच सकता हूँ?

शोभना – तुम कुछ भी नहीं सोच पा रहे हो। सब लोग क्या कहेंगे? मेहमान, पास-पड़ोस वाले।

हरिराज – अपना सामाजिक स्टैंडर्ड तो हर व्यक्ति को बनाए ही रखना पड़ता है, बेटे।

पंकज – स्टैंडर्ड क्या होता है पापा, सुक्खन चाचा भी तो आदमी ही हैं, हम जैसे।

शोभना – आदमी-आदमी में भी अंतर होता है, पंकज!

पंकज – क्या अंतर होता है, मम्मी?

शोभना – तुम अभी बच्चे हो, बहुत-सी बातें तुम्हारी समझ में नहीं आएँगी अभी।

पंकज – समझ में क्यों नहीं आएँगी मम्मी? जिस तरह के आदमी हम सब हैं, वैसे ही सुक्खन चाचा भी हैं।

हरिराज – आदमी तो वह भी हैं पर...।

पंकज – पर वह गरीब हैं ना, बस इसीलिए आप।

शोभना – बात गरीब की नहीं है, सुक्खन तो चपरासी है तुम्हारे स्कूल का।

पंकज – पर सुक्खन चाचा तो बहुत अच्छे आदमी हैं मम्मी। सभी बच्चों को बहुत प्यार करते हैं वे। हर समय बच्चों की सेवा में लगे रहते हैं बेचारे। मुझे तो बहुत चाहते हैं।

शब्दार्थ–**चपरासी**–सेवक (peon), **फटे-हाल**–बुरे हाल (bad condition), **सामाजिक**–समाज से जुड़ा (social)

प्रमिला – तुम हम सबका मज़ाक बनवाओगे पंकज!

पंकज – मैं तो अब के सुक्खन चाचा को ही बुलाऊँगा दीदी, चाहे कछ भी हो!

हरिराज – एक बार फिर अपनी बात पर गौर कर लो। मुख्य अतिथि तो किसी बड़े आदमी को ही बनाया जाता है। छोटे लोगों को नहीं।

पंकज – सुक्खन चाचा भी तो बड़े आदमी हैं, बूढ़े हो गए हैं, बाल सफ़ेद हो गए हैं उनके! डॉ० अग्रवाल से भी बड़े हैं और डैडी के बॉस से भी।

शोभना – (*पति की ओर देखते हुए*) यह नहीं मानेगा राज! जिद्दी बालक है, चलो जैसी इसकी खुशी है, वैसा ही करो।

हरिराज – सोसायटी में हम सबकी हँसी उड़वानी है। चलो ऐसे ही सही। कार्ड पर सुक्खन का नाम छपवाए लेते हैं।

(*वर्षगाँठ का समारोह चल रहा है। बहुत से मेहमान जमा हैं। हलका-हलका संगीत बज रहा है। सुक्खन चाचा खद्दर के साधारण कपड़े पहने हुए हैं। वे अन्य मेहमानों के बीच खड़े हैं। पंकज मोमबत्तियाँ बुझाकर केक काटता है तो चारों ओर से 'हैप्पी बर्थ डे टू यू' की आवाज़ उठती है।*)

हरिराज – (*कुर्सियों पर पंक्तिबद्ध बैठे हुए लोगों को संबोधित करते हुए*) भाइयो और बहनो, हम लोग इस वर्ष जब अपने इकलौते बेटे पंकज की नौंवी वर्षगाँठ मनाने पर विचार कर रहे थे, तो यह सवाल सामने आया कि इस बार मुख्य अतिथि किसे बनाया जाए! पंकज बेटे का सुझाव था कि सुक्खन चाचा को मुख्य अतिथि बनाया जाए और यह एक तरह से ठीक रहा।

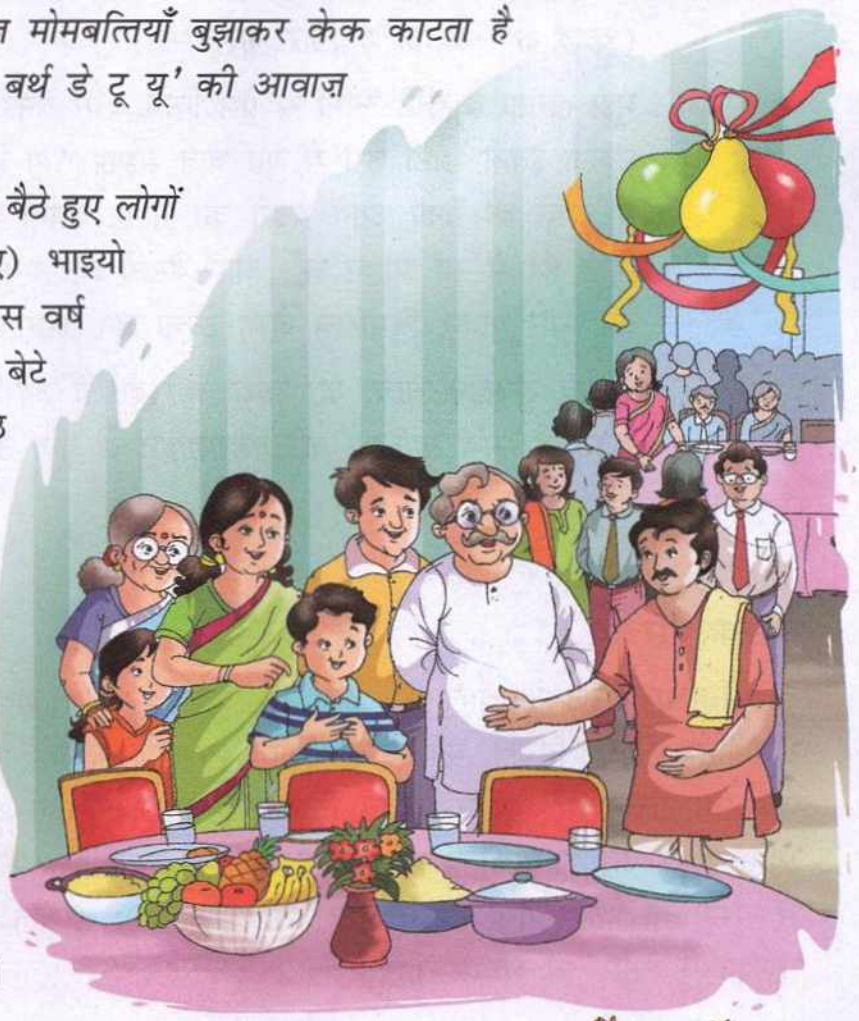

क्योंकि आप सब लोग जानते हैं कि अगर सुक्खन चाचा जैसे लोग न हों तो चाहे वह विद्यालय हो या कार्यालय, किसी का भी काम नहीं चल सकता। जीवन की मशीन चलाने के लिए सुक्खन चाचा जैसे लोगों की हमेशा आवश्यकता रहेगी। मुझे खुशी है कि वह हम लोगों के निमंत्रण पर यहाँ आए हैं। मैं उनका आभारी हूँ और उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वह मंच पर आएँ और पंकज को आशीर्वाद दें।

सुक्खन – *(अपनी कुर्सी से उठकर मंच पर आते हैं। उनके चेहरे पर घबराहट है और माथे पर पसीना चमक रहा है)* आदरणीय हरिराज जी और उपस्थित भाइयो, बहनो। मैं कोई भाषण तो नहीं कर पाऊँगा यहाँ। पंकज बेटे और उसके माता-पिता ने जो आदर, जो सम्मान मुझे दिया है, उसे में जीवन-भर नहीं भुला सकता। आप जानते हैं, मैं विद्यालय का एक मामूली-सा चपरासी हूँ, लेकिन विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी मुझे अपने ही बच्चों के समान लगते हैं। बच्चे भी मेरे प्रति लगाव रखते हैं। पंकज बेटे ने मुझे अपनी खुशी में याद रखा है, यह बहुत बड़ा आदमी बनेगा। इतना बड़ा आदमी जिस पर मैं ही नहीं, पूरा समाज गर्व करेगा।

(कुछ क्षण रुकता है फिर बोलता है)

मुझे लगता है छोटे लोगों से प्रेम किए बगैर कोई भी आदमी बड़ा नहीं बन सकता और पंकज इतनी छोटी उम्र में यह बात समझ गया है। वह जान गया है कि साधारण लोग ही बड़ों के लिए आगे बढ़ने का रास्ता बनाते हैं। उसने यह रास्ता ढूँढ़ना आरंभ कर दिया है। मैं रहूँ या न रहूँ, आप देखेंगे कि एक दिन पंकज मुझ जैसे छोटे आदमियों का प्यार पाकर हिमालय जैसा ऊँचा बन जाएगा। मुझे इसका पूरा विश्वास है।

(शब्द सुक्खन चाचा का साथ नहीं देते हैं और उनकी आँखों से खुशी के आँसू फूट पड़ते हैं। मंच तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठता है।)

–डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

लेखक परिचय

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल का जन्म 14 जुलाई, 1944 को हुआ। इन्होनें आगरा विश्वविद्यालय से पीएच०डी० (हिंदी) की। इन्होंने गीत, गजल, कहानी, एकांकी, हास्य-व्यंग्य, बाल साहित्य एवं समालोचना में पर्याप्त लेखन किया। इनकी अनगिनत रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके साहित्य पर कई शोधार्थी कार्य कर रहे है। इन्हें सरस्वती श्री, सूर पुरस्कार, सारस्वत सम्मान आदि से सम्मानित किया गया है। वहीं ये 'साहित्य भूषण सम्मान' तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा 'शिक्षा-पुरस्कार' से भी सम्मानित हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) किसका जन्मदिन मनाया जा रहा था?

(ख) कार्यक्रम में कितने लोग आमंत्रित थे?

(ग) पंकज किस चीज़ का रसिया था?

(घ) अंत में मुख्य-अतिथि के रूप में किसे बुलाया गया?

लिखित

1. संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) "नहीं मम्मी! हर बार वही आ जाते हैं। बोर पर्सनेलिटी है उनकी। अबके वह नहीं।"

(ख) "फ़र्स्ट आना और बात होती है बेटे! समाज की परंपराओं को समझना और बात है।"

(ग) "मैं रहूँ या न रहूँ, आप देखेंगे कि एक दिन पंकज मुझ जैसे छोटे आदमियों का प्यार पाकर हिमालय जैसा ऊँचा बन जाएगा।"

2. चरित्र चित्रण कीजिए–

(क) सुक्खन

(ख) पंकज

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) डॉक्टर तो अपनी ..... का इलाज करता है।

(ख) इतने अच्छे-अच्छे लोगों के बीच ..... सुक्खन चाचा कैसे लगेंगे?

(ग) मुझ जैसे छोटे आदमियों का ..... पाकर ..... जैसा ऊँचा बन जाएगा।

(घ) छोटे लोगों से ..... किए बगैर कोई भी आदमी ..... नहीं बन सकता।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) किन-किन लोगों को मुख्य-अतिथि के रूप में बुलाने की राय दी गई?

(ख) विद्यालय के प्रिंसिपल को बच्चे अतिथि के रूप में क्यों नहीं बुलाना चाहते थे?

(ग) पंकज सुक्खन चाचा को ही क्यों बुलाना चाहता था?

(घ) सुक्खन चाचा ने अपने बारे में क्या कहा?

(ङ) 'मुख्य अतिथि' पाठ हमें क्या सीख देता है?

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) पंकज के माता-पिता किन कारणों से सुक्खन चाचा को मुख्य अतिथि के रूप में नहीं बुलाना चाहते थे?

(ख) सुक्खन चाचा के चेहरे पर घबराहट और माथे पर पसीना आने का क्या कारण था?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) उपस्थित – ..... (ख) हित – .....

(ग) डर – ..... (घ) क्रोध – .....

(ङ) गरीब – ..... (च) आदर – .....

2. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं; जैसे–

- राम ने बारात को आते देखा।
- माँ के लिए बच्चे सब कुछ हैं।
- बच्चा पलंग से उतरा।
- बच्चे बेंच पर बैठे हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में ने, को, के लिए, से, पर आदि कारक चिह्न हैं।

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में से उचित कारक चिह्न चुनकर कीजिए–

(क) मंच पर परिवार ..... कुछ लोग दिखाई देते हैं। (से/के/का/में)

(ख) पंकज बेटे ..... मुझे अपनी खुशी में याद रखा। (ने/के/में/का)

(ग) लिस्ट ..... एक नज़र डालते हैं। (पर/से/के/ने)

(घ) तुम्हारे डैडी ..... खुश होंगे। (पर/का/से/ने)

(ङ) साधारण लोग ही बड़ों ..... आगे बढ़ने का रास्ता बनाते हैं। (पर/के लिए/ने/से)

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) निमंत्रण-पत्र – .....

.....

(ख) रसिया – .....

.....

(ग) मुख्य अतिथि – .....

.....

(घ) फटे हाल – .....

.....

(ङ) पंक्तिबद्ध – .....

.....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. आप अपने जन्मदिन को किस प्रकार मनाएँगे– अनाथालय में जाकर, वृद्धाश्रम में जाकर या फिर अपने मित्रों व परिवारजनों के साथ? अपने विचार प्रकट कीजिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**
2. अगर आपको पाठशाला के किसी कार्यक्रम में अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाए तो आप वहाँ कैसे बर्ताव करेंगे? आपको यह आमंत्रण कैसा लगेगा? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

क्रियाकलाप

- नीचे दी गई कहानी पढ़कर आपको कौन-सा दोहा याद आता है? उसे लिखिए। इस प्रकार की कहानी लिखने का प्रयत्न कीजिए और दोहों का संग्रह कीजिए।

कड़वे बोलों का नुकसान

एक युवक शिक्षित व गुणवान था लेकिन वह बात-बात में लोगों से बड़े ही कड़वे शब्द बोलता था। अनेक बड़े-बूढ़े उसे हर तरह से समझा-समझाकर हार गए थे लेकिन उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया। उस युवक का एक बहुत ही प्रिय मित्र था। मित्र भी युवक के कड़वे बोल से परिचित था। वह युवक जब-तब अपने मित्र को भी छोटी-मोटी बात पर तीखा बोल देता था किंतु मित्र उसकी बातों का बुरा नहीं मानता था क्योंकि वह जानता था कि युवक अंदर से होनहार और साफ़ मन का है। जब उस मित्र को अहसास हुआ कि युवक के कड़वे बोल के कारण अधिकतर लोग उसे घृणा की नज़रों से देखने लगे हैं, तो उसने उसे सुधारने की सोची। इसके लिए मित्र ने युवक को अपने घर पर आमंत्रित किया। कुछ देर इधर-उधर की बातें करने के बाद उसने युवक को एक पेय पदार्थ दिया। यह अत्यंत मीठा था। इसे पीते ही युवक खुश हो गया और मित्र से बोला, "वाह! इसे पीते ही मन आनंदित हो गया।"

थोड़ी देर बाद मित्र एक और पेय लेकर आया और बोला, "यह एक खास चीज़ है। इसे पीकर देखो।" एक घूँट पीते ही युवक का चेहरा विकृत हो गया। वह नाक-भौं सिकोड़ते हुए बोला, "यह तो बहुत ही कड़वा है।" युवक की इस बात पर मुसकराता हुआ मित्र बोला, "अच्छा, क्या तुम्हारी ज़ुबान जानती है कि कड़वा क्या होता है?" इस पर युवक बोला, "कड़वी और खराब चीज़ें तो ज़ुबान पर आते ही पता चल जाती है!" मित्र ने कहा, "नहीं, कड़वी चीज़ें ज़ुबान पर आते ही पता नहीं चलतीं। अगर ऐसा होता तो लोग अपनी ज़ुबान से कड़वी बातें क्यों निकालते?" यह सुनकर युवक लज्जित हो गया। मित्र ने समझाया, "जो व्यक्ति कटु वचन बोलता है, वह किसी व्यक्ति को दुख पहुँचाने से पहले अपनी ज़ुबान को ऐसे ही गंदा करता है; जैसे इस कड़वे पेय ने तुम्हारी ज़ुबान को कड़वा कर दिया है।"

–संकलित

अतिरिक्त पठन

पक्षी जैसी उड़ान

पक्षियों को आकाश में विचरते देखकर मनुष्य भी प्रारंभ से ही वायु में उड़ान भरने के लिए उत्सुक रहा है। प्राचीन सुसंपन्न सभ्यताओं जैसे यूनान, बेबीलोनिया, मिस्र आदि देशों के ग्रंथों में किसी-न-किसी रूप में देवी-देवताओं के वायु में विचरण करने के विवरण मिलते हैं।

प्राचीन भारत में विमानन– हमारे देश में रामायण, महाभारत तथा दूसरे ग्रंथों में पुष्पक विमान या अन्य वाहनों द्वारा आकाश में यात्रा के विवरण हैं। विश्व के प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर विमानों का उल्लेख मिलता है। मुनि भारद्वाज द्वारा रचित 'बृहत विमान शास्त्र' में विमानन से संबंधित अनेक विवरण दिए गए हैं।

आरंभिक प्रयास– इतिहासकारों का मानना है कि आधुनिक काल में सबसे पहले इटली के लियोनार्डो द विंसी ने 16वीं सदी में एक उड़ने वाली मशीन की रूपरेखा तैयार की थी। उसके बाद सन् 1678 में बेसमार तथा 1742 में फ्रांस के मार्किस द बाकेविल द्वारा ऐसी ही मशीन उड़ाने के संकेत मिलते हैं। 19वीं सदी के आरंभ में इग्लैंड के सर जार्ज केली ने भी एक मशीन बनाकर आकाश में उड़ाने का प्रयत्न किया था, लेकिन ये सभी उड़ानें पूरी तरह से सफल नहीं हो सकी थीं। उसके बाद लेब्री ने सन् 1855 में अलबोट्रस नामक पक्षी के विशाल आकार के पंखों की बनावट के आधार पर एक मशीन बनाई तथा उसे घोड़ागाड़ी के पहियों के साथ रस्सी से बाँधकर हवा में उड़ाया। सन् 1891 में जर्मनी के आटो लिलिएंथेल ने लकड़ी और कपड़े की सहायता से एक बड़े आकार का बगैर इंजन वाला विमान बनाया।

वास्तविक आविष्कारक राइट बंधु

सदियों के अथक प्रयास तथा निरंतर प्रयत्नों के बाद विलवर राइट और आरविल राइट नामक दो अमरीकी भाइयों ने 17 दिसंबर, 1903 को अपना शक्तिचालित विमान उड़ाया। इन्हें ही विमानों का वास्तविक आविष्कारक माना जाता है। राइट बंधुओं के विमान की लंबाई 21 फुट (6.4 मी), पंखों का विस्तार 40 फुट (12.3 मी), ऊँचाई 9 फुट (2.8 मी) तथा भार 274 किलो था। यह विमान 105 फुट (32 मी) की ऊँचाई तक पहुँचा था तथा केवल 12 सेकेंड तक हवा में रहा था। राइट बंधुओं द्वारा निर्मित 'उड़न मशीन' का स्वरूप तथा क्षमता आज के युग के विमानों के सामने एक बच्चे जैसी नज़र आती है। आज के विमान उसकी तुलना में कई गुना बड़े, भारी, शक्तिशाली तथा अधिक क्षमता वाले हैं।

6 प्रियतम

चिंतन-मनन

विष्णु-नारद प्रसंग के माध्यम से प्रतिपादित किया गया है कि जो ईश्वर द्वारा दिए गए उत्तरदायित्वों को पूरा कर ईश्वर का स्मरण करता है, वही ईश्वर का सबसे प्रिय भक्त है। इस पाठ में बच्चों को कर्मनिष्ठ बनने की प्रेरणा दी गई है। सतत कर्म में रत रहो, भगवान के दर्शन अपने आप होते हैं।

एक दिन, विष्णु जी के पास गए नारद जी,
पूछा, "मृत्युलोक में वह कौन है पुण्यश्लोक
भक्त तुम्हारा प्रधान?"
विष्णु जी ने कहा, "एक सज्जन किसान है,
प्राणों से प्रियतम।"
"उसकी परीक्षा लूँगा।"
हँसे विष्णु सुनकर यह,
कहा कि, "ले सकते हो।"
नारद जी चल दिए
पहुँचे भक्त के यहाँ,

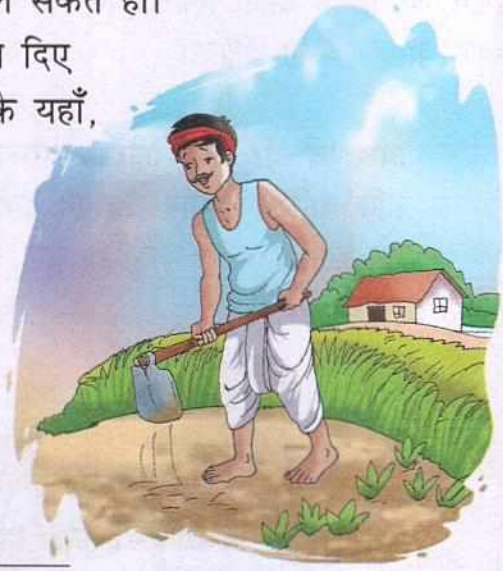

देखा, हल जोतकर आया वह दोपहर को,
दरवाज़े पहुँचकर राम जी का नाम लिया,
स्नान-भोजन करके
फिर चला गया काम पर।
शाम का आया दरवाज़े पर फिर नाम लिया,
प्रात:काल चलते समय
एक बार फिर उसने
मधुर नाम स्मरण किया
"बस केवल तीन बार।"

शब्दार्थ–**पुण्यश्लोक**–शुभ चरित्र (good character), **प्रियतम**–सबसे प्यारा (dear), **मधुर**–मीठा (sweet), **स्मरण**–याद, स्मृति (memory)

नारद चकरा गए–
किंतु भगवान को किसान ही यह याद आया है?
गए विष्णुलोक
बोले भगवान से,
"देखो किसान को
दिनभर में तीन बार
नाम उसने लिया है।"
बोले विष्णु, "नारद जी,
आवश्यक दूसरा
एक काम आया है,
तुम्हें छोड़कर कोई
और नहीं कर सकता
साधारण विषय यह।
बाद को विवाद होगा,
तब तक यह आवश्यक कार्य पूरा कीजिए,
तेल-पूर्ण पात्र यह
लेकर प्रदक्षिणा कर आइए भूमंडल की,
ध्यान रहे सविशेष
एक बूँद भी इससे
तेल न गिरने पाए।"
लेकर चले नारद जी
आज्ञा पर धृत-लक्ष
एक बूँद तेल उस पात्र से गिरे नहीं।
योगिराज जल्द ही
विश्व-पर्यटन करके
लौटे बैकुंठ को
तेल एक बूँद भी उस पात्र से गिरा नहीं,
उल्लास मन में भरा था
यह सोचकर तेल का रहस्य एक
अवगत होगा नया।

शब्दार्थ–विवाद–कहा-सुनी, तकरार, मतभेद (conflict), **पात्र**–बरतन (utensil), **प्रदक्षिणा**–परिक्रमा (moving around), **भूमंडल**–भूगोल, धरती (earth), **धृत-लक्ष**–अपनी धुन या लक्ष्य का पक्का (obsession), **विश्व-पर्यटन**–संसार का भ्रमण (world tour), **बैकुंठ**–स्वर्ग (heaven), **उल्लास**–खुशी, हर्ष, उमंग (cheer), **अवगत**–जाना हुआ (known)

नारद को देखकर विष्णु भगवान ने
बैठाया स्नेह से
कहा, "यह उत्तर तुम्हारा यहीं आ गया।
बतलाओ, पात्र लेकर जाते समय कितनी बार
नाम इष्ट का लिया?"
"एक बार भी नहीं।"
शंकित हृदय से कहा नारद ने विष्णु से–
"काम तुम्हारा ही था
ध्यान उसी से लगा रहा
नाम फिर क्या लेता और?"
विष्णु ने कहा, "नारद
उस किसान का भी काम
मेरा दिया हुआ है
उत्तरदायित्व कई लादे हैं एक साथ,
सबको निभाता और
काम करता हुआ
नाम भी वह लेता है
इसी से है प्रियतम।"
नारद लज्जित हुए
कहा, "यह सत्य है।"

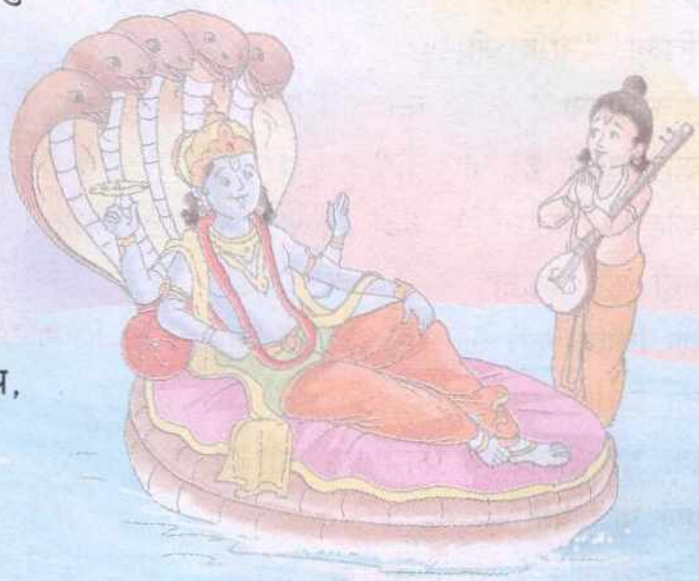

–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

शब्दार्थ–स्नेह–प्रेम भाव (affection), **इष्ट**–चाहा हुआ, पूजित, प्रिय (the form of God liked by someone), **शंकित**–शंकायुक्त, भीत (doubtful), **उत्तरदायित्व**–ज़िम्मेदारी (responsibility)

कवि परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी साहित्य जगत के अमर कवि हैं। इनका साहित्य हिंदी साहित्य भंडार की अक्षय निधि है। इन्होंने अनेक प्रभावशाली कविताएँ लिखी हैं; जैसे–*भिक्षुक, मज़दूरनी, विधवा, जागो फिर एक बार, संध्या-सुंदरी, सरोज स्मृति, राम की शक्ति पूजा* तथा *कुकुरमुत्ता* आदि।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) नारद जी ने विष्णु जी से क्या पूछा?

(ख) किसान ने ईश्वर का नाम दिन में कितनी बार लिया?

(ग) किसान को मात्र तीन बार प्रभु-स्मरण करते देख नारद ने कैसा अनुभव किया?

(घ) नारद के मन में उठी किसान के प्रति जिज्ञासा को विष्णु जी ने तुरंत शांत क्यों नहीं किया?

(ङ) नारद जी ने तेल का पात्र ले जाते समय विष्णु जी का नाम स्मरण क्यों नहीं किया?

लिखित

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

लेकर चले नारद जी
आज्ञा पर धृत-लक्ष
एक बूँद तेल उस पात्र से गिरे नहीं।
योगिराज जल्द ही
विश्व-पर्यटन करके
लौटे बैकुंठ को
तेल एक बूँद भी उस पात्र से गिरा नहीं,
उल्लास मन मे भरा था
यह सोचकर तेल का रहस्य एक
अवगत होगा नया।

(क) विष्णु जी ने नारद को क्या आज्ञा दी?

.....

(ख) 'योगिराज' शब्द किसके लिए आया है?

.....

(ग) बैकुंठ किसका धाम है?

.....

(घ) नारद के मन में उल्लास क्यों था?

.....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) नारद जी विष्णु जी के पास क्यों गए?

(ख) किसान की दिनचर्या कैसी थी?

(ग) क्या किसान दिन-रात भगवान की पूजा करता था?

(घ) नारद जी ने विष्णुलोक जाकर विष्णु जी से क्या कहा?

(ङ) विष्णु जी ने नारद जी को कौन-सा काम सौंपा?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) विष्णु जी ने नारद जी की शंका का समाधान कैसे किया? क्या नारद जी विष्णु जी की बातों से सहमत थे?

(ख) इस कविता का क्या संदेश है?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों का एकवचन तथा बहुवचन, दोनों रूपों में वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

परीक्षा – एकवचन – .....

बहुवचन – .....

भक्त – एकवचन – .....

बहुवचन – .....

हल – एकवचन – .....

बहुवचन – .....

किसान – एकवचन – .....

बहुवचन – .....

पात्र – एकवचन – .....

बहुवचन – .....

2. दिए गए विकल्पों में से शुद्ध शब्द छाँटिए–

(क) (*i*) पुश्यशलोक ☐ (*ii*) पुण्यशलोक ☐

(*iii*) पुन:श्लोक ☐ (*iv*) पुण्यश्लोक ☐

(ख) (*i*) उतरदायीत्तव ☐ (*ii*) उतरदायित्तव ☐

(*iii*) उत्तरदायित्व ☐ (*iv*) उत्तरदायितव ☐

(ग) (*i*) इश्ट ☐ (*ii*) इष्ट ☐

(*iii*) ईष्ट ☐ (*iv*) इशट ☐

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

(क) नारद जी विष्णु भगवान को एक प्रश्न पूछे। .....

(ख) विष्णु भगवान तेलपूर्ण पात्र दिया। .....

(ग) नारद धरती प्रदक्षिणा किए। .....

(घ) रास्ते में किसान मिला जिसे परीक्षा करनी थी। .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. आपके विचार से ईश्वर का प्रिय भक्त कौन होता है और क्यों?
2. क्या तीर्थ स्थानों पर जाकर ही भक्ति हो सकती है? तर्क सहित उत्तर लिखिए।
3. 'भगवान भक्ति का भूखा होता है।' इस उक्ति से आप कहाँ तक सहमत हैं? अपने विचार प्रकट कीजिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

क्रियाकलाप

- निम्नलिखित परिच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए–

जीवदया सबसे श्रेष्ठ है

उशीनर-पुत्र हरिभक्त महाराज शिवि बड़े ही दयालु और शरणागत वत्सल थे। एक समय राजा शिवि एक महान यज्ञ कर रहे थे। इतने में भयाक्रांत एक कबूतर राजा के पास आया और उनकी गोद में छिप गया। उसके पीछे उड़ता हुआ एक विशाल बाज़ वहाँ आया और वह मनुष्य की-सी भाषा में उदार-हृदय से राजा से बोला– "हे राजन! पृथ्वी के धर्मात्मा राजाओं में आप सर्वश्रेष्ठ हैं पर आज आपने धर्म से विरुद्ध कर्म करने की इच्छा कैसे की है? मैं भूख से व्याकुल हूँ। मुझे यह कबूतर भोजन के रूप में मिला है, आप इस कबूतर के लिए अपना धर्म क्यों छोड़ रहे हैं।"

राजा शिवि ने उत्तर देते हुए कहा– "मैं यह भयभीत कबूतर तुम्हें नहीं दे सकता, क्योंकि तुमसे डरकर यह कबूतर अपनी प्राणरक्षा के लिए मेरे समीप आया है और जो मनुष्य शरणागत की रक्षा नहीं करते या लोभ, द्वेष अथवा भय से उसे त्याग देते हैं, उनकी सज्जन निंदा करते हैं। भय में पड़े हुए जीवों की रक्षा करने से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं है। हे बाज़! तुम आहार चाहते हो, मैं दुख का भी नाश चाहता हूँ, अतः तुम मुझसे कबूतर के बदले में चाहे जितना और आहार माँग लो।" बाज़ सोच-विचारकर बोला, "हे राजन! यदि इस कबूतर पर आपका इतना ही प्रेम है तो इस कबूतर के ठीक बराबर वज़न का तोलकर आप अपना मांस मुझे दे दीजिए।"

राजा शिवि ने एक तराजू मँगवाया और उसके एक पलड़े में कबूतर को बैठाकर दूसरे में वे अपना मांस काट-काटकर रखने लगे और उसे कबूतर के साथ तोलने लगे। कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए और बाज़ की भूख के निवारण के लिए महाराज शिवि अपने शरीर का मांस स्वयं प्रसन्नतापूर्वक काट-काटकर दे रहे थे। अपने सुखभोग की इच्छा को त्यागकर सबके सुख में सुखी होने वाले सज्जन ही दूसरों के दुख में सदा दुखी हुआ करते हैं। धन्य है त्याग का आदर्श।

इस परिच्छेद से क्या सीख मिलती है? इससे संबंधित चित्र चिपकाइए तथा कोलाज के रूप में प्रस्तुत कीजिए। इसी प्रकार की कोई अन्य कहानी लिखिए।

7 गूदड़ साँईं

चिंतन-मनन

यह एक सुप्रसिद्ध बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसमें गरीब साँईं बच्चों में दुनिया देखता है, उसके अनुसार– बच्चे भगवान का स्वरूप होते हैं। उनके साथ खेलना, हँसना सबको अच्छा लगता है। भगवान के रूप को सिर्फ़ बच्चों में देखा जा सकता है। वास्तव में बच्चों से ही जीवन सुखमय बनता है। यह कहानी मर्म को छू जाती है।

"साँईं! ओ साँईं!" एक लड़के ने पुकारा। साँईं घूम पड़ा। उसने देखा कि एक आठ-नौ वर्ष का बालक उसे पुकार रहा है।

आज कई दिनों बाद उस मुहल्ले में साँईं दिखाई पड़ा है। साँईं **बैरागी** था–माया नहीं, मोह नहीं, परंतु कुछ दिनों से उसकी आदत पड़ गई थी कि दोपहर को मोहन के घर के सामने जाता तथा अपने दो-तीन **गूदड़** बड़े यत्न से रखकर उन्हीं पर बैठ जाता और मोहन से बातें करता। जब कभी मोहन उसे गरीब एवं भिखमंगा जानकर, माँ से ज़िद करके तथा पिता की नज़र बचाकर, कुछ साग-रोटी लाकर दे देता था,

---

शब्दार्थ–बैरागी–मोह-माया से दूर (away from worldy things),
गूदड़–फटा-पुराना गद्दा (torn mattress)

तब उस साँईं के मुख पर पवित्र मैत्री के भावों का साम्राज्य छा जाता था। गूदड़ साँईं उस समय दस वर्ष के बालक के समान अभिमान, सराहना और उलाहनों के आदान-प्रदान के बाद उसे बड़े चाव से खा लेता। मोहन की दी हुई एक रोटी उसकी अक्षय तृप्ति का कारण होती थी।

एक दिन मोहन के पिता ने उसे साँईं के साथ देख लिया था। वे बहुत बिगड़े। वे पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता के रंग में रँगे हुए, पूरी तरह उसी में सराबोर थे। उन्हें सभी फकीर ढोंगी लगते थे। सभी फकीरों से उन्हें स्वाभाविक चिढ़ थी। मोहन को उन्होंने बहुत डाँटा और कहा कि वह इस प्रकार के लोगों से दूर रहे तथा उनसे कभी बात न करे। साँईं यह सुनकर हँस पड़ा और चला गया।

उसके कई दिन बाद तक वह साँईं आस-पास भी न दिखा। आज कई दिन बाद वह साँईं आया और जान-बूझकर उस बालक के मकान की ओर नहीं गया। मोहन पढ़ने गया हुआ था। पढ़कर वापस आते समय उसे साँईं दिखाई दिया। मोहन ने साँईं को पुकारा। उसकी पुकार पर साँईं लौट आया। मोहन ने उससे पूछा–"तुम आजकल आते नहीं?"

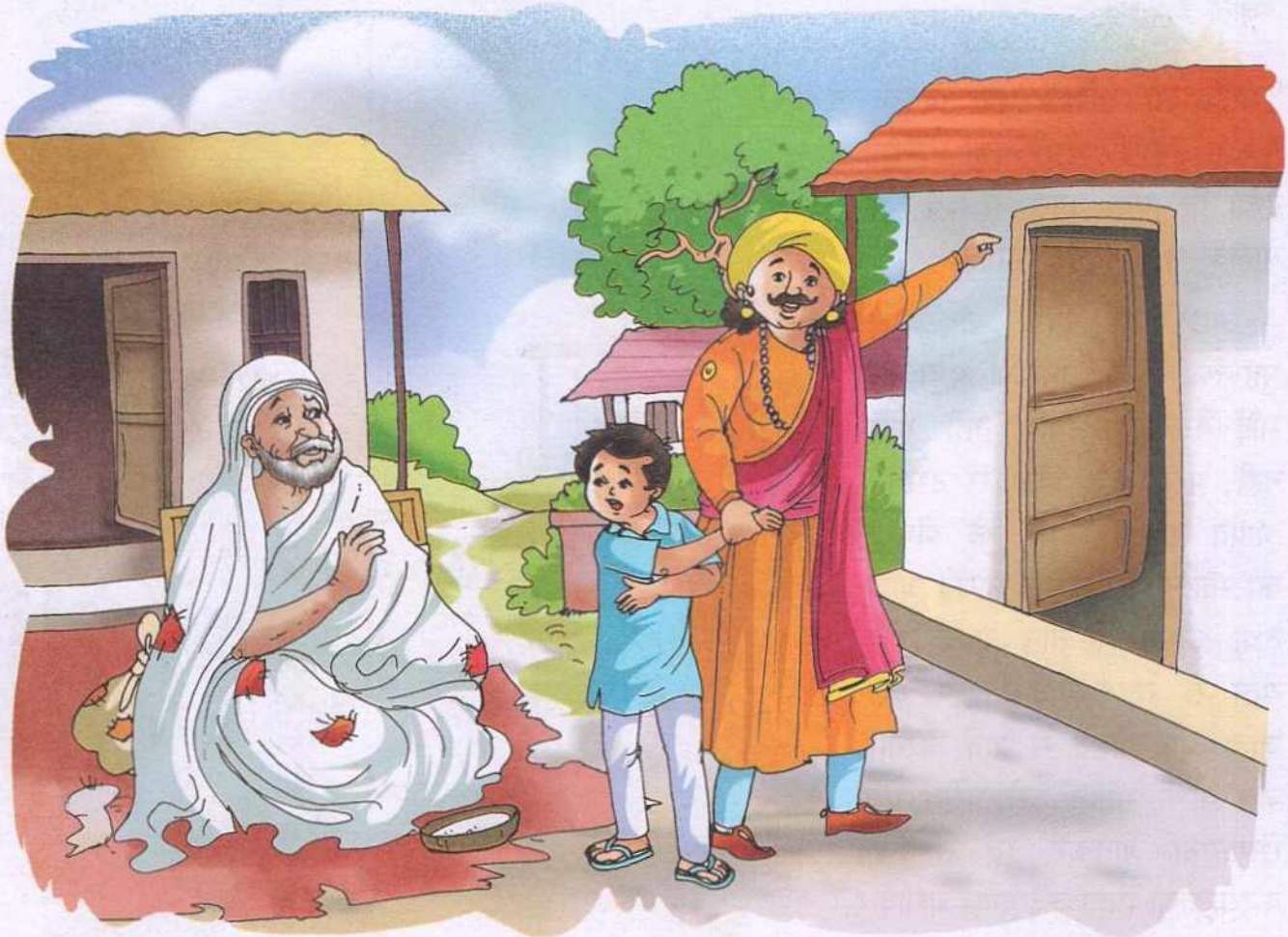

शब्दार्थ–साम्राज्य–विशाल राज्य (empire), **अक्षय**–कभी समाप्त न होने वाला (everlasting), **सराबोर**–पूरी तरह से डूबा हुआ (immersed)

"तुम्हारे बाबा बिगड़ते हैं।"

"नहीं, तुम आकर रोटी ले जाया करो।"

"भूख नहीं लगती है।"

"अच्छा, कल ज़रूर आना, भूलना मत।"

इतने में एक अन्य लड़का साँईं का गूदड़ खींचकर भागा। गूदड़ लेने के लिए साँईं उस लड़के के पीछे दौड़ा। मोहन देखता रहा, साँईं आँखों से ओझल हो गया। चौराहे तक दौड़ते-दौड़ते साँईं को ठोकर लगी और वह गिर पड़ा। सिर फटने के कारण खून बहने लगा। साँईं को खिझाने के लिए जो लड़का उसका गूदड़ लेकर भागा था, वह डरकर ठिठक गया। वह केवल मनोरंजन के लिए गूदड़ लेकर भागा था। उसका उद्देश्य साँईं को नुकसान पहुँचाना नहीं था। दूसरी ओर से मोहन के पिता आ रहे थे। उन्होंने उस लड़के को पकड़ लिया और उसके सिर पर चपत लगाई। साँईं अपना दुख भूलकर उस लड़के को बचाने लगा। वह बोला–"मत मारो, मत मारो, बच्चे को कहीं चोट लग जाएगी।" साँईं उस लड़के को छुड़ाने लगा। मोहन के पिता ने साँईं से कहा–"फिर तुम उस चिथड़े के पीछे दौड़ते क्यों थे?"

सिर फटने पर भी जिस साँईं का रोना नहीं छूटा था, वही साँईं लड़के को रोते देखकर रोने लगा। उसने मोहन के पिता से कहा–"मेरे पास दूसरी कौन वस्तु है, जिसे देकर इन 'रामस्वरूप' भगवान को प्रसन्न करता?"

"तो क्या तुम इसीलिए गूदड़ रखते हो?"

"इस चिथड़े को लेकर भागते हैं भगवान और मैं उनसे लड़कर छीन लेता हूँ, रखता हूँ फिर उन्हीं से छिनवाने के लिए, उनके मनोविनोद के लिए। सोने का खिलौना तो उचक्के भी छीनते हैं, पर चिथड़ों पर भगवान ही दया करते हैं।"–इतना कहकर बालक का मुँह पोंछते हुए मित्र के समान गलबाहीं डाले हुए साँईं चला गया।

मोहन के पिता आश्चर्य से उन्हें देखते रह गए। वह बोले–"गूदड़ साँईं! तुम निरे गूदड़ नहीं, गुदड़ी के लाल हो। तुम धन्य हो।"

–जयशंकर प्रसाद

शब्दार्थ–चिथड़े–फटे-पुराने कपड़े (torn clothes), **गलबाहीं**–गले में बाँहें (huging), **गुदड़ी का लाल**–ऊपर से साधारण किंतु मूल्यवान (simple but precious)

लेखक परिचय

आधुनिक हिंदी के छायावादी युग के प्रमुख रचनाकार जयशंकर प्रसाद जी का जन्म वाराणसी में सन् 1889 में हुआ था। इनके पिता का नाम देवीप्रसाद था। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा घर पर हुई। इन्होंने घर पर ही संस्कृत, हिंदी, फ़ारसी, उर्दू का गहन अध्ययन किया। कविता के अतिरिक्त पुरातत्व और इतिहास के अध्ययन में इनकी रुचि थी। इन्होंने काव्य के अतिरिक्त कहानी, नाटक और उपन्यासों की रचना की। इस महान साहित्यकार की मृत्यु अल्पायु में ही हो गई।

रचनाएँ– *चित्राधर* (काव्य संग्रह) *तितली, कंकाल* (उपन्यास) *अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी* (नाटक), *आँधी, इंद्रजाल, छाया, आकाशदीप* (निबंध), *काव्य और कला* (निबंध)।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) मोहन पिता की नज़र बचाकर साँईं को क्या लाकर देता था?

(ख) साँईं को देखकर मोहन के पिता क्यों चिढ़ते थे?

(ग) साँईं ने मोहन की गली में आना क्यों छोड़ा?

(घ) लड़का क्या खींचकर भागा?

(ङ) साँईं क्यों रो पड़ा?

लिखित

1. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

(क) साँईं धनी था, ... से भरा था।

(ख) मोहन के पिता को सभी फकीर ..... लगते थे।

(ग) तुम आकर ..... ले जाया करो।

(घ) साँईं ..... के लिए गूदड़ लेकर भागा था।

(ङ) चिथड़ों पर ..... ही दया करते हैं।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) "अच्छा, कल ज़रूर आना, भूलना मत।"

(ख) "मत मारो, मत मारो, बच्चे को कहीं चोट लग जाएगी।"

(ग) "गूदड़ साँईं! तुम निरे गूदड़ नहीं, गुदड़ी के लाल हो।"

3. निम्नलिखित वाक्यों को जोड़कर लिखिए–

(क) अच्छा कल ज़रूर आना	(*i*) गुदड़ी के लाल हो।
(ख) एक दिन मोहन के पिता ने, उसे	(*ii*) गलबाही डाले साँईं चला गया।
(ग) गूदड़ साँईं! तुम निरे गूदड़ नहीं	(*iii*) साँईं के साथ देख लिया।
(घ) बालक का मुँह पोंछते हुए	(*iv*) भूलना मत।

4. पाठ के अनुसार चरित्र चित्रण कीजिए–

(क) गूदड़ साँईं – .....

.....

(ख) मोहन – .....

.....

(ग) मोहन के पिता – .....

.....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) साँईं मोहन के पिता के डाँटने पर भी मोहन के घर क्यों जाता था?

(ख) मोहन के पिता को फकीरों पर विश्वास क्यों नहीं था?

(ग) साँईं बच्चों के पीछे चिथड़ों को लेकर क्यों भागता था?

(घ) साँईं बच्चे के गले में गलबाहीं डालकर क्यों निकल पड़ा?

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) साँईं गूदड़ क्यों रखता था?

(ख) लेखक ने कहानी का शीर्षक 'गूदड़ साँईं' क्यों रखा है? अपने विचार लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. "साँईं! ओ साँईं!" एक लड़के ने पुकारा।

   उक्त वाक्य में तीन विराम चिह्न, (" ") उद्धरण चिह्न, (!) विस्मयादिबोधक चिह्न तथा (।) पूर्ण विराम चिह्न का प्रयोग किया गया है।

   पाठ में से तीनों चिह्नों वाले एक-एक वाक्य लिखिए–

   .....

   .....

   .....

2. **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए–**

   (क) रोटी – ..... (ख) वस्तु – .....

   (ग) लड़का – ..... (घ) बच्चा – .....

   (ङ) चौराहा – ..... (च) खिलौना – .....

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तित कीजिए–**

   (क) बालिका – ..... (ख) पिता – .....

   (ग) लड़की – ..... (घ) भिखारी – .....

   (ङ) भगवान – ..... (च) मित्र – .....

4. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

   (क) नज़र बचाना – .....

   (ख) आँखों से ओझल होना – .....

   (ग) चपत लगाना – .....

   (घ) रोना नहीं छूटना – .....

   (ङ) आश्चर्य से देखना – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. क्या आपने कभी किसी गरीब की मदद की है? यदि 'हाँ' तो कैसे? "दीन-दुखियों की सेवा करना भगवान की पूजा करने के समान है।" इस उक्ति पर एक कहानी लिखिए।
2. आपको क्या लगता है कि हमें फकीरों पर विश्वास रखना चाहिए? समझाइए।
3. "बच्चों के साथ खेलते समय बड़े भी बच्चे बन जाते हैं।" इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए एक निबंध लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

क्रियाकलाप

- **अमूल्य रत्न**

यदि आप स्वयं में एक चुंबक की तरह लोगों को आकर्षित करने की क्षमता पैदा करना चाहते हैं तो यह न भूलें कि चुंबक बनाने में काफ़ी मेहनत लगती है।	यह अच्छा है कि आपके पास धन हो और उससे चीज़ें खरीदी जा सकें, परंतु बीच-बीच में हमें यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि हमने धन कमाने के चक्कर में ऐसा कुछ तो नहीं खो दिया है जिसे धन से खरीदा नहीं जा सकता।

इस तरह के अमूल्य रत्नों और सुविचारों का संग्रह करके पुस्तिका तैयार कीजिए। वर्ष के अंत में आपके पास अमूल्य रत्नों की खान होगी।

8 रामायण और महाभारत के महापात्र

चिंतन-मनन

माता-पिता की सेवा से बढ़कर संसार में कुछ नहीं है, जिसने माता-पिता की सेवा कर ली उसने संसार में सब कुछ पा लिया। श्रवण कुमार का नाम मातृ-पितृ भक्ति के लिए सदा ही सम्मान से लिया जाता है। इसी प्रकार महाभारत के एक पात्र कर्ण को अपनी दानशीलता तथा मित्र भक्ति के लिए जाना जाता है।

श्रवण कुमार का नाम रामायण में उसकी मातृ-पितृ भक्ति की मिसाल के रूप में लिया जाता है। ग्रंथानुसार श्रवण के माता-पिता अंधे थे। अंधे होने के बावजूद भी उन्होंने श्रवण की देखभाल में तथा संस्कार देने में कोई कमी नहीं की परंतु श्रवण कुमार का वैवाहिक जीवन सफल नहीं रहा। पत्नी के छोड़कर चले जाने के बाद श्रवण का पूरा ध्यान माता-पिता की सेवा में लगा रहता।

एक बार श्रवण के माता-पिता ने तीर्थयात्रा पर जाने की इच्छा प्रकट की। उन दिनों आज की तरह रेलगाड़ियाँ या बस सेवा नहीं थी। अंधे और बूढ़े होने के कारण श्रवण के माता-पिता चल भी नहीं सकते थे। ऐसी स्थिति में श्रवण को एक उपाय सूझा। उसने दो बड़ी-बड़ी टोकरियाँ लीं। उन्हें मज़बूत लाठी के दोनों सिरों पर रस्सी से बाँधकर लटका दिया। इस तरह बड़ा काँवर बन गया। उसने माता-पिता को एक-एक टोकरी में बिठा दिया। लाठी कंधे पर टाँगकर श्रवण आज्ञाकारी पुत्र की तरह तीर्थयात्रा कराने चल पड़ा।

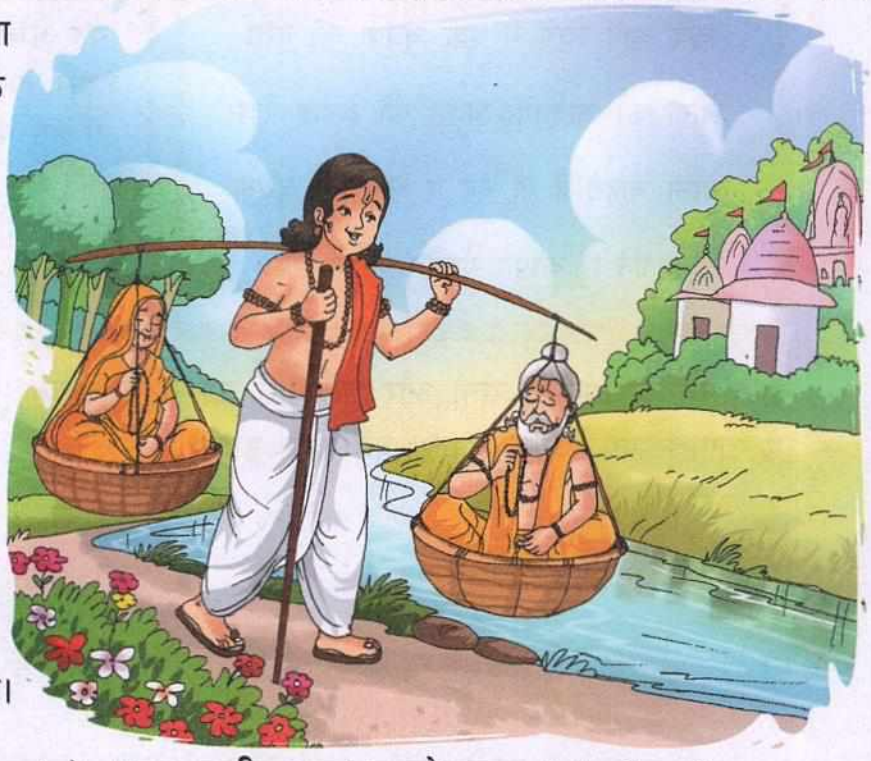

शब्दार्थ–**मिसाल**–उदाहरण (example), **आज्ञाकारी**–आज्ञा मानने वाला (obedient)

श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता को काशी, प्रयाग जैसे तीर्थस्थानों की यात्रा करवाई। अंधे होने के कारण माता-पिता देख नहीं सकते थे इसलिए श्रवण उन्हें तीर्थ क्षेत्रों की बातें सुनाता और वहाँ की स्थितियों का वर्णन करता। **तीर्थाटन** कर माता-पिता बहुत खुश थे।

एक दिन दोपहर के समय श्रवण अपने माता-पिता के साथ अयोध्या के पास एक जंगल में विश्राम कर रहे थे। माँ को प्यास लगी, हाथ में कमंडल लिए श्रवण पास में बह रही नदी से जल लाने के लिए निकल पड़ा। अयोध्या के राजा दशरथ को शिकार खेलने का शौक था और शिकार खेलने उसी समय वे जंगल आए हुए थे। श्रवण ने जल भरने के लिए कमंडल पानी में डुबोया। पानी भरने की आवाज़ सुनकर राजा दशरथ को लगा कोई जानवर पानी पीने आया है। दशरथ **शब्दभेधी** तीर चलाना जानते थे। आवाज़ को सुनकर उन्होंने तीर मारा, तीर सीधा श्रवण के सीने में जा लगा। श्रवण कराहने लगा।

किसी मनुष्य के कराहने की आवाज़ सुनकर दशरथ दौड़कर आवाज़ की दिशा में पहुँचे तो देखा कि उनका तीर एक युवक को लगा है। राजा दशरथ से अनजाने में अपराध हुआ था। उन्होंने श्रवण से **क्षमा** माँगी पर उसका कोई लाभ नहीं था। श्रवण को बार-बार अपनी प्यासी माँ का चेहरा याद आ रहा था। श्रवण ने अपनी पूरी कहानी राजा दशरथ को बताई और कहा कि वे उनकी प्यास बुझाएँ और अपने बारे में कुछ न कहें। यह कहते-कहते ही श्रवण ने अपने प्राण त्याग दिए।

दुखी हृदय से राजा दशरथ जल लेकर श्रवण के माता-पिता के पास पहुँचे। अनजान व्यक्ति के पैरों की आहट श्रवण के माता-पिता अच्छी तरह पहचान गए। उनका मन **आशंकित** हुआ। अंत में मजबूर होकर राजा दशरथ को घटना का वर्णन करना पड़ा। पुत्र शोक से व्याकुल माता-पिता ने जल ग्रहण नहीं किया और दशरथ को पुत्र शोक से **संतप्त** होने का श्राप भी दिया। श्रवण की याद में उन्होंने प्राण त्याग दिए। राजा दशरथ को अपने किए पर पछतावा हो रहा था पर होनी को कोई टाल नहीं सकता था। श्रवण कुमार की मातृ-पितृ भक्ति को आज भी याद किया जाता है।

इसी प्रकार महाभारत के एक और पात्र ने संसार के समक्ष अपनी दानशीलता और मित्र भक्ति का उदाहरण रखा है। वह पात्र है–कर्ण। बचपन से ही कर्ण को योग्य होने के बावजूद भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कर्ण अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध था। कवच-कुंडलों का दान करके वह महान कहलाया। दुर्योधन के मित्र प्रेम के लिए उसने अपने भाइयों को ठुकराया। महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने कर्ण को पराजित किया, तब उसमें **अहंकार** जाग उठा। उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कवच-कुंडल दान में प्राप्त करने की घटना बताई। अर्जुन को इस बात पर विश्वास नहीं

शब्दार्थ–तीर्थाटन–तीर्थयात्रा (visit to holy place), **शब्दभेदी**–ध्वनि के सहारे लक्ष्य को भेदना (hitting target on hearing of sound), **क्षमा**–माफी (pardon), **आशंकित**–शंका उत्पन्न होना (doubtful), **संतप्त**–दुखी (sad), **अहंकार**–घमंड (proud)

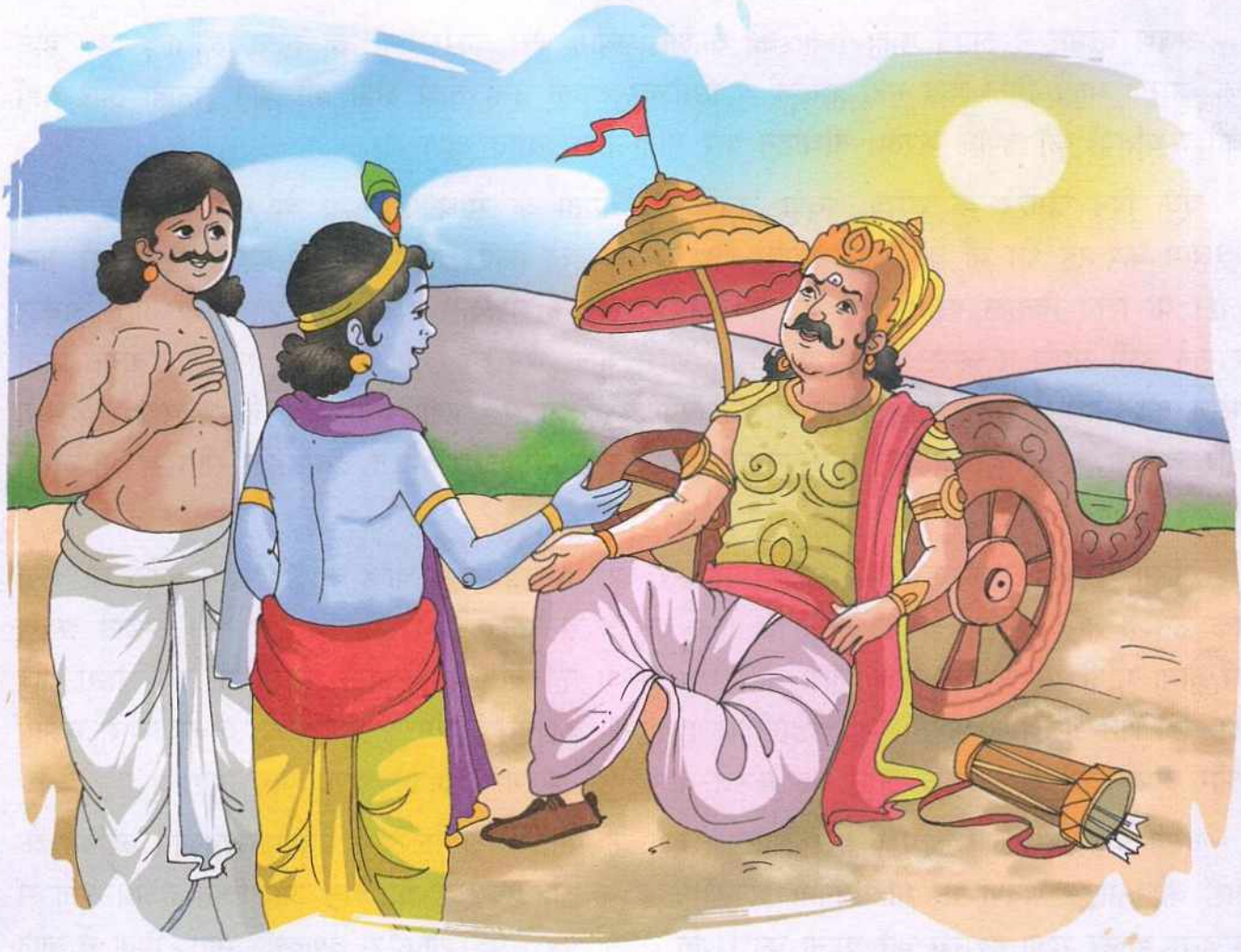

हो पा रहा था इसलिए श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध भूमि पर चलने के लिए कहा। दोनों ब्राह्मण के वेश में घायल कर्ण के पास गए। रणभूमि में घायल कर्ण ने ब्राह्मणों को प्रणाम किया और आने का उद्देश्य पूछा। तब कृष्ण ने उनसे भिक्षा माँगी और कहा कि हमारी इच्छा पूर्ण करें।

कर्ण दान देने का इच्छुक था पर उसके पास दान देने के लिए कुछ भी नहीं था। कर्ण अपने धर्म से विमुख नहीं होना चाहता था। उसने लज्जित होकर कहा, "ब्राह्मण देव! मैं रणक्षेत्र में घायल पड़ा हूँ। मेरे सैनिक मारे जा चुके हैं। मृत्यु मेरी प्रतीक्षा कर रही है। इस अवस्था में मैं भला आपको क्या दे सकता हूँ?" ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन और कृष्ण वापस लौटने लगे तो अचानक कर्ण को याद आया कि उसके दाँत सोने के थे। उसने निकट पड़े पत्थर से दाँत तोड़े और गंगा माँ का स्मरण कर उस पानी से दाँत को धोकर ब्राह्मणों को दिया ताकि दान जूठा न रहे। तब श्रीकृष्ण और अर्जुन अपने वास्तविक रूप में आए। श्रीकृष्ण ने कर्ण को आशीर्वाद देते हुए कहा, "कर्ण! जब तक पृथ्वी,

---

शब्दार्थ–**रणभूमि**–युद्ध का स्थल (battle field), **विमुख**–अलग होना (disinclined), **स्मरण**–याद करना (reminder)

सूर्य, चंद्र, तारे रहेंगे, तब तक तीनों लोकों में तुम दानवीर कहलाओगे, तुम्हारा गुणगान होता रहेगा। अब तुम मोक्ष प्राप्त करोगे।" कर्ण की दानवीरता और धर्मपरायणता देखकर अर्जुन भी उसके सामने नतमस्तक हो गए।

इस प्रकार दानवीरता के लिए कर्ण आज भी याद किए जाते हैं। रामायण और महाभारत के पात्र, सिर्फ़ पात्र नहीं, वे हमारे आदर्श हैं और हमें उनके मार्ग पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए।

–संकलित

शब्दार्थ–नतमस्तक–सिर झुकाना (bowing)

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) श्रवण कुमार का नाम किस मिसाल के रूप में लिया जाता है?

(ख) श्रवण के माता-पिता ने कहाँ जाने की इच्छा प्रकट की?

(ग) श्रवण कमंडल लिए कहाँ गया?

(घ) कर्ण किसलिए प्रसिद्ध थे?

(ङ) ब्राह्मण वेष में कर्ण के पास कौन गया?

लिखित

1. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

(क) श्रवण का ..... जीवन सफल नहीं रहा।

(ख) माता-पिता को एक-एक ..... में बिठा लिया।

(ग) आवाज़ को सुनकर उन्होंने ..... मारा।

(घ) ..... में घायल कर्ण ने ब्राह्मणों को प्रणाम किया।

(ङ) अर्जुन भी कर्ण के सामने ..... हो गए।

2. सही या गलत का निशान लगाइए–

(क) श्रवण का पूरा ध्यान माता-पिता की सेवा में था। ☐

(ख) श्रवण ने छोटा-सा काँवर बनाया। ☐

(ग) दशरथ जल लेकर श्रवण के माता-पिता के पास पहुँचे। ☐

(घ) बचपन से ही कर्ण को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ☐

(ङ) दानवीरता के लिए अर्जुन आज भी याद किए जाते हैं। ☐

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) श्रवण ने माता-पिता को तीर्थयात्रा करवाने के लिए क्या प्रबंध किया?

(ख) पुत्र शोक में व्याकुल माता-पिता ने क्या किया?

(ग) कर्ण ने दान में क्या और किस प्रकार दिया?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) राजा दशरथ द्वारा जल लेकर जाने के दृश्य को अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) कर्ण ने घायल होने के बाद भी अपनी दानशीलता किस प्रकार दिखाई? इस आधार पर कर्ण के चरित्र की कुछ विशेषताएँ भी लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए–

(क) रेलगाड़ी – ..... (ख) टोकरी – .....

(ग) लाठी – ..... (घ) कंधा – .....

(ङ) तारा – ..... (च) बूढ़े – .....

2. 'कम' शब्द में 'ई' जोड़ने पर 'कमी' शब्द बनता है।

इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में अन्य शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाइए–

(क) शिकार – ..... (ख) प्यास – .....

(ग) दुख – ..... (घ) दान – .....

(ङ) भक्त – ..... (च) होना – .....

3. पाठ में अनेक शब्द-युग्मों का प्रयोग हुआ है, निम्नलिखित शब्द-युग्मों से वाक्य बनाइए–

(क) माता-पिता – .....

(ख) बड़ी-बड़ी – .....

(ग) कहते-कहते – .....

(घ) कवच-कुंडल – .....

(ङ) एक-एक – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. यदि श्रवण के माता-पिता राजा दशरथ के हाथ से जल पी लेते और उन्हें सेवा का अवसर देते तो राजा दशरथ उनके लिए क्या-क्या करते?
2. यदि कर्ण ब्राह्मणों को दान न दे पाते तो उनके मन में किस प्रकार के विचार आते? सोचिए और अपने मित्रों से बातचीत कीजिए।

क्रियाकलाप

1. पाठ के किसी भी भाग को संवाद रूप में लिखकर उसका नाट्य मंचन कीजिए।
2. रामायण तथा महाभारत से जुड़े अन्य प्रसंग पढ़िए तथा जो प्रसंग आपको सर्वाधिक रोचक लगे उसे लिखिए।

अतिरिक्त पठन

संगीत जगत की दो धाराएँ

लता मंगेशकर

गायकी एक ऐसी दैवदत्त कला है जो हर किसी को प्राप्त नहीं हो सकती। सतत साधना और परिश्रम से 'गायकी' में निपुणता आ सकती है लेकिन कुछ 'गान गंधर्व' होते हैं जिन्हें जन्मजात कला का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इसी प्रकार की गान गंधर्वा लता मंगेशकर और श्रीमती आशा भोंसले भारतीय संगीत के लिए वरदान हैं। लता जी का जन्म 28 सितंबर, 1929 को मध्य प्रदेश में हुआ। अपने माता-पिता की वे सबसे बड़ी संतान थीं। पिता श्री दीनानाथ मंगेशकर इनके प्रथम गुरु रहे। दीनानाथ जी की शास्त्रीय संगीत और नाटकों में रुचि थी। बड़ी होने के नाते और बचपन में ही पिता को खोने के कारण परिवार का दायित्व लता जी पर आ पड़ा। आर्थिक परिस्थिति की प्रतिकूलता के कारण उन्होंने फ़िल्मों में अभिनय करना आरंभ किया। अभिनेत्री के रूप में उनकी पहली फ़िल्म 'पहिली मंगळागौर' रही। इसके बाद इन्होंने 'गजाभाऊ', 'बड़ी माँ', 'जीवन यात्रा', 'माँदा' जैसी फ़िल्मों में अभिनय किया। अभिनय से ज़्यादा लता जी की अभिरुचि गीत गाने में रही। उनकी आवाज़ में ऐसा जादू है जो शायद ही किसी को मंत्रमुग्ध न कर पाए। बचपन में उनके पिता ने उन्हें नसीहत देते हुए कहा था, "मैं तुम्हारा पिता हूँ और पिता गुरु की तरह होता है। याद रखना, पिता या गुरु जब तुम्हें सिखाए तो तुम्हें उनसे अच्छा गाना है बस! यह नहीं सोचना है कि कैसे उनकी मौजूदगी में गाऊँ और यह भी याद रखना कि अपने गुरु को कभी भूलना नहीं है।" उस नसीहत का पालन करते हुए लता जी आज 'सुर सम्राज्ञी' और 'गान सम्राज्ञी' के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी प्रतिभा की सराहना करते हुए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है–'फ़िल्म फेयर पुरस्कार', 'महाराष्ट्र पुरस्कार', 'पद्मभूषण', 'दादा साहेब फाल्के पुरस्कार', 'लाइफ़ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार', 'राजीव गांधी पुरस्कार', 'पद्म विभूषण', 'महाराष्ट्र भूषण' तथा भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न पुरस्कार' आदि इनमें प्रमुख हैं। लता जी

ने करीब 20 से अधिक भाषाओं में 30000 से अधिक गीत गाए हैं। इसी कारण दुनिया में सबसे अधिक गीत गाने के लिए 'गिनीज़ बुक आफ़ रिकॉर्ड' में इनका नाम शामिल है। लता ही एकमात्र ऐसी जीवित महिला हैं जिनके नाम से पुरस्कार दिए जाते हैं। लता जैसी महान 'सुर सम्राज्ञी' भारत के लिए तथा संगीत क्षेत्र के लिए महान देन हैं।

आशा भोंसले

आशा भोंसले का जन्म 8 सितंबर, 1933 में हुआ। आशा जी लता जी की छोटी बहन हैं। लता मंगेशकर को जिन परिस्थितियों से गुज़रना पड़ा, उन्हीं परिस्थितियों से आशा को भी गुज़रना पड़ा। जीवनयापन के लिए आशा को गायन का क्षेत्र चुनना पड़ा। सन् 1943 में उन्होंने 'माझे बाळ' (मेरा बच्चा) फ़िल्म के लिए पहला गीत गाया। हिंदी चित्रपट जगत में 'सावन आए' यह गीत 'चुनरिया' फ़िल्म के लिए गाया। संगीत यात्रा का उनका सफ़र आज तक जारी है। युवा धड़कनों पर इनका जादू आज भी चलता है। इन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। 'राष्ट्रीय पुरस्कार', 'फ़िल्म फेयर पुरस्कार' से ये कई बार सम्मानित हो चुकी हैं। सन् 1997 में 'ग्रैमी अवार्ड' के लिए इनका नाम चयनित हुआ था। 'दादा साहेब फाल्के पुरस्कार' तथा 'दयावती मोदी पुरस्कार' से भी ये सम्मानित हुई हैं।

इस प्रकार, यह कहना गलत नहीं होगा कि लता तथा आशा संगीत क्षेत्र की दो धाराएँ हैं।

ये भी संगीत जगत के दिग्गज् हैं। इनकी जानकारी प्राप्त करके इन पर लेख लिखिए।

श्रीमति गंगूबाई हंगल

श्री भीमसेन जोशी

श्री एम०एस० सुब्बलक्ष्मी

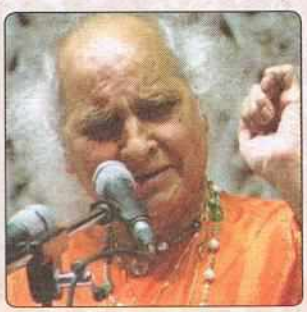

श्री पंडित जसराज

–संकलित

9 जो बीत गई सो बात गई

चिंतन-मनन

जीवन निरंतर चलने का नाम है। आज है, तो कल नहीं है पर यह किसी के लिए थम नहीं जाता। इसमें कभी सुख आते हैं तो कभी दुख। अतः हर परिस्थिति में समान भाव से रहना चाहिए।

जीवन में एक सितारा था,
माना वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया।
अंबर के आँगन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे!
कितने इसके प्यारे छूटे!
जो छूट गए फिर कहाँ मिले!
पर बोलो टूटे तारों पर,
कब अंबर शोक मनाता है!
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया।

शब्दार्थ–**सितारा**–तारा (star), **प्यारा**–प्रिय (dear), **अंबर**–आकाश (sky), **कुसुम**–पुष्प (flower), **निछावर**–समर्पण करना, देना (sacrifice)

मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ!
मुरझाईं कितनी वल्लरियाँ!
जो मुरझाईं फिर कहाँ खिलीं!
पर बोलो सूखे फूलों पर,
कब मधुबन शोर मचाता है!
जो बीत गई सो बात गई।

–हरिवंश राय बच्चन

शब्दार्थ–मधुबन–बाग, बगीचा (garden), **वल्लरियाँ**–लताएँ (vine), **मुरझाईं**–सूखी (dryed)

कवि परिचय

हरिवंशराय बच्चन का जन्म 27 नवंबर, 1907 में हुआ। ये सदी के महान कवि और लेखक के रूप में पहचाने जाते हैं। इनका जन्म इलाहाबाद के कायस्थ परिवार में हुआ। इन्होंने कायस्थ पाठशालाओं में उर्दू की शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने अंग्रेज़ी में एम०ए० और पीएच०डी० की। बचपन से काव्य की ओर इनका झुकाव रहा। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन के बाद वे भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिंदी के प्रमुख रहे। उनकी कृति 'दो चट्टानें' को 'हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इन्हें 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' तथा एफ्रो एशियाई सम्मेलन के 'कमल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। बिड़ला फाउंडेशन ने उनकी आत्मकथा के लिए उन्हें 'सरस्वती सम्मान' से पुरस्कृत किया। भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्म भूषण' से भी सम्मानित किया गया। इनकी कविताएँ, आत्मकथा तथा अन्य साहित्य इन्हें 'सदी के महान कवि' के नामांकन के लिए सार्थक बनाता है। हरिवंशराय बच्चन की रचनाएँ आज के समाज के लिए युगप्रदर्शक हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) सितारा कैसा था?

(ख) अंबर पर क्या चमकते हैं?

(ग) अंबर कब शोक नहीं मनाता?

(घ) कवि किस पर निछावर थे?

(ङ) मधुबन कब शोर नहीं मचाता?

लिखित

1. जोड़कर लिखिए–

(क) जीवन में एक	(*i*) कितने इसके तारे टूटे
(ख) अंबर के आँगन को देखो	(*ii*) तो सूख गया
(ग) जो छूट गए	(*iii*) कब मधुबन शोर मचाता है
(घ) वह सूख गया	(*iv*) फिर कहाँ मिले
(ङ) बोलो सूखे फूलों पर	(*v*) सितारा था

2. संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) "कितने इसके तारे टूटे!
कितने इसके प्यारे छूटे!"

(ख) "कब अंबर शोक मनाता है!
जो बीत गई सो बात गई।"

(ग) "मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ!"

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि को क्यों लगता है कि अंबर शोक नहीं मनाता?

(ख) 'जो छूट गए फिर कहाँ मिले!' इस पंक्ति का तात्पर्य क्या है?

(ग) 'वह सूख गया तो सूख गया।' क्या सूख रहा है और क्यों?

(घ) 'जो मुरझाईं फिर कहाँ खिलीं!' इसका क्या अर्थ है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'जो बीत गई सो बात गई' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'सूखी कलियाँ' तथा 'सूखे फूल' के माध्यम से कवि क्या दर्शाना चाहता है?

भाषा ज्ञान

1. क्रिया के मुख्यत: दो भेद होते हैं– अकर्मक और सकर्मक।

(क) **सकर्मक क्रिया**–जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है तथा जिसके प्रयोग में कर्म की अनिवार्यता बनी रहती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

- राजेश ने फूल तोड़ा।

यहाँ तोड़ा क्रिया का प्रभाव फूल पर पड़ रहा है।

(ख) **अकर्मक क्रिया**–जिस क्रिया का फल कर्म पर नहीं, कर्ता पर पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

- राजेश दौड़ गया।

यहाँ दौड़ गया में कर्म की आवश्यकता नहीं है। ये सीधे-सीधे कर्ता से संबंधित है।

इस कविता में से अकर्मक और सकर्मक क्रिया के दो-दो वाक्य ढूँढ़कर लिखिए–

.....

.....

.....

.....

2. कुछ क्रियाएँ की जाती हैं और कुछ स्वयं हो जाती हैं; जैसे–

- सीता खाना खा रही है। (क्रिया की जा रही है–करना)
- फ़सल उग रही है। (क्रिया स्वयं हो रही है–होना)

निम्नलिखित वाक्यों से 'करना' तथा 'होना' वाली क्रियाएँ छाँटकर नाम तक रेखा खींचिए–

फूल सुंदर है।		गांधी जी सत्य के पुजारी थे।
माली पौधे लगा रहा है।	करना	वर्षा हो रही है।
बच्चों का नाटक हो रहा है।	होना	बच्चे चुप हैं।
आँधी आई।		वह गाता है।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. अगर जीवन में सभी कुछ शाश्वत होता– मुरझाना, सूखना, मरना, टूटना आदि न होता तो क्या होता? वर्ग में वाद-विवाद के रूप में इस विषय पर चर्चा कीजिए।
2. बड़े लोगों का कहना है कि, 'संसार क्षणभंगुर है' या 'संसार पानी के बुलबुले की तरह है।' आपके अनुसार शाश्वत क्या है?
3. 'होनी को कोई टाल नहीं सकता' इस विषय पर एक कहानी लिखिए।

क्रियाकलाप

- इस पेड़ का अपना महत्व है। यह पेड़ क्या संदेश देता है? इस पर्व की चर्चा कीजिए।

10 खोटा सिक्का

चिंतन-मनन

गलतियाँ करना गलत नहीं है, लेकिन उन्हें सुधारना आवश्यक है। गलतियाँ करना मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। जैसे– छात्र जाने-अनजाने में गलतियाँ करते हैं। उन्हें प्रेम से, स्नेह से ठीक किया जा सकता है। परिस्थितिवश की गई गलती को सोच-समझकर सुधारा जा सकता है।

दुर्भाग्यवश सुरेश फेल हो गया। कोई बात नहीं, फेल-पास विद्यार्थी-काल में लगा ही रहता है लेकिन चिंता की बात यह हुई कि सुरेश ने अपना ठीक-ठीक परीक्षा-परिणाम घरवालों को नहीं बताया। यदि बता देता तो क्या उसे फाँसी चढ़ा देते? बहुत होता तो सब उसे यही नसीहत देते, 'सुरेश बाबू! ज़रा पढ़ाई की तरफ़ अधिक ध्यान लगाया करो और खेल-कूद में अधिक समय नष्ट न किया करो।'

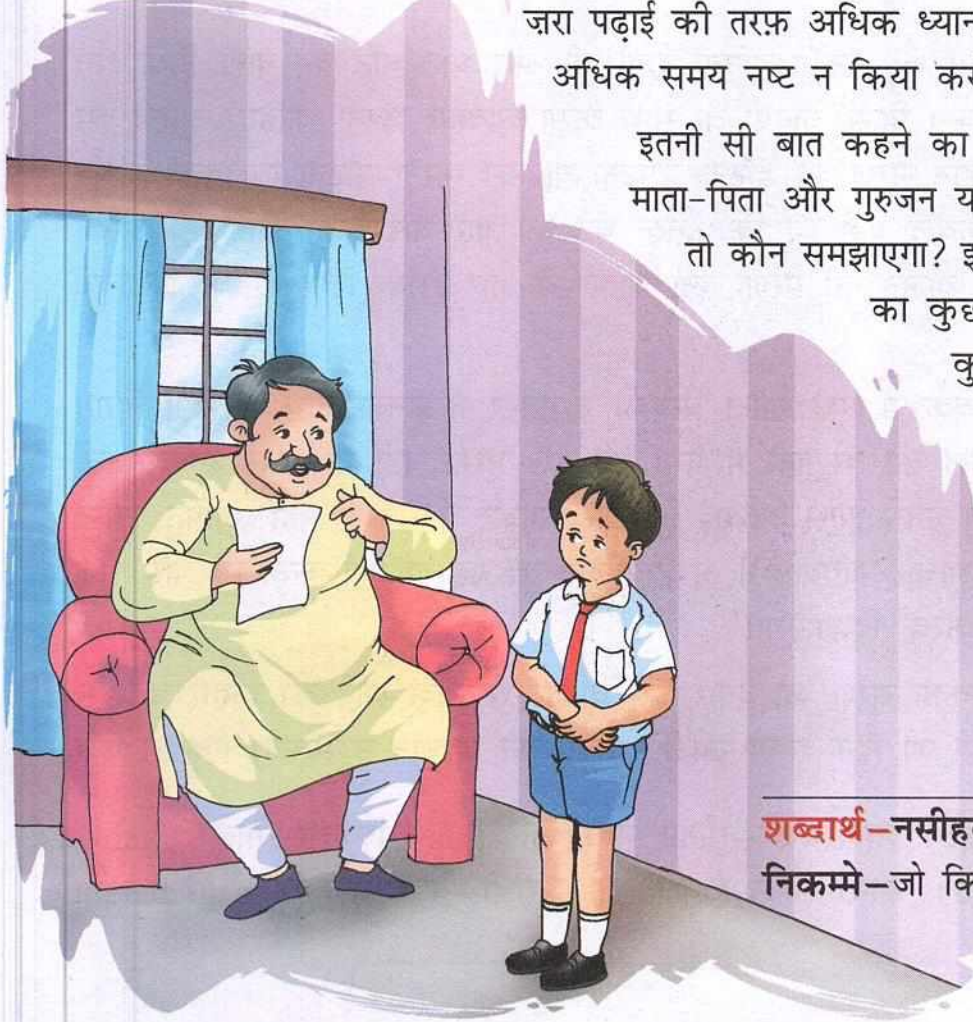

इतनी सी बात कहने का हर पिता को पूरा अधिकार है। माता-पिता और गुरुजन यदि विद्यार्थी को नहीं समझाएँगे तो कौन समझाएगा? इतनी-सी बात सुन लेने से लड़के का कुछ बिगड़ नहीं जाता है। यह सब कुछ सुरेश के साथ भी होता। इसलिए कितना अच्छा होता कि वह भी अपना ठीक-ठीक परीक्षा-परिणाम अपने पिता जी को बता देता। पर उस निकम्मे ने ऐसा नहीं किया और झूठ बोलकर कह दिया, 'मैं पास हो गया हूँ।'

शब्दार्थ–नसीहत–उपदेश (preaching),
निकम्मे–जो किसी काम का न हो (duffer)

यदि बात यहीं खत्म हो जाती तो भी कुछ अधिक न बिगड़ता। पर सच्चाई यह है कि एक बार झूठ बोल देने से कभी काम नहीं चलता। उस झूठ को छिपाने के लिए फिर और कई झूठ बोलने पड़ते हैं। कई और बहाने बनाने पड़ते हैं और छल-कपट भी किए जाते हैं। सुरेश को भी ऐसा ही करना पड़ा क्योंकि वह जानता था कि कुछ दिनों के पश्चात् रिपोर्ट-बुक घर में भेजी जाती है। उसने सोचा, यदि ऐसा हो गया तो मेरे झूठ की पोल खुल जाएगी। अतएव अपने पहले झूठ को छिपाने के लिए उसने एक और जालसाज़ी की। अपनी रिपोर्ट-बुक पिता जी को ला दिखलाई, जिसके अनुसार वह परीक्षा में उत्तीर्ण था और प्रत्येक विषय में उसके बहुत अच्छे अंक दिखाए गए थे। इसी से उसके पिता जी को संदेह हुआ।

उन्होंने सोचा, 'यह कैसे हो सकता है कि सारा साल तो मासिक, त्रैमासिक और छमाही परीक्षाओं में यह या तो फेल होता रहा या बड़ी मुश्किल से पास हुआ। फिर इस नौमाही परीक्षा में वह एकदम इतना योग्य कैसे बन गया! हो न हो, इसमें कोई रहस्य अवश्य होना चाहिए।'

वे रिपोर्ट देखकर उस समय तो चुप रह गए, पर बाद में उन्होंने चुपके-चुपके पता लगाया तो विदित हुआ कि सुरेश बाबू एक नहीं, तीन-तीन विषयों में फेल हैं। अब क्या हो? सुरेश को काटो तो खून नहीं। चला था बड़ा चालाक बनने, पर आखिर उसी को लज्जित होना पड़ा। वह पछताने लगा कि मैंने झूठ क्यों बोला?

उसके पिता जी सयाने आदमी थे। उन्होंने दुनिया देखी थी और घाट-घाट का पानी पिया था। इसलिए वे खूब समझते थे कि कब किस आदमी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। अपनी इस व्यवहार-कुशलता के कारण उन्होंने सुरेश को डाँटना-डपटना या उसे मारना-पीटना बिलकुल उचित न समझा। उनका उद्देश्य तो केवल यही था कि उनके बेटे को बार-बार झूठ बोलने की आदत न पड़ जाए। अतः वे उसे सत्य बोलने की प्रेरणा देना चाहते थे और इसके लिए वे किसी उचित अवसर की प्रतीक्षा में थे।

एक दिन बस के भीड़-भड़क्के में एक खोटा सिक्का कंडक्टर ने उनके हाथ में थमा दिया। उन्होंने भी लोगों की धक्कम-पेल की परेशानी में पैसों की देख-परख नहीं की। घर आकर उन्हें पता चला कि एक खोटी अठन्नी उनके पास आ गई है। उसे देखकर वे घबराए नहीं, अपितु प्रसन्न हुए और मन-ही-मन में उन्होंने सोचा, 'भगवान ने अच्छा किया जो यह खोटा सिक्का मेरे पास भेज दिया। मैं इसका अच्छा उपयोग करके दिखाऊँगा।'

उन्होंने जान-बूझकर वही सिक्का सुरेश को देकर उसे बाज़ार से सौदा लाने को कहा। मंडी में कोई गँवार लोग तो बैठे नहीं होते जो दिन-दहाड़े खोटी अठन्नी को पहचान न सकते। एक से एक

शब्दार्थ—**बहाने**—निमित्त (excuse), **जालसाज़ी**—धोखा-धड़ी (cheating), **विदित**—मालूम (known), **लज्जित**—शर्मिंदा (embarrassed), **सौदा**—माल (material), **मंडी**—बड़ा बाज़ार (main market),

बड़ा घाघ वहाँ दुकान की गद्दी पर बैठा होता है। सुरेश एक के बाद एक करके कई दुकानदारों के पास गया पर कोई भी उस खोटी अठन्नी के बदले सब्ज़ी देने को तैयार न हुआ। हारकर वह खाली हाथ ही घर लौट आया।

उसके पिता जी पहले ही जानते थे कि ऐसा होगा और अवश्य होगा। फिर भी उन्होंने अनजान-सा बनते हुए पूछा, "क्यों सुरेश, खाली हाथ क्यों लौट आया? सब्ज़ी क्यों नहीं लाया?"

सुरेश ने तपाक से उत्तर दिया, "पिता जी! इस खोटी अठन्नी की सब्ज़ी देने को कोई तैयार नहीं।"

उसके पिता जी ने बनावटी आश्चर्य से पूछा, "क्यों, क्या अठन्नी खोटी है?"

सुरेश ने विश्वासपूर्वक कहा, "हाँ पिता जी! यह बिलकुल खोटी है। इसे लेने को कोई तैयार नहीं। जो भी इसे देखता है, देखते ही कह देता है– जाओ, ले जाओ अपनी खोटी अठन्नी। ऐसी धोखाधड़ी हमारे साथ नहीं चलेगी।" अब उसके पिता जी ने अपने दिल की बात कहने का बिलकुल उचित अवसर समझा, जिसे वह बहुत दिनों से सुरेश को कहना चाहते थे। उन्होंने वह खोटी अठन्नी सुरेश से ले ली और उसे अपने हाथ में पकड़कर सुरेश को दिखाते हुए बोले, "देखो सुरेश! यह अठन्नी खोटी है न?" सुरेश बोला, "हाँ पिता जी।"

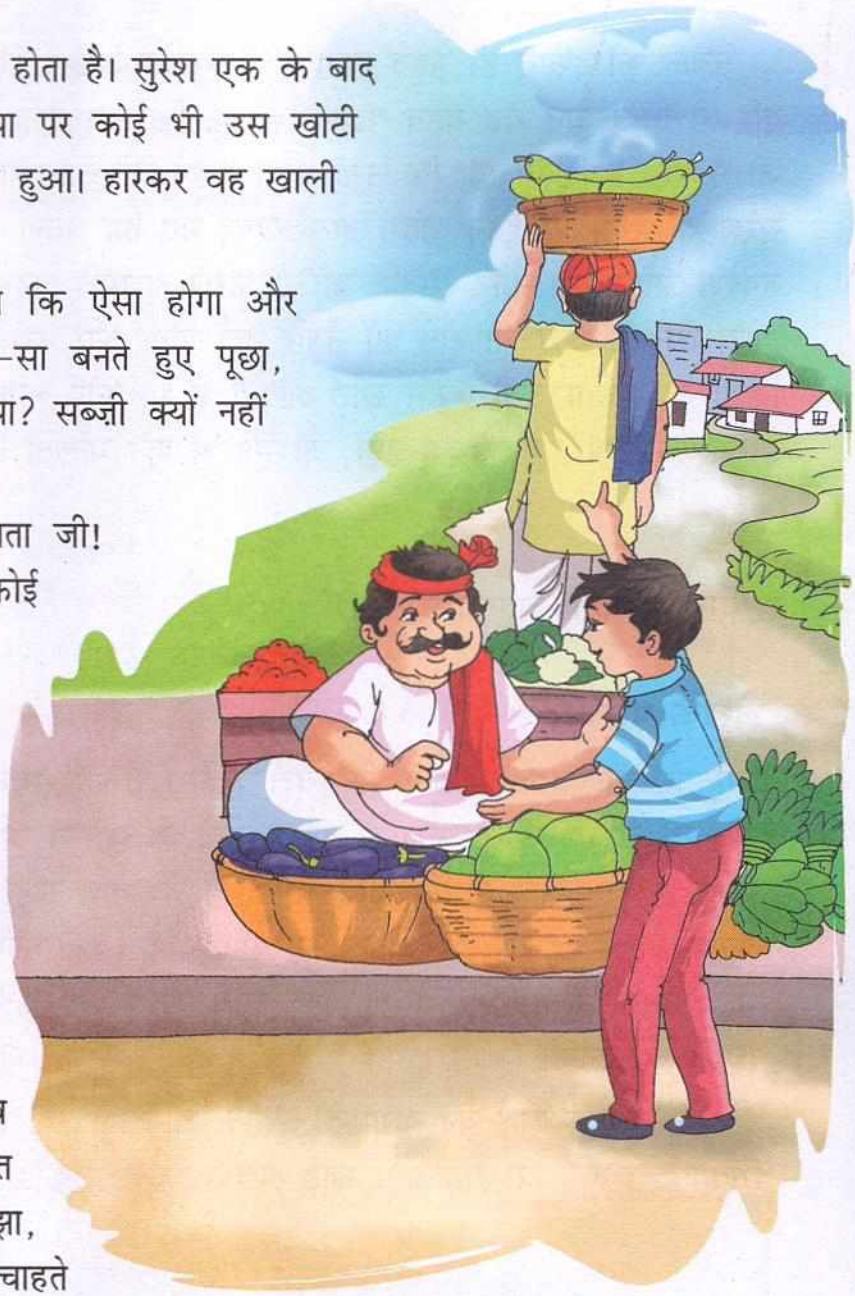

पिता जी ने आगे कहा, "देखो बेटा! आज तुमने अपनी आँखों से देख लिया कि एक खोटे सिक्के को लेने के लिए कोई तैयार नहीं। इसके बदले किसी ने तुम्हें बाज़ार में सौदा नहीं दिया। अब तुम्हीं बताओ, जब एक खोटा सिक्का बाज़ार में नहीं चल सकता तो एक खोटा आदमी संसार में कैसे चल सकता है? आशा है, तुम मेरा इशारा समझ गए होगे।"

शब्दार्थ–**घाघ**–चालाक (cunning), **तपाक**–तुरंत (immediate), **इशारा**–संकेत (hint)

सयाने को इशारा ही बहुत होता है। निस्संदेह पिछले दिनों सुरेश ने झूठ बोलकर एक भारी भूल की थी किंतु अब वह बहुत पछता रहा था कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। अब उसके पिता जी ने ऐसा ढंग अपनाया कि उन्हें बहुत कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उनके एक-दो वाक्य ही सुरेश के हृदय पर इतना गहरा असर डाल गए कि उतना असर न धमकियों से होता, न लंबे-चौड़े उपदेश झाड़ने से। खोटे सिक्के का उदाहरण सचमुच बहुत सफल रहा। सुरेश समझ गया कि जैसे खोटा सिक्का कोई भी लेने को तैयार नहीं होता और उसके द्वारा लेन-देन का कोई व्यवहार नहीं किया जा सकता, इसी प्रकार खोटे आदमी से भी कोई व्यवहार नहीं करना चाहता। खोटा आदमी वह है जो खरा नहीं, जो सच्चा नहीं, जो मुँह से झूठ बोलता है और व्यवहार से झूठा है।

–जगतराम आर्य

शब्दार्थ–सयाने–चतुर (clever)

लेखक परिचय

जगतराम जी का जन्म ऊना, हिमाचल प्रदेश में 16 दिसंबर, 1910 को हुआ। आपकी पढ़ाई निकट गाँव के डी०ए०वी० स्कूल में हुई। स्कूल के वरिष्ठ अध्यापक पं० तुलसीराम जी की देखरेख में शिक्षा हुई। आप अमर शहीद भगतसिंह के साथ कई क्रांतिकारी घटनाओं से जुड़े रहे। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी के भी आप अनन्य सहयोगी रहे। आप स्वतंत्रता आंदोलन के समय भाई परमानंद के साथ भी रहे और उनके साथ कई-कई दिन अज्ञातवास भी किया। 4 अगस्त, 1993 को इनका निधन हुआ।

यह पाठ 'सच्चाई की करामात' पुस्तक से लिया गया है। इस पाठ का आशय यह है कि खोटे सिक्के की तरह इस समाज में खोटे आदमी के साथ कोई व्यवहार नहीं करना चाहता है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) किसने परीक्षा-परिणाम घरवालों को नहीं बताया?

(ख) एक झूठ छिपाने के लिए क्या करना पड़ता है?

(ग) सुरेश कितने विषयों में फेल हुआ था?

(घ) सुरेश खाली हाथ क्यों लौट आया था?

(ङ) सुरेश को किस बात पर पछतावा हो रहा था?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) ..... सुरेश फेल हो गया।

(ख) सुरेश के पिता जी ..... आदमी थे।

(ग) खोटा सिक्का ..... ने सुरेश के पिता जी के हाथ में थमा दिया।

(घ) खोटा सिक्का पाठ के लेखक ..... हैं।

(ङ) सुरेश के पिता ने सुरेश को सौदा लाने ..... भेजा।

2. संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) "इस खोटी अठन्नी की सब्ज़ी देने को कोई तैयार नहीं था।"

(ख) "देखो सुरेश! यह अठन्नी खोटी है न?"

(ग) "आशा है, तुम मेरा इशारा समझ गए होगे।"

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) सुरेश ने फेल होने पर भी घरवालों को ठीक परिणाम क्यों नहीं बताया?

(ख) सुरेश ने क्या जालसाज़ी की?

(ग) सुरेश के पिता जी को किस बात को लेकर संदेह हुआ और क्यों?

(घ) खोटे सिक्के का प्रयोग सुरेश के पिता जी ने किस प्रकार किया और उससे क्या फ़ायदा हुआ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) सुरेश के पिता जी ने सुरेश का मन परिवर्तित कैसे किया? लिखिए।

(ख) इस कहानी से आपको क्या सीख मिलती है?

भाषा ज्ञान

1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। काल के मुख्यत: तीन प्रकार हैं–
   1. **वर्तमान काल**–जो समय चल रहा है, जैसे–सुरेश परीक्षा दे रहा है।
   2. **भूतकाल**–जो समय बीत चुका है, जैसे–सुरेश फेल हो गया।
   3. **भविष्यत् काल**–जो समय आने वाला है; जैसे–सुरेश ने वादा किया कि वह कभी झूठ नहीं बोलेगा।

   इस पाठ में आए तीनों कालों के दो-दो उदाहरण छाँटकर लिखिए।

2. **मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

   (क) नसीहत देना – .....

   (ख) लज्जित होना – .....

   (ग) घाट-घाट का पानी पीना – .....

   (घ) पोल खुलना – .....

   (ङ) प्रेरणा देना – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. क्या आपने कभी सुरेश की तरह कोई ऐसी शरारत की है जिसे आपके पिता जान गए? यदि 'हाँ', तो उन्होंने क्या कदम उठाए?
2. झूठ हमेशा झूठ होता है झूठे व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता। इस उक्ति पर कहानी लिखिए।
3. 'एक झूठ छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं'–क्या यह सच है? इस विषय पर वर्ग में चर्चा कीजिए और एक परिच्छेद लिखिए।

क्रियाकलाप

- स्वामी विवेकानंद जी के जीवन के बारे में चर्चा करके उनके जीवन की कुछ घटनाओं को लेकर नाटिका के रूप में प्रस्तुत कीजिए। एक घटना यहाँ प्रस्तुत है–

किसी गाँव में एक वृद्ध व्यक्ति अपनी झोपड़ी के सामने बैठा जूते बना रहा था। तभी गेरुआ वस्त्र पहने एक संत उसके पास आए और बोले, "बाबा, बहुत दूर से चल कर आ रहा हूँ। मुझे बहुत तेज़ प्यास लगी है। क्या पीने को पानी मिलेगा?" वृद्ध व्यक्ति की आँखें आश्चर्य से उन्हें देखती रह गईं। उसे संत के वचनों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह असमंजस में पड़ गया कि संत को आखिर क्या उत्तर दे? संत समझ गए कि यह व्यक्ति द्वंद्व में फँस गया है। कुछ उत्तर न मिलते देख उन्होंने फिर कहा, "बाबा, अगर पानी नहीं हो तो किसी दूसरे स्थान पर जाकर अपनी प्यास बुझाऊँ।" वृद्ध हाथ जोड़कर बोला, "स्वामी जी, आप स्वयं देख रहे हैं कि मैं जूते बना रहा हूँ। क्या मेरे हाथ का दिया जल ग्रहण कर सकेंगे? गाँव के लोग मेरे दिए जल को पीना तो दूर, छूना भी स्वीकार नहीं करते।"

वृद्ध की बात सुनकर संत ठहाका लगाकर हँस पड़े। संत के इस तरह हँसने से वृद्ध और भी ज़्यादा डर गया लेकिन दूसरे ही क्षण स्वामी जी शांत भाव से बोले, "यह तो मैं अपनी खुली आँखों से देख ही रहा हूँ लेकिन मुझे इससे कोई सरोकार नहीं। तुम मुझे खुशी-खुशी जल पिलाओ। यदि तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो मैं भोजन भी तुम्हारे घर करूँगा।" स्वामी जी की बात सुनकर वृद्ध व्यक्ति के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। वह नतमस्तक हो गया। स्वामी जी ने वृद्ध की मानसिक उद्विग्नता को शांत करते हुए कहा, "इस धरती पर कोई छोटा-बड़ा नहीं है। हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं। उस ईश्वर का अंश प्रत्येक जीव में विद्यमान है। जो ईश्वर की संतान को छोटा और हीन समझता है, उससे घृणा करता है, उसे ईश्वर भी उसी तरह देखते हैं और वैसा ही व्यवहार करते हैं।" स्वामी जी ने उस वृद्ध व्यक्ति के घर पानी ही नहीं पिया, वरन् प्रेमपूर्वक भोजन भी ग्रहण किया। वह संत स्वामी विवेकानंद थे।

11 जैसे उनके दिन फिरे

चिंतन-मनन

जीवन में गुणों के माध्यम से ही सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। गुणी व्यक्ति किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकता है। लेकिन वर्तमान में गुणों की परिभाषा बदल गई है। आज झूठ, धोखा तथा छल-प्रपंच का बोलबाला है।

एक राजा था उसके चार लड़के थे। रानियाँ तो अनेक थीं, पर बड़ी रानी ने बाकी सभी रानियों के पुत्रों को ज़हर देकर मार डाला था और इस बात से राजा साहब बहुत प्रसन्न हुए थे। क्योंकि वे नीतिवान थे और जानते थे कि चाणक्य का आदेश है कि राजा अपने पुत्रों को भेड़िया समझे। बड़ी रानी के चारों लड़के जल्दी ही राजगद्दी पर बैठने के लिए लालायित थे, इसलिए राजा साहब को जल्दी बूढ़ा होना पड़ा।

एक दिन राजा साहब ने चारों पुत्रों को बुलाकर कहा, पुत्रो मेरी अब चौथी अवस्था आ गई है। जैसे दशरथ ने कान के पास के केश श्वेत होते ही राजगद्दी छोड़ दी थी। उसी तरह अब मैं भी संन्यास लेना चाहता हूँ, तपस्या कर परलोक को सुधारना चाहता हूँ, ताकि तुम जब वहाँ आओ, तो तुम्हारे लिए मैं वहाँ भी राजगद्दी तैयार रख सकूँ। आज मैंने तुम्हें यह बताने के लिए बुलाया है कि गद्दी पर तुम चारों के बैठने लायक जगह नहीं है। अगर किसी प्रकार चारों समा

भी गए तो आपस में धक्का-मुक्की होगी और सभी गिरोगे। लेकिन मैं दशरथ जैसी गलती नहीं करूँगा और तुममे से किसी के साथ पक्षपात भी नहीं करूँगा, मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा। तुम चारों ही राज्य से बाहर चले जाओ। ठीक एक साल बाद फाल्गुन की पूर्णिमा को तुम चारों दरबार में उपस्थित होना। मैं देखूँगा कि इस एक साल में किसने कितना धन कमाया और कौन-सी योग्यता प्राप्त की? उसके बाद ही मैं अपने मंत्री की सलाह से, जिसे सर्वोत्तम समझूँगा, राजगद्दी सौंप दूँगा। "जो आज्ञा", कहकर चारों राजकुमारों ने राजा साहब को प्रणाम किया और राज्य के बाहर चले गए।

पड़ोसी राज्य में पहुँचकर चारों राजकुमारों ने चार रास्ते पकड़े और अपने पुरुषार्थ तथा किस्मत को आजमाने चल पड़े। ठीक एक साल बाद-फाल्गुन की पूर्णिमा को राजसभा में चारों राजकुमार हाज़िर हुए। राजसिंहासन पर राजा साहब विराजमान थे, उनके पास ही नीचे आसन पर प्रधानमंत्री बैठे थे। आगे विदूषक और चाटुकार शोभा पा रहे थे।

राजा ने कहा, "पुत्रो! आज एक साल पूरा हुआ और तुम सब यहाँ हाज़िर भी हो गए। मुझे उम्मीद थी कि इस एक साल में तुममें से तीन या तो बीमारी के शिकार हो जाओगे या फिर तुममें से कोई एक शेष तीनों को मार डालेगा और मेरी समस्या हल हो जाएगी। पर तुम चारों यहाँ उपस्थित हो। खैर! अब तुममें से प्रत्येक मुझे बताए कि किसने इस एक साल में क्या काम किया और कितना धन कमाया?" राजा साहब ने बड़े पुत्र की ओर देखा।

शब्दार्थ–**पुरुषार्थ**–पौरूष, मेहनत (efforts, hard work), **विदूषक**–मसखरी करना, भाँड, जोकर (clown), **चाटुकार**–पिट्ठू, मुफ्त की चापलूसी करने वाला (spaniel)

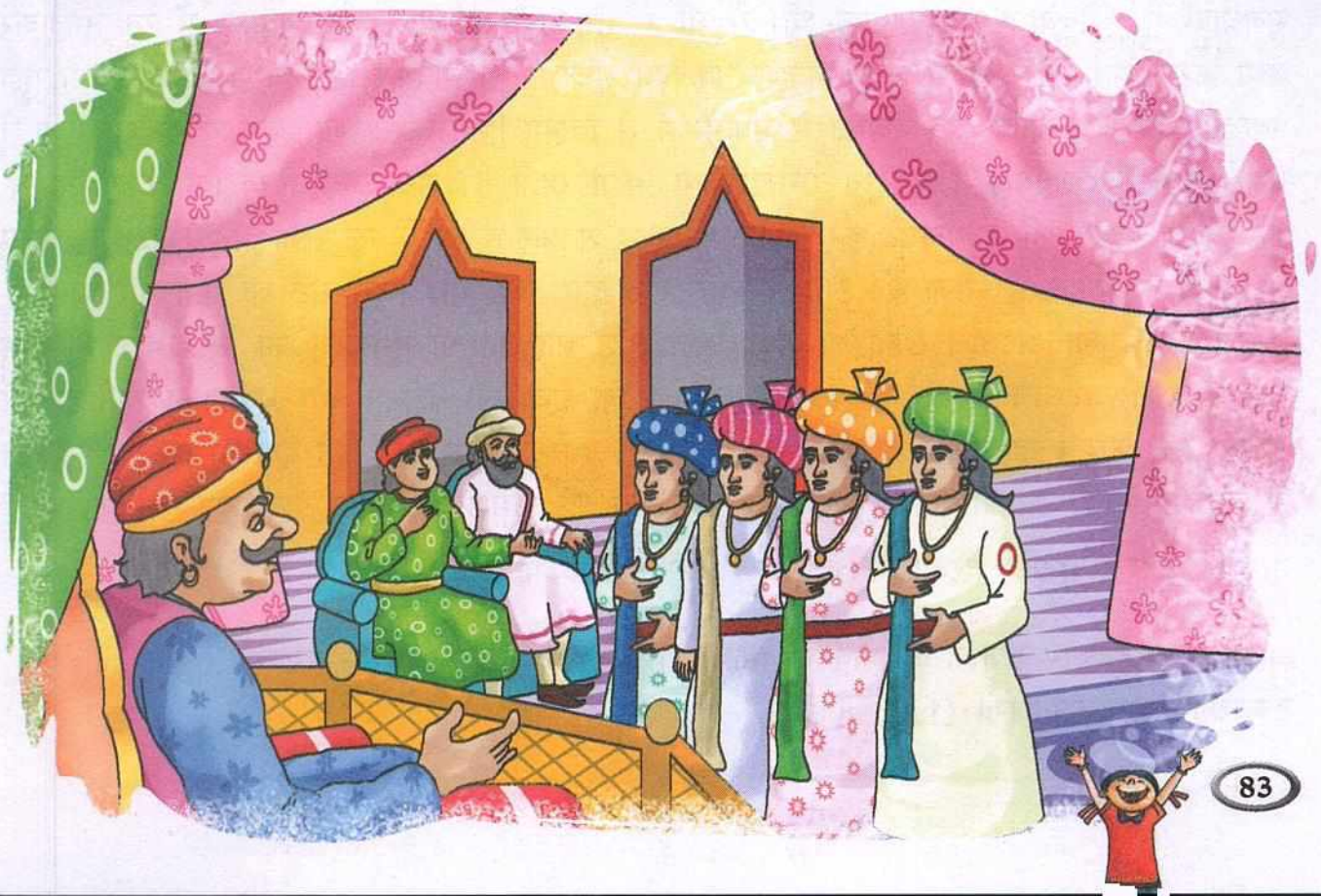

बड़ा पुत्र हाथ जोड़कर बोला, "पिता जी, मैं जब दूसरे राज्य में पहुँचा, तो मैंने विचार किया कि राजा के लिए ईमानदारी और परिश्रम बहुत आवश्यक गुण है। इसलिए मैं एक व्यापारी के यहाँ गया और उसके यहाँ बोरे ढोने का काम करने लगा। मैंने एक वर्ष पीठ पर बोरे ढोए हैं, परिश्रम किया है। ईमानदारी से धन कमाया है। मज़दूरी में से बचाई हुई ये सौ स्वर्णमुद्राएँ ही मेरे पास हैं। मेरा विश्वास है कि ईमानदारी और परिश्रम ही राजा के लिए सबसे आवश्यक हैं और मुझमें ये दोनों ही गुण हैं, इसलिए राजगद्दी का अधिकारी मैं हूँ।"

ऐसा कहकर वह मौन हो गया। राजसभा में सन्नाटा छा गया। राजा ने दूसरे पुत्र की ओर संकेत किया।

वह बोला, "पिता जी, मैंने राज्य से निकलने पर सोचा कि मैं एक राजकुमार हूँ और क्षत्रिय भी, क्षत्रिय अपने बाहुबल पर भरोसा करता है। इसलिए मैंने पड़ोसी राज्य में जाकर डाकुओं का एक गिरोह संगठित कर लिया और लूटमार करने लगा। धीरे-धीरे मुझे राज्य कर्मचारियों का सहयोग भी मिलने लगा और मेरा काम खूब अच्छा चलने लगा। बड़े भाई जिसके यहाँ काम करते थे, उसके यहाँ मैंने दो बार डाका डाला था। इस एक साल की कमाई में पाँच लाख स्वर्णमुद्राएँ मेरे पास हैं। मेरा विश्वास है कि राजा को साहसी और लुटेरा होना चाहिए, तभी वह अपने राज्य का विस्तार कर सकता है। ये दोनों गुण मुझमें हैं, इसलिए मैं ही राजगद्दी का अधिकारी हूँ।"

'पाँच लाख' सुनते ही दरबारियों की आँखें फटी-की-फटी रह गईं।

राजा के संकेत पर तीसरा कुमार बोला, "पिता जी, मैंने एक राज्य में जाकर व्यापार किया। राजधानी में मेरी बहुत बड़ी दुकान थी। मैं घी में मूँगफली का तेल और शक्कर में रेत मिलाकर बेचा करता था। मैंने राजा से लेकर मज़दूर तक को सालभर घी-शक्कर खिलाया। राज-कर्मचारी मुझे पकड़ते नहीं थे, क्योंकि उन सबको मैं मुनाफ़े में से हिस्सा दिया करता था। एक बार स्वयं राजा ने मुझसे पूछा कि शक्कर में यह रेत-सरीखी क्या मिली रहती है? मैंने उत्तर दिया कि करुणानिधान, यह विषेश प्रकार की उच्चकोटि की खदानों से प्राप्त शक्कर है जो केवल राजा-महाराजाओं के लिए मैं विदेश से मँगाता हूँ। राजा यह सुनकर बहुत खुश हुए। बड़े भाई जिस सेठ के यहाँ बोरे ढोते थे, वह मेरा ही मिलावटी माल खाता था और मँझले लुटेरे भाई को भी मूँगफली का तेल-मिला घी तथा रेत-मिली शक्कर मैंने खिलाई है। मेरा विश्वास है कि राजा को बेईमान और धूर्त होना चाहिए तभी उसका राज कायम रह सकता है। सीधे राजा को कोई एक दिन भी नहीं रहने देगा। मुझमें ये दोनों गुण हैं, इसलिए गद्दी का अधिकारी मैं हूँ। मेरी एक वर्ष की कमाई दस लाख स्वर्णमुद्राएँ मेरे पास हैं।"

'दस लाख' सुनकर दरबारियों की आँखें और अधिक फट गईं।

शब्दार्थ—**बाहुबल**—बाजुओं की ताकत (muscle power), **करुणानिधान**—दयावान (gracious), **उच्चकोटि**—अच्छी श्रेणी (high class)

राजा ने तब सबसे छोटे कुमार की ओर देखा। छोटे कुमार की वेश-भूषा और भाव-भंगिमा तीनों से भिन्न थी। वह शरीर पर अत्यंत सादे और मोटे कपड़े पहने था। पाँव और सिर नंगे थे। उसके मुख पर बड़ी प्रसन्नता और आँखों में बड़ी करुणा थी।

वह बोला, "पिता जी, मैं जब दूसरे राज्य में पहुँचा तो मुझे पहले तो यह सूझा ही नहीं कि क्या करूँ। कई दिन मैं भूखा-प्यासा भटकता रहा। चलते-चलते एक दिन मैं एक अट्टालिका के सामने पहुँचा। उस पर लिखा था– 'सेवा-आश्रम'। मैं भीतर गया तो वहाँ तीन-चार आदमी बैठे ढेर-की-ढेर स्वर्ण-मुद्राएँ गिन रहे थे। मैंने उनसे पूछा, भद्रों तुम्हारा धंधा क्या है?"

उनमें से एक बोला, "त्याग और सेवा।" मैंने कहा, "भद्रों त्याग और सेवा तो धर्म है। ये धंधे कैसे हुए?" वह आदमी चिढ़कर बोला, "तेरी समझ में यह बात नहीं आएगी। जा, अपना रास्ता ले।"

उनमें से एक को मेरी दशा देखकर दया आ गई। उसने कहा, "तू क्या चाहता है?"

मैंने कहा, "मैं भी आपका धंधा सीखना चाहता हूँ। मैं भी बहुत-सा स्वर्ण कमाना चाहता हूँ।"

उस दयालु आदमी ने कहा, "तो तू हमारे विद्यालय में भरती हो जा। हम एक सप्ताह में तुझे सेवा और त्याग के धंधे में पारंगत कर देंगे। शुल्क कुछ नहीं लिया जाएगा, पर जब तेरा धंधा चल पड़े, तब श्रद्धानुसार गुरुदक्षिणा दे देना।"

"पिता जी, मैं सेवा-आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने लगा। मैं वहाँ राजसी ठाठ से रहता, सुंदर वस्त्र पहनता, सुस्वादु भोजन करता, सुंदरियाँ पंखा झेलतीं, सेवक हाथ जोड़े सामने खड़े रहते। अंतिम दिन मुझे आश्रम के प्रधान ने बुलाया और कहा, "वत्स, तू सब कलाएँ सीख गया। भगवान का नाम लेकर कार्य आरंभ कर दे। जा, भगवान तुझे सफलता दें।"

"बस, मैंने उसी दिन 'मानव-सेवा संघ' खोल दिया, प्रचार कर दिया कि मानव-मात्र की सेवा करने का बीड़ा हमने उठाया है। हमें समाज की उन्नति करनी है, देश को आगे बढ़ाना है। गरीबों, भूखों, नंगों, अपाहिजों की हमें सहायता करनी है। हर व्यक्ति हमारे इस पुण्यकार्य में हाथ बँटाए, और हमें मानव-सेवा के लिए चंदा दें। पिता जी, उस देश के निवासी बड़े भोले हैं। ऐसा कहने पर वे बढ़-चढ़कर चंदा देने लगे। मझले भैया के सेठ ने भी दिया और बड़े भैया ने भी पेट काटकर दो मुद्राएँ रख दीं। लुटेरे भाई ने भी मेरे चेलों को एक सहस्र मुद्राएँ दी थीं, क्योंकि एक बार राजा के सैनिक जब उसे पकड़ने आए तो उसे आश्रम में मेरे चेलों ने छिपा लिया था। पिता जी, राज्य का आधार धन है। राजा को प्रजा से धन वसूल करने की विद्या आनी चाहिए। प्रजा से प्रसन्नतापूर्वक धन खींच लेना, राजा का आवश्यक गुण है। उसे बिना नश्तर लगाए खून निकालना आना चाहिए।

शब्दार्थ–भाव-भंगिमा–मुख के हाव-भाव (facial expression), **अट्टालिका** –बड़ा महल, भवन आदि (palace), **भद्रों**–सज्जन पुरुष (gentlemen), **पारंगत**–निपुण, दक्ष (expert), **सुस्वादु**–अच्छा, स्वादिष्ट (tasty), **नश्तर**–चाकू, उस्तरा (sharp tool)

मुझमें यह गुण है, इसलिए मैं ही राजगद्दी का अधिकारी हूँ। मैंने इस एक साल में चंदे से बीस लाख स्वर्ण-मुद्राएँ कमाई जो मेरे पास हैं।"

'बीस लाख' सुनते ही दरबारियों का मुख खुला का खुला रह गया। तब राजा ने मंत्री से पूछा, "मंत्रीवर आपकी क्या राय है? चारों में से कौन कुमार राजा बनने के योग्य है?"

मंत्रीवर बोले, "महाराज इसे सारी राजसभा समझती है कि सबसे छोटा कुमार ही सबसे योग्य है। उसने एक साल में बीस लाख मुद्राएँ इकट्ठी कीं। उसमें अपने गुणों के सिवा शेष तीनों कुमारों के गुण भी हैं– बड़े जैसा परिश्रम उसके पास है, दूसरे कुमार के समान वह साहसी और लुटेरा भी है। तीसरे के समान बेईमान और धूर्त भी। अतएव उसे ही राजगद्दी दी जाए।" मंत्री की बात सुनकर राजसभा ने तालियाँ बजाईं।

दूसरे दिन छोटे राजकुमार का राज्याभिषेक हो गया। तीसरे दिन पड़ोसी राज्य की गुणवती राजकन्या से उसका विवाह भी करा दिया गया। जल्दी ही उसे पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई और वह सुख से राज करने लगा। कहानी थी सो खत्म हुई। 'जैसे उनके दिन फिरे, वैसे सबके दिन फिरें।'

–हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ–**राज्याभिषेक**–राजतिलक (coronation)

लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1924 को इटारसी के पास 'जमाली' मध्यप्रदेश में हुआ। गाँव में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ दिनों तक अध्यापन कार्य करने के बाद परसाई जी ने स्वतंत्र लेखन का कार्य प्रारंभ किया। 10 अगस्त, 1995 को जबलपुर मध्यप्रदेश में इनका निधन हो गया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– **कहानी संग्रह**– हँसते हैं-रोते हैं, दो नाक वाले लोग, रानी नागफनी की कहानी; **उपन्यास**– तट की खोज आदि।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) राजा के कितने पुत्र थे?

(ख) राजा ने अपने पुत्रों को क्या आदेश दिया?

(ग) राजा ने अपने किस पुत्र का राज्याभिषेक किया?

(घ) 'राजा अपने पुत्रों को भेड़िया समझे'–यह किसका आदेश था?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) अगर किसी प्रकार चारों समा भी गए तो आपस में ..... होगी और सभी गिरोगे।

(ख) क्षत्रिय अपने ..... पर भरोसा करता है।

(ग) "बस, मैंने उसी दिन ..... खोल दिया प्रचार कर दिया कि मानव-मात्र की सेवा करने का बीड़ा हमने उठाया है।

2. किसने, किससे कहा?

	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) लेकिन मैं दशरथ जैसी गलती नहीं करूँगा और तुममें से किसी के साथ पक्षपात भी नहीं करूँगा। मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा।	.....	.....
(ख) राजा को साहसी और लुटेरा होना चाहिए, तभी वह अपने राज्य का विस्तार कर सकता है।	.....	.....

(ग) प्रजा से प्रसन्नतापूर्वक धन खींच लेना, राजा का आवश्यक गुण है। उसे बिना नश्तर लगाए खून निकालना आना चाहिए। ....

(घ) ईमानदारी और परिश्रम ही राजा के लिए सबसे आवश्यक हैं। ....

(ङ) राजा को बेईमान और धूर्त होना चाहिए तभी उसका राज कायम रह सकता है। सीधे राजा को कोई एक दिन भी नहीं रहने देगा। ....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) राजा ने अपने पुत्रों की क्या परीक्षा ली?

(ख) राजा कौन-सी गलती नहीं करना चाहता था?

(ग) राजा को किस बात की उम्मीद थी?

(घ) एक वर्ष में राजा के किस पुत्र ने सबसे अधिक स्वर्णमुद्राएँ कमाई?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) सभी राजकुमारों ने अपने किन गुणों का बखान कर स्वयं को राजगद्दी के योग्य बताया?

(ख) राजकुमारों ने किन रास्तों को चुनकर अपने पुरुषार्थ और किस्मत को आजमाया? विस्तार से बताइए।

(ग) राजा के मंत्री ने राज्याभिषेक के लिए चुने गए राजकुमार के पक्ष में क्या तर्क दिए?

(घ) कहानी के शीर्षक की सार्थकता प्रमाण सहित स्पष्ट कीजिए तथा अन्य उपयुक्त शीर्षक भी सुझाइए।

भाषा ज्ञान

1. कहानी में आए निम्नलिखित गुणवाचक विशेषण शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) नीतिवान – .....

(ख) चाटुकार – .....

(ग) ईमानदार – .....

(घ) साहसी – .....

(ङ) सुस्वादु – .....

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताइए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) परलोक को सुधारना – .....

.....

(ख) दिन फिरना – .....

.....

(ग) पेट काटना – .....

.....

(घ) बिना नश्तर लगाए खून निकालना – .....

.....

3. तत्पुरुष समास– इस समास में दूसरा पद (उत्तर पद) प्रधान होता है। दोनों पदों (शब्दों) के बीच में आने वाले परसर्ग या कारक चिह्न का लोप हो जाता है, जैसे– देशभक्ति – देश के लिए भक्ति (संप्रदान तत्पुरुष, कारक चिह्न– के लिए)।

अब आप निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह कीजिए और उनकी कारक विभक्ति भी बताइए–

	समास-विग्रह	कारक विभक्ति
(क) राजसभा	.....	.....
(ख) राजकन्या	.....	.....
(ग) राजकुमार	.....	.....
(घ) राजसिंहासन	.....	.....
(ङ) भक्तिहीन	.....	.....

4. निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन कीजिए–

(क) गुणवती – .....

(ख) बुद्धिमान – .....

5. निम्नलिखित गद्यांश को उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कर पुनः लिखिए–

उनमें से एक को मेरी दशा देखकर दया आ गई उसने कहा तू क्या चाहता है मैंने कहा मैं भी आपका धंधा सीखना चाहता हूँ मैं भी बहुत सा स्वर्ण कमाना चाहता हूँ उस दयालु आदमी ने कहा तो तू हमारे विद्यालय में भरती हो जा हम एक सप्ताह में तुझे सेवा और त्याग के धंधे में पारंगत कर देंगे शुल्क कुछ नहीं लिया जाएगा पर जब तेरा धंधा चल पड़े तब श्रद्धानुसार गुरुदक्षिणा दे देना

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. 'आपके अनुसार एक राजा में किन अनिवार्य गुणों का होना आवश्यक है।' विषय पर कक्षा में विस्तृत विचार-विमर्श कीजिए।
2. कहानी में सभी राजकुमारों ने अपने-अपने गुणों का बखान कर स्वयं को राजगद्दी का सही अधिकारी घोषित करने का प्रयास किया है। आपके अनुसार राजा के किस पुत्र का सच्चे अर्थों में राज्याभिषेक किया जाना चाहिए था और क्यों? विचार कर उत्तर दीजिए।
3. राजा दशरथ की किस गलती की ओर कहानी में संकेत किया गया है? विचार कीजिए अथवा अपने बड़ों से बातचीत के बाद उत्तर दीजिए।

क्रियाकलाप

1. कहानी को संवाद रूप में लिखकर उसका नाट्य मंचन कीजिए।
2. हरिशंकर परसाई द्वारा रचित अन्य व्यंग्य रचनाओं को पुस्तकालय अथवा इंटरनेट की सहायता से पढ़िए।

अतिरिक्त पठन

संसार रथ के दो पहिये

श्रीमती सुधा मूर्ति

नारी मन में ठान ले तो सभी कुछ हासिल कर सकती है। शून्य से सृष्टि का निर्माण कर सकती है। इसका उदाहरण हैं श्रीमती सुधा मूर्ति। इनका जन्म 19 अगस्त, 1950 में कर्नाटक के शिमोग्गा में हुआ। इनके पिता श्री एस०आर० कुलकर्णी पेशे से वैद्य थे। माता-पिता की छत्रछाया में इनका संगोपन हुआ। इन्होंने बंगलुरू के एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय से प्रथम श्रेणी में बी०ई० और कंप्यूटर विज्ञान में एम०ई० की उपाधि प्राप्त की। दोनों परीक्षाओं में इन्हें स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुआ। शिक्षा समाप्ति के बाद सुधा मूर्ति ने सबसे पहले ग्रेजुएट प्रशिक्षु के तौर पर टाटा कंपनी में काम किया। टाटा कंपनी में इंजीनियर (अभियंता) के रूप में नियुक्त होने वाली ये प्रथम महिला थीं। इसके बाद इन्होंने 'वालचंद ग्रुप ऑफ़ इंडस्ट्रीज़' में काम किया। सुधा जब टाटा कंपनी में कार्य कर रही थीं, उसी समय वहीं पर कार्यरत श्री नारायण मूर्ति से उनका विवाह हुआ। विवाहोपरांत सुधा कुलकर्णी श्रीमती सुधा मूर्ति के रूप में पहचानी जाने लगीं।

आठ वर्ष तक टेल्को (टाटा) को अपनी सेवाएँ देने के बाद 1982 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दिया और अपने पति श्री नारायण मूर्ति के साथ सिर्फ़ दस हज़ार रुपये की बचत से 'इनफ़ोसिस' कंपनी की स्थापना की। दोनों की मेहनत और लगन से सुधा मूर्ति 1996 में इनफ़ोसिस फाउंडेशन की चेयरपर्सन बनीं। वे कहती हैं, "पति के विशाल व्यक्तित्व की परछाईं के नीचे दबने की बजाय, कोई महिला यदि चाहे तो अपना अलग व्यक्तित्व गढ़ सकती है।" सुधा मूर्ति आज लाखों महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

राजलक्ष्मी पुरस्कार समारोह (चेन्नई)

सुधा मूर्ति ने स्वयं को अब पूर्णरूप से समाज सुधार के लिए समर्पित कर दिया है। बेल्लारी, बीजापुर, हुबली आदि के अस्पतालों को उच्च तकनीकी चिकित्सा उपकरण प्रदान करवाए हैं। कांची में कैंसर

अस्पताल में चिकित्सा सहायता प्रदान की है। आंध्र प्रदेश के सूखा पीड़ित क्षेत्र में राहत कार्य करवाए हैं। उनके अथक प्रयास से कर्नाटक के आठ सौ से भी अधिक गाँवों में कंप्यूटर लगाने पर एक करोड़ रुपया लगाया गया है और तीन हज़ार से अधिक पुस्तकालय खोले गए हैं। गरीब, ज़रूरतमंद बच्चों के लिए सहायता प्रदान की गई है।

सुधा मूर्ति के कार्यक्षेत्र और कार्यशैली को देखकर उन्हें अनेक पुरस्कारों और उपाधियों से अलंकृत किया गया है। भारत सरकार ने इन्हें 2006 में 'पद्मश्री पुरस्कार' से अलंकृत किया। सत्यभामा विश्वविद्यालय ने इन्हें 'मानद डॉक्टरेट' की उपाधि से सम्मानित किया। इसके अलावा 'कर्नाटक राज्योत्सवा पुरस्कार', 'ओजस्विनी पुरस्कार', 'मिलेनियम शिरोमणि पुरस्कार', 2002 में 'वूमेन ऑफ़ द ईयर' तथा 'राजलक्ष्मी पुरस्कार' आदि से भी ये सम्मानित की गईं हैं। सुधा मूर्ति की हस्ती इतनी विशाल है कि सभी पुरस्कार उनके सामने छोटे नज़र आते हैं लेकिन खास बात है कि इसके बावजूद घमंड जैसा शब्द उनके व्यक्तित्व तो क्या, उनकी परछाईं तक को छू नहीं पाया है।

एन०आर० नारायण मूर्ति

माना जाता है हर यशस्वी पुरुष के पीछे नारी का हाथ होता है और यह बात श्री एन०आर० नारायण मूर्ति जी को लेकर भी सही रही। इनका जन्म सन् 1946 में कर्नाटक में हुआ। इन्होंने इलेक्ट्रिकल इंजीनियर की पदवी मैसूर से प्राप्त की और आई०आई०टी० खड़कपुर से मास्टर की पदवी सन् 1969 में प्राप्त की। टाटा कंपनी में काम करते समय इनका परिचय सुधा मूर्ति से हुआ और दोनों विवाह सूत्र में बँध गए। करीब इक्कीस साल तक इन्होंने इनफ़ोसिस के सी०ई०ओ० के रूप में काम किया। आई०टी० क्षेत्र में 'इनफ़ोसिस' एक मील के पत्थर का कार्य करती रही है। इन्होंने कई कंपनियों में 'बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर' के रूप में भी पदभार सँभाला है। उनमें से कुछ हैं– 'एच०एस०बी०सी०', 'आई०सी०आई०सी०आई० बैंक', 'फोर्ड फाउंडेशन', 'यू०एन० फाउंडेशन', 'इंडो-ब्रिटिश पार्टनरशिप', 'एशिया एड्वायज़री बोर्ड ऑफ़ ब्रिटिश' आदि।

इस प्रकार आई०टी० क्षेत्र में क्रांति लाने का श्रेय इन दोनों को जाता है। संसार के नक्शे पर भारत को अग्रणी रूप में लाने का श्रेय इन दोनों पति-पत्नी को जाता है। सच है कि संसार को चलाने के लिए दो मज़बूत पहिये चाहिए, तभी संसार रूपी रथ आगे चल सकता है।

–संकलित

12 हम दीवानों की क्या हस्ती

चिंतन-मनन

इस संसार का हर व्यक्ति दीवाना है। हर एक की दीवानगी अलग है। श्री भगवतीचरण वर्मा द्वारा रचित प्रस्तुत कविता दीवानों की अद्भुत मनोदशा एवं उनके विचित्र व्यवहार की प्रतिच्छवि है। उनका हँसना-रोना, कुछ कहना-सुनना, निरंतर चलते रहना, अपने-पराए का भेद मिटाते हुए स्वयं भव-बंधन में पड़ना और स्वयं ही उनको तोड़ना–ये सब उनके विचित्र व्यवहार के दृष्टांत हैं।

हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले!
मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले!

आए बनकर उल्लास अभी, आँसू बनकर बह चले अभी!
सब कहते ही रह गए, अरे! तुम कैसे आए, कहाँ चले?

किस ओर चले, यह मत पूछो, चलना है, बस इसलिए चले।
जग से उसका कुछ लिए चले, जग को अपना कुछ दिए चले।

दो बात कही, दो बात सुनी, कुछ हँसे और फिर कुछ रोए,
छककर सुख-दुख के घूँटों को, हम एक भाव से पिए चले।

हम भिखमंगों की दुनिया में, स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निशानी-सी उर पर, ले असफलता का भार चले।

शब्दार्थ–**दीवाना**–मनमौजी (wanton), **हस्ती**–ताकत (power), **आलम**–दुनिया (world), **उल्लास**–आनंद (joy), **छककर**–तृप्त होकर (satisfied), **स्वच्छंद**–आज़ाद (free), **उर**–हृदय (heart)

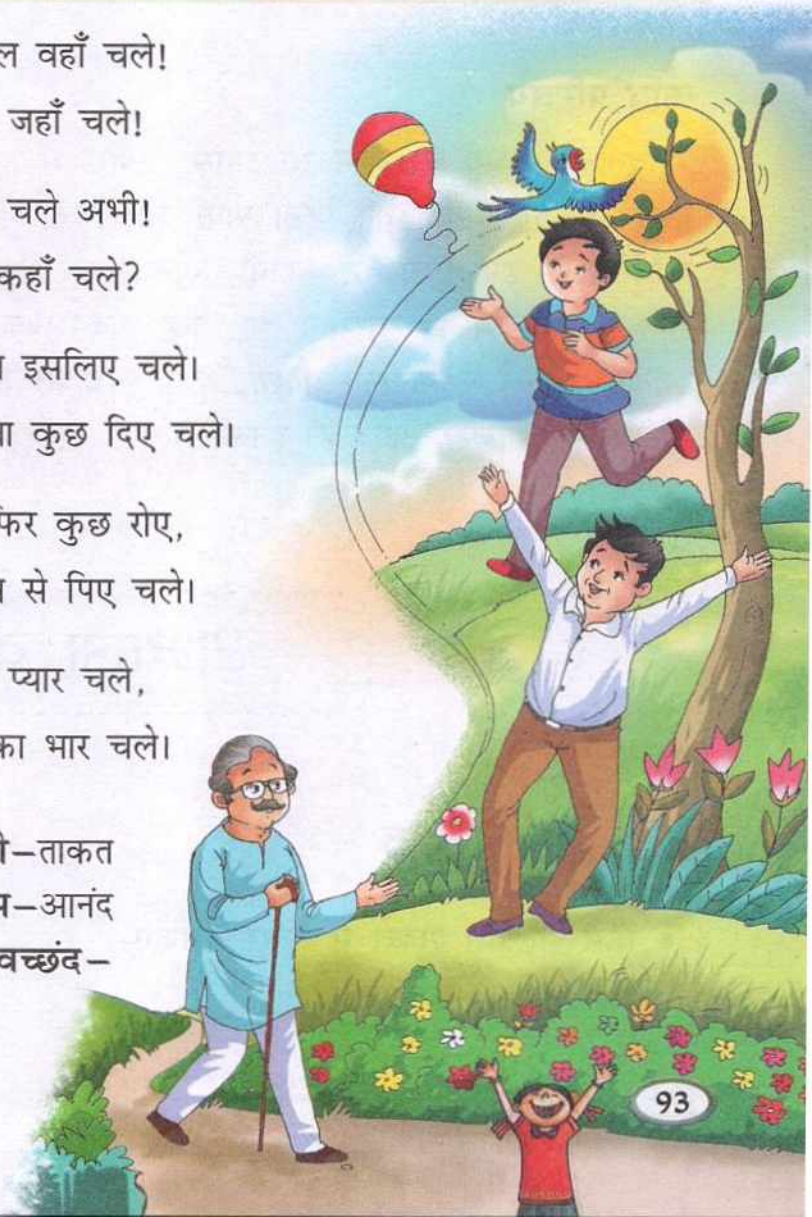

हम मान-रहित, अपमान-रहित, जी भरकर खुलकर खेल चुके,
हम हँसते-हँसते आज यहाँ प्राणों की बाज़ी हार चले।

हम भला-बुरा सब भूल चुके, नतमस्तक हो मुख मोड़ चले,
अभिशाप उठाकर होठों पर वरदान दृगों से छोड़ चले।

अब अपना और पराया क्या? आबाद रहें रुकने वाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं, हम अपने बंधन तोड़ चले।

–भगवतीचरण वर्मा

शब्दार्थ–रहित–के बिना (without), **नतमस्तक**–सिर झुकाए (bowing), **दृग**–दृष्टि, आँखें (eyes)

कवि परिचय

भगवतीचरण वर्मा का जन्म 30 अगस्त, 1903 में उन्नाव जिले के शफीपुर नामक गाँव में हुआ। इन्होंने एल०एल०बी० की डिग्री प्राप्त की। विचार तथा नवजीवन में संपादक तथा प्रकाशन का कार्य किया। इन्होंने नाटक, कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में योगदान दिया। भूले-बिसरे चित्र के लिए साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हुए। इन्हें 'पद्मभूषण' से भी अलंकृत किया गया। इनकी प्रमुख रचनाएँ–*मुगलों ने सल्तनत बक्शी, सबहिं नचावत राम गोसाईं* (उपन्यास), *अपने खिलौने, पतन, तीन वर्ष, चित्रलेखा* आदि हैं। इनकी मृत्यु 5 अक्तूबर, 1988 को हुई।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) दीवाने क्या करते हैं?

(ख) दीवाने जग को क्या देते हैं?

(ग) दीवाने प्यार कहाँ पर लुटाते हैं?

(घ) असफलता का भार कहाँ पर है?

(ङ) दीवाने क्या भूल चुके हैं?

(च) रुकने वालों के लिए दीवानों ने क्या कहा है?

(छ) दीवाने कौन-सा बंधन तोड़कर आगे चल पड़े हैं?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) दीवाने चलते समय ..... उड़ाते चलते हैं।

(ख) भिखमंगों की दुनिया में ..... लुटाकर चले।

(ग) हम ..... प्राणों की बाज़ी हार चले।

(घ) ..... रहें रुकने वाले।

(ङ) 'हम दीवानों की क्या हस्ती' इस कविता के कवि ..... हैं।

2. रेखा खींचकर जोड़िए–

(क) हम दीवानों की क्या हस्ती,	(*i*) आबाद रहें रुकने वाले
(ख) सब कहते ही रह गए,	(*ii*) वरदान दृगों से छोड़ चले
(ग) मान-रहित-अपमान-रहित,	(*iii*) जी भरकर खुलकर खेल चुके
(घ) अभिशाप उठाकर होठों पर,	(*iv*) अरे! तुम कैसे आए, कहाँ चले
(ङ) आए बनकर उल्लास अभी,	(*v*) आज यहाँ, कल वहाँ चले
(च) अब अपना और पराया क्या,	(*vi*) आँसू बनकर बह चले अभी

3. संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) "छककर, सुख-दुख के घूँटों को, हम एक भाव से पिए चले।"

(ख) "किस ओर चले यह मत पूछो।"

(ग) "उर पर, ले असफलता का भार चले।"

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) दीवानों से क्या मतलब है और दीवाने किसे कहा गया है?

(ख) दीवानों से क्या पूछा जाता है और क्यों पूछा जाता है?

(ग) 'हम भिखमंगों की दुनिया में स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले' इस पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

(घ) 'स्वयं हम अपने बंधन तोड़ चले' का अर्थ लिखिए। 'बंधन' का वास्तविक अर्थ क्या हो सकता है?

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'मस्ती का आलम', 'सुख-दुख के घूँट' तथा 'अभिशाप उठाना' का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. 'की' तथा 'कि' का प्रयोग

'की' संबंधकारक है, इसका प्रयोग वाक्य के बीच संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य संज्ञा या सर्वनाम से संबंध प्रकट करने के लिए किया जाता है, जबकि 'कि' योजक शब्द है, इसका प्रयोग दो वाक्यों को जोड़ने के लिए किया जाता है; जैसे–

- हम दीवानों की क्या हस्ती। (की संबंधकारक)
- यह मत पूछो कि चलना है। (कि योजक शब्द)

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पद संबंधकारक हैं या योजक शब्द–

(क) हम धूल की परवाह नहीं करते। .....

(ख) सब कहते रहे कि मत जाओ। .....

(ग) हमने किसी की बात नहीं सुनी। .....

(घ) हमें खुशी है कि हम खुलकर खेल चुके। .....

(ङ) हमें सफलता की चाह नहीं है। .....

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए–

(क) धूल – ..... (ख) आँसू – .....

(ग) जग – ..... (घ) प्यार – .....

(ङ) मुख – ..... (च) भार – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- संसार में हर एक आदमी दीवाना है। हर एक की कल्पना का जगत अलग है। आप किस प्रकार के जगत की कल्पना करते हो? कल्पना करके लिखिए अथवा 'कोलाज' के रूप में उस जगत के चित्रों को चिपकाइए।

क्रियाकलाप

- प्रेरणाप्रद पंक्तियों की कतरनों का संग्रह कीजिए। इनसे संबंधित कहानी, दोहा अथवा कविता लिखिए।

जीना भी एक कला है

ज़िंदगी में आनंद, उत्सव, खुशी कहीं से मिलती नहीं, उसे स्वयं में खोजना पड़ता है। जब तक आप स्वयं दुखी न होना चाहें, आपको कोई दुखी नहीं कर सकता। सुख का स्रोत आपके अंदर है, इसे बाहर न ढूँढ़े। आपको अपने सिवाय कोई दूसरा प्रसन्न नहीं कर सकता। आनंद एवं सुंदरता की खोज में हम सारे विश्व का भ्रमण क्यों न कर आएँ, यदि वह हमारे भीतर नहीं है तो कहीं नहीं मिल सकते। आप अपने मन को हर्ष एवं उल्लासमय बनाएँ तो हज़ारों-हज़ारों परेशानियों से बच जाएँगे और लंबा जीवन जिएँगे।

पुस्तक व धन अपने हाथ, अपने घर, अपनी जेब में ही सुरक्षित रहते हैं, दूसरे के पास जाने के बाद ये नष्ट-भ्रष्ट ही वापस मिलते हैं। यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे आपको सुख दें तो पहले आप अपने माँ-बाप को सुख दें। बच्चों को संस्कार, समय एवं शिक्षा दें। भले-बुरे का ज्ञान कराएँ। संसार में फूल और शूल दोनों हैं। काँटे और गुलाब दोनों हैं। यह आप पर निर्भर है कि आप क्या चुनते हैं। खाई में गिरते हैं या गौरीशंकर पर चढ़ते हैं।

जहाँ सुई से काम चल जाए वहाँ तलवार नहीं निकालें। जहाँ गुड़ देकर काम चले ज़हर नहीं दें। समय पर टाँका लगाने पर पैबंद नहीं लगाने पड़ते। इससे जीवन में हम निराशा, हताशा, परेशानी से बच जाएँगे। सुख की तलाश, दुख से छुटकारा ही सफल जीवन जीने की कला है। कुछ जीवन जीते हैं, कुछ जीवन ढोते हैं।

हमें सदा सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए और अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। अपने आप की त्रुटियाँ ढूँढ़ें और उनको दूर करने का प्रयास करें।

जिन्हें सुंदर वार्तालाप नहीं करना आता, प्रायः वे ही ज़्यादा बोलते हैं। जब एक शब्द से काम चले तो दो मत बोलो। शब्द एवं जिह्वा की जितनी हिफ़ाजत आप करेंगे, यह उतनी ही रक्षा आपकी करेंगे। जुबान ही काटती है, यही मारती है।

13 वेलकम एंजिल

चिंतन-मनन

यह कहानी पर्यावरण की समस्या को लेकर लिखी गई है। पर्यावरण की समस्या सिर्फ़ भारत की नहीं, अपितु पूरे विश्व की प्रमुख समस्या बन गई है। समस्या का निवारण करना हर मनुष्य का कर्तव्य है। यह नए जमाने की नई सोच की लेकर लिखी कहानी है।

सूर्य देवता उनींदी आँखें लिए आलस्य में बिस्तर पर पड़े हुए थे। तभी मिनी चिड़िया उनके कान में आकर फुसफुसाई, उसकी बात सुनते ही सूर्य देवता का आलस छूमंतर हो गया। उन्होंने तुरंत बिस्तर छोड़ दिया। झटपट तैयार हुए और अपने रथ पर सवार होकर आकाश मार्ग से पूरब दिशा की ओर चल दिए। तभी रास्ते में राजा कबूतर मिल गया। वह अपने लिए दाना चुगने जा रहा था। सूर्य देव को देख उसने पूछा, "अरे सूर्यदेव, इतनी जल्दीबाजी में कहाँ भागे जा रहे हो?" "मिनी चिड़िया ने मुझे बताया कि नन्हे एंजिल का जन्म हुआ है। बस, उसी का स्वागत करने जा रहा हूँ।" "अरे वाह, नन्हे एंजिल को देखने मैं भी चलूँगा।" राजा कबूतर दाना चुगने की बात भूलकर सूर्यदेव के रथ पर सवार हो मिनी चिड़िया के बगल में जा बैठा। इसी तरह पिंकी गौरैया, हरिमन तोता, चिनी मैना, कालू कौवा, सोनू मोर और

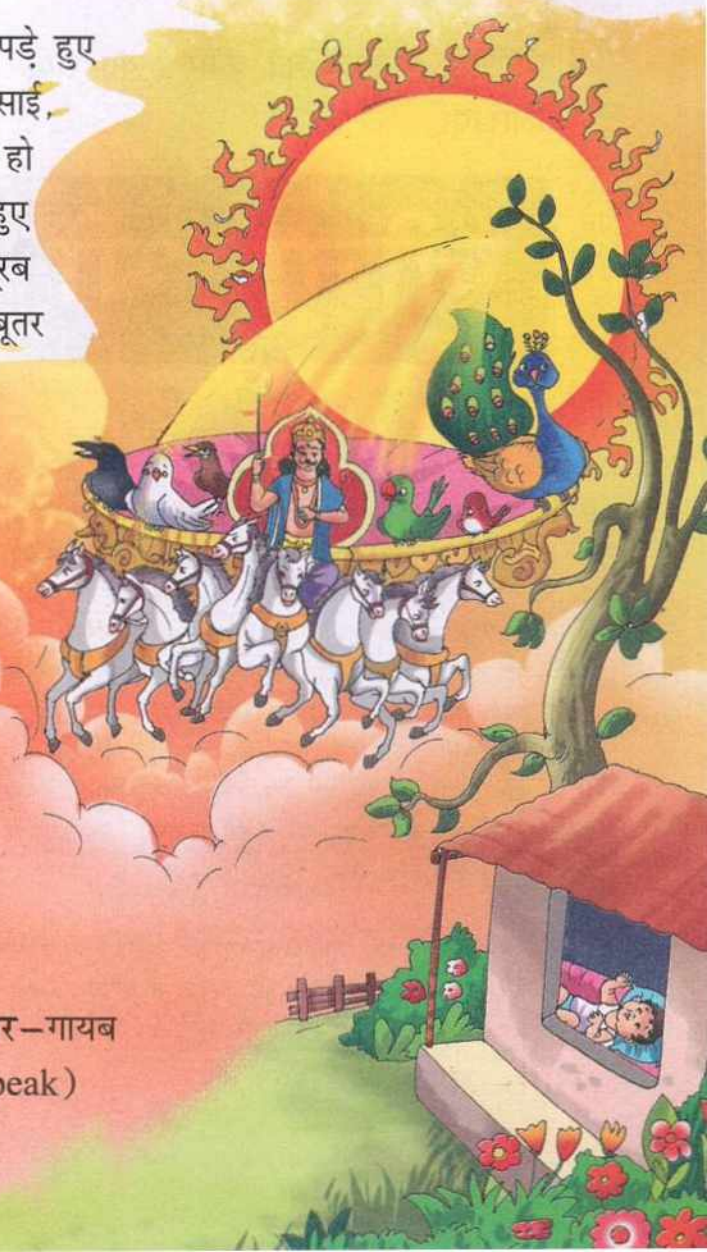

शब्दार्थ–**उनींदी**–नींद से भरी (slumberous), **छूमंतर**–गायब होना (disappear), **दाना चुगना**–दाने खाना (to peak)

बहुत से पक्षी सूर्यदेव के रथ पर सवार होकर नन्हे एंजिल का स्वागत करने उसके घर जा पहुँचे। सूर्यदेव के आगमन से वातावरण खिल उठा था। अब तक धुंध में कुम्हला गए पेड़-पौधे और फूलों में नई जान पड़ गई थी। नन्हे एंजिल ने जब अपनी छोटी-छोटी आँखें खोलीं तो उसने देखा, सूरज की किरणों से उसका कमरा जगमगा रहा था। उसके पलंग के सामने एक बड़ी-सी खिड़की थी जिसमें से सूर्य देवता उसे देखकर मुसकरा रहे थे। रंग-बिरंगे फूल और उन पर मंडराती तितलियों को देख नन्हे एंजिल का मन खुश हो गया।

मिनी चिड़िया, राजा कबूतर, पिंकी गौरैया, हरिमन तोता, चिनी मैना आदि पक्षी खिड़की पर आ बैठे और बोले, "नन्हे एंजिल, तुम्हारा स्वागत है।" नन्हा एंजिल इनसानों की तरह अभी बोल नहीं सकता था, किंतु पशु-पक्षियों की, पेड़-पौधों की बोली समझ सकता था, साथ ही उन्हें अपनी बात समझा भी सकता था। "कितनी सुंदर, रंग-बिरंगी दुनिया है यह", एंजिल ने पक्षियों से अपने मन की बात कही। मिनी चिड़िया बोली, "नन्हे एंजिल क्या तुम हमारे दोस्त बनोगे?" एंजिल ने मुसकराकर अपनी सहमति दी। अब रोज़ सुबह सारे पक्षी एंजिल की खिड़की पर आकर चहचहाते। कोयल अपनी मीठी आवाज़ में एंजिल को गाना सुनाती, सोनू मोर अपने पंख फैलाकर नाचता। राजा कबूतर गुटरगूँ करता तो नन्हा एंजिल हँस पड़ता। कौवे की काँव-काँव में भी अपना ही रस था। एंजिल उन्हें देख किलकारियाँ मारता और झटपट अपनी बोतल का दूध खत्म कर देता। एक दिन सारे पक्षी एंजिल की खिड़की पर आकर बैठे किंतु राजा कबूतर नहीं आया।

एंजिल ने मिनी चिड़िया से पूछा, "आज राजा कबूतर क्यों नहीं आया?" मिनी बोली, "वह नहीं आएगा आज वह बहुत उदास है।" "क्यों?" एंजिल ने पूछा। मिनी दुख से बोली, "तुम्हारे बगल वाले पड़ोसी ने उस पेड़ को काट दिया है जिस पर राजा कबूतर का घोंसला था। उस घोंसले में राजा के अंडे भी थे। जन्म लेने से पहले ही उसके बच्चे मर गए।" "ओह!", एंजिल के मुख से निकला। मिनी चिड़िया बोली, "एंजिल मैं तुम्हें क्या बताऊँ, अभी तुम नए-नए इस दुनिया में आए हो। धीरे-धीरे तुम्हें सब पता चलेगा। इनसान अपने स्वार्थवश इस खूबसूरत दुनिया को नष्ट कर रहा है। पेड़ कट रहे हैं जिससे हमारी प्रजातियाँ समाप्त हो रही है। जंगलों को काटकर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई जा रही हैं, जिससे वातावरण में प्रदूषण फैल रहा है। समुद्र का जल स्तर बढ़ गया है। इस धरती का तापमान दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते प्रकृति अपना स्वरूप बदल रही है।" मिनी चिड़िया की बातें सुनकर एंजिल को बहुत दुख हुआ। धीरे-धीरे आस-पास के कई लोगों ने अपने बगीचे के पेड़ कटवाकर पक्का फर्श बनवा लिया। इससे पक्षियों का आना कम होता गया। एंजिल अब बहुत उदास रहने लगा था। न तो वह पहले ही तरह किलकारियाँ मारता था, न ही हँसता मुसकराता था। एंजिल की मम्मी को समझ नहीं आया, आखिर बात क्या है? उन्होंने डॉक्टर से उसका चेकअप कराया। डॉक्टर ने उसे टॉनिक पीने को दिए किंतु, कोई लाभ नहीं हुआ।

शब्दार्थ–**मुसकराना**–स्मित हास्य (smile), **प्रजातियाँ**–पेड़ों की जातियाँ (spices)

एक दिन मम्मी-पापा नन्हे एंजिल को लेकर भरतपुर बर्ड सैंचुरी घूमने गए। वहाँ कितनी की तरह के रंग-बिरंगे पक्षियों को देख एंजिल के चेहरे पर मुसकराहट आ गई। अब मम्मी-पापा को अपने बेटे की उदासी का कारण समझ में आ गया था। उनका नन्हा बेटा **प्रकृति** से प्यार करता था और पक्षियों की निकटता में प्रसन्न रहता था। पापा-मम्मी ने आपस में विचार-**विमर्श** किया। उन्होंने सोचा, यदि हर इनसान अपनी ओर से प्रयास करे तो इस ग्लोबल वार्मिंग को रोका जा सकता है। बस फिर क्या था, पापा-मम्मी ने मन ही मन ठान लिया कि वे प्रकृति को बचाने की मुहिम शुरू करेंगे। फेसबुक और वाट्सअप के जरिए अपने मित्रों से बात करेंगे और लोगों में जागरूकता पैदा करेंगे। अगले दिन पापा ढेर सारे पौधे खरीदकर लाए। उन्होंने न सिर्फ़ अपने घर के आस-पास पौधे लगाए, बल्कि अपनी सोसायटी में भी यहाँ-वहाँ पौधे लगाए। उनकी देखादेखी उनके मित्र और दूसरे लोग भी उनके साथ इस काम में जुड़ने लगे। धीरे-धीरे उनके शहर की काया ही पलट गई। पापा ने सोचा, सिर्फ़ अपने शहर में ही नहीं पूरे देश में वह इस मुहिम को चलाएँगे। अब चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी। पक्षियों के घोंसले बनने शुरू हो चुके थे और नन्हे एंजिल के आस-पास पक्षियों का कलरव और उनका आवगमन पुनः शुरू हो चुका था। नन्हे एंजिल के चेहरे पर फिर से मुसकान लौट आई थी।

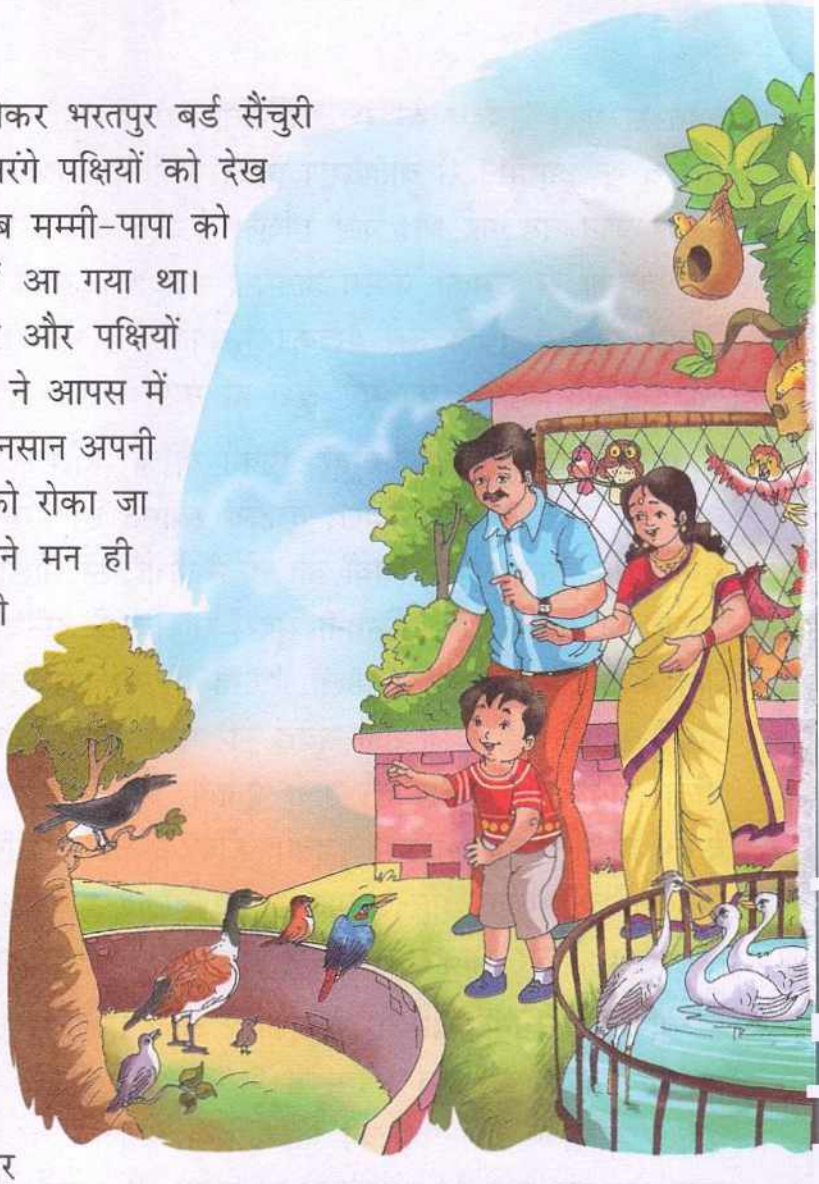

–रेनू मंडल

शब्दार्थ–प्रकृति–स्वभाव, निसर्ग (nature), **विमर्श**–चर्चा करना, आलोचना (to discuss)

लेखिका परिचय

श्रीमती रेनू मंडल ने अर्थशास्त्र में शिक्षा प्राप्त की है। लेकिन इनकी रुचि हिंदी साहित्य में रही है। इनकी रचनाएँ जीवन से संबंधित हैं। हिंदी की प्रसिद्ध मासिक पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। जैसे–सरिता, मुक्ता, गृहशोभा, बच्चों की पत्रिका नंदन, चंपक आदि। ये विभिन्न संस्थानों द्वारा पुरस्कृत हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

• कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–

(क) किसकी बात सुनकर सूर्य देवता का आलस्य छूमंतर हुआ?

(ख) नन्हे एंजिल का स्वागत किस-किसने किया?

(ग) राजा कबूतर क्यों नहीं आया?

(घ) इनसान स्वार्थ-वश क्या कर रहा है?

(ङ) एंजिल क्यों उदास रहता?

लिखित

1. संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) "अरे सूर्यदेव, इतनी जल्दबाजी में कहाँ भागे जा रहे हो?"

(ख) "नन्हे एंजिल, तुम्हारा स्वागत है।"

(ग) "एंजिल मैं तुम्हें क्या बताऊँ, अभी तुम नए-नए इस दुनिया में आए हो, धीरे-धीरे तुम्हें सब पता चलेगा।"

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) सूरज की किरणों से उसका कमरा ..... रहा था।

(ख) नन्हा एंजिल ..... नहीं सकता था।

(ग) कौवे की ..... में भी अपना अलग रस था।

(घ) एंजिल के ..... पर मुसकराहट आ गई।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वेलकम एंजिल कहानी किस समस्या पर आधारित है?

(ख) कबूतर की उदासी का कारण क्या था?

(ग) एंजिल के मम्मी-पापा ने क्या किया? उनकी सोच क्या थी?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) अगर हर कोई एंजिल की तरह सोचेगा तो क्या होगा?

(ख) 'नन्हे एंजिल के चेहरे पर फिर से मुसकान लौट आई थी', कथन किस ओर संकेत कर रहा है?

भाषा ज्ञान

1. अ + सहमति = असहमति प्र + कृति = प्रकृति

उपर्युक्त शब्दों को ध्यान से देखिए। शब्दों के आगे 'अ' तथा 'प्र' लगकर नए शब्द बने हैं, इन्हें शब्दांश कहते हैं। वे शब्दांश जो शब्द के आगे लगकर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूलशब्द अलग-अलग करके लिखिए–

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
(क) उपजाति =	..... +	.....	(ख) प्रजाति =	..... +	.....
(ग) प्रशाखा =	..... +	.....	(घ) सवार =	..... +	.....
(ङ) आगमन =	..... +	.....			

2. जिस प्रकार उपसर्ग शब्द के आगे जुड़ते हैं, उसी प्रकार कुछ शब्दांश शब्दों के पीछे लगते हैं। जो शब्दांश शब्दों के पीछे लगकर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रारंभ + इक = प्रारंभिक आलस + ई = आलसी

निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूलशब्द अलग-अलग करके लिखिए–

शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय	शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
(क) दुखी =	..... +	.....	(ख) मुसकराहट =	..... +	.....
(ग) निकटता =	..... +	.....	(घ) शहरी =	..... +	.....

3. निम्नलिखित वाक्यों में अशुद्ध पदों को रेखांकित कीजिए–

(क) मुख में दो नेत्र होते हैं।

(ख) चारों बच्चा खेल रहा था।

(ग) सोनू मोर पंख फैलाकर नाचती।

(घ) रानी कबूतर नहीं आया।

(ङ) बड़ी-बड़ी इमारतें बनाया जा रहा है।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. यदि आपको किसी जीवदया संघ का नेता बनाया गया तो आप क्या करेंगे? लिखिए।
2. यदि आप कभी रंग-बिरंगे पक्षियों के बीच घूमने गए तो आपको कैसा अनुभव होगा?
3. कल्पना कीजिए कि आपके घर के आसपास बहुत सारे पेड़-पौधे हैं। उन पौधों से आपको कौन-कौन से लाभ होंगे?

क्रियाकलाप

- नीचे दिए गए चित्र को देखकर आपके मन में उठने वाले भावों को कविता के रूप में लिखिए–

'जीवदया' पर सभी धर्मों की नींव खड़ी है। 'जीवदया' सबसे श्रेष्ठ है।

अतिरिक्त पठन

कहाँ है वह गाँव?

कहाँ है वह गाँव?
कहाँ है वह ठाँव?
जहाँ जीवन बसता था,
हरियाली लहराती थी।
खिलखिलाते फूलों पर
ओस की बूँदें मुसकाती थीं।
कहाँ है वह आँगन?
जहाँ रंगवल्ली सजती थी।
साँझ के समय
तुलसी की वेदी पर,
दीपक की ज्योति,
जगमगाते हँसती थी।
कहाँ है वह ममता का आँचल?
जिसकी ओट में बच्चे मुसकाते थे।
दादा-दादी, नाना-नानी के पिटारे से,
परियों के पंख उनसे जुड़ जाते थे।
कहाँ है वह बारिश में भीगना?
कागज़ की कश्ती को पानी में छोड़ना।
लौटा दो वह जीवन,
लौटा दो वह आँचल,
लौटा दो अपनापन,
वरना... जीवन जी नहीं पाएँगे हम...
आज के यंत्र जीवन में...
'यंत्र मानव' बनकर रह जाएँगे हम।

–डॉ० जयश्री अय्यंगार

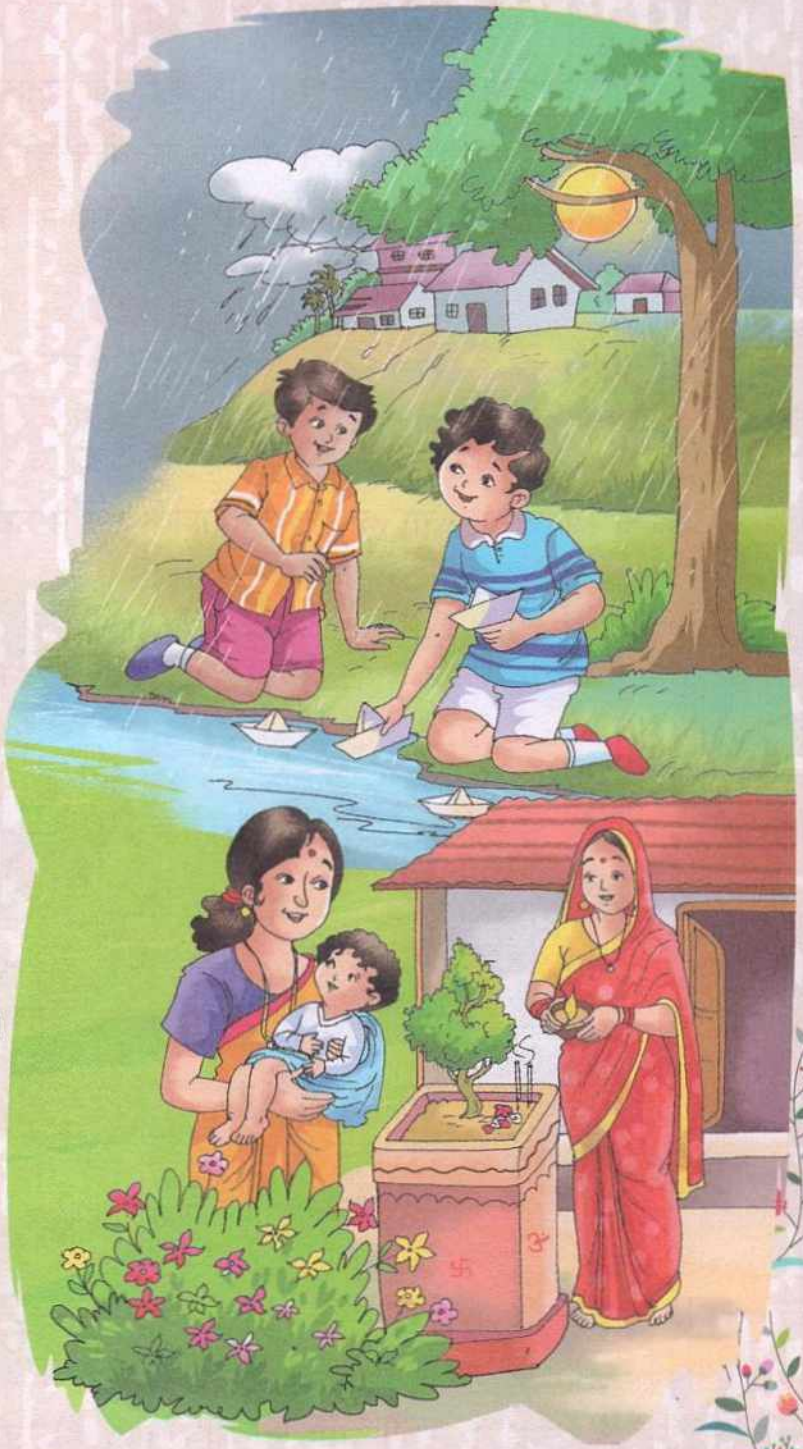

14 घीसा

चिंतन-मनन

प्रस्तुत रेखाचित्र 'घीसा' के इर्द-गिर्द घूमता है। घीसा ही इसका प्रमुख पात्र है। घीसा एक ऐसा बालक था, जो लेखिका द्वारा पढ़ाए जाने वाले गरीब बच्चों में सबसे होशियार था। वह लेखिका द्वारा दिए गए हर आदेश का पालन करता है। वह अपना कुरता देकर लेखिका के लिए भेंट में तरबूज़ लेकर आता है। उसकी अबोधता, भोलेपन तथा निस्स्वार्थ-भावना से लेखिका बहुत हैरान होती है। अंत में घीसा भगवान को प्यारा हो जाता है। लेखिका को वैसा शिष्य ढूँढ़ने पर भी फिर कभी न मिला।

गंगा पार झूँसी के खंडहर और उसके आस-पास के गाँवों के प्रति मेरा जैसा अकारण आकर्षण रहा है, उसे देखकर भी संभवत: लोग जन्म-जन्मांतर के संबंध पर व्यंग्य करने लगते हैं। है भी तो आश्चर्य की बात! जिस अवकाश के समय को लोग इष्ट-मित्रों से मिलने, उत्सवों में सम्मिलित होने तथा अन्य आमोद-प्रमोद के लिए सुरक्षित रखते हैं, उसी को मैं इस खंडहर और उसके क्षत-विक्षत चरणों पर पछाड़ खाती हुई भागीरथी के तट पर काट ही नहीं, सुख से काट देती हूँ।

ग्वालों के बालक जो गाय-भैंसों को बहकते देखकर लकुटी लेकर दौड़ पड़ते, गड़रियों के बच्चे जो अपने झुंड की एक भी बकरी या भेड़ को उस ओर बढ़ते

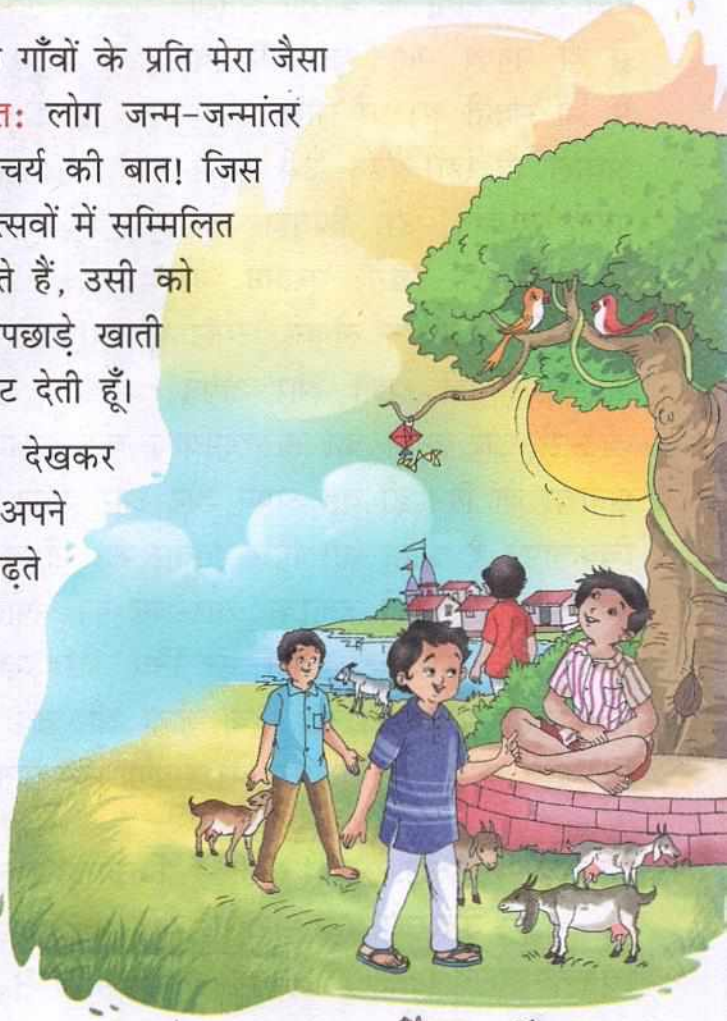

शब्दार्थ–**खंडहर**–टूटे-फूटे मकान का बचा हुआ भाग (remains), **अकारण**–बिना कारण (without reason), **आकर्षण**–खिंचाव (attraction), **संभवत:**–शायद, मुमकिन (possibly), **अवकाश**–छुट्टी (holiday), **इष्ट-मित्र**–प्रिय दोस्त (close friend), **आमोद-प्रमोद**–भोग-विलास, (geity), **क्षत-विक्षत**–घायल, लहूलुहान (wounded), **लकुटी**–लाठी (stick)

देखकर कान पकड़कर खींच ले जाते और व्यर्थ ही दिनभर गिल्ली-डंडा खेलने वाले निठल्ले लड़के भी बीच-बीच में नज़र बचाकर मेरा रुख देखना नहीं भूलते, कह नहीं सकती, कब और कैसे मुझे उन बालकों को कुछ सिखाने का ध्यान आया... मेरे विद्यार्थी पीपल के पेड़ की घनी छाया में मेरे चारों ओर एकत्र हो गए और वे जिज्ञासु कैसे थे सो क्या बताऊँ! कुछ कानों में बालियाँ और हाथों में कड़े पहने, धुले कुरते और ऊँची धोती में, कुछ अपने बड़े भाई का पाँव तक लंबा कुरता पहने खेत में डराने के लिए खड़े किए हुए नकली आदमी का स्मरण दिलाते थे, कुछ उभरी पसलियों, बड़े पेट और टेढ़ी दुर्बल टाँगों के कारण अनुमान से ही मनुष्य संतान की परिभाषा में आ सकते थे; पर घीसा उनमें अकेला ही रहा। पढ़ने, उसे सबसे पहले समझने, उसे व्यवहार के समय स्मरण रखने, पुस्तक में एक भी धब्बा न लगाने, स्लेट को चमचमाती रखने और अपने छोटे-से-छोटे काम का उत्तरदायित्व बड़ी गंभीरता से निभाने में उसके समान कोई चतुर न था। शनीचर के दिन ही वह अपने छोटे और दुर्बल हाथों से पीपल की छाया को गोबर-मिट्टी से पीला चिकनापन दे आता था। फिर इतवार को माँ के मज़दूरी पर जाते ही पेड़ की नीची डाल पर रखी हुई मेरी शीतलपाटी उतारकर बार-बार झाड़-पोंछकर बिछाई जाती, कभी काम न आने वाली सूखी स्याही लगी काँच की दवात, टूटे निब और उखड़े हुए रंगवाले भूरे-हरे कलम को पेड़ के कोटर से निकालकर यथास्थान रख दिया जाता और तब इस विचित्र पाठशाला का विचित्र मंत्री और निराला विद्यार्थी कुछ आगे बढ़कर मेरे सप्रणाम स्वागत के लिए प्रस्तुत हो जाते।

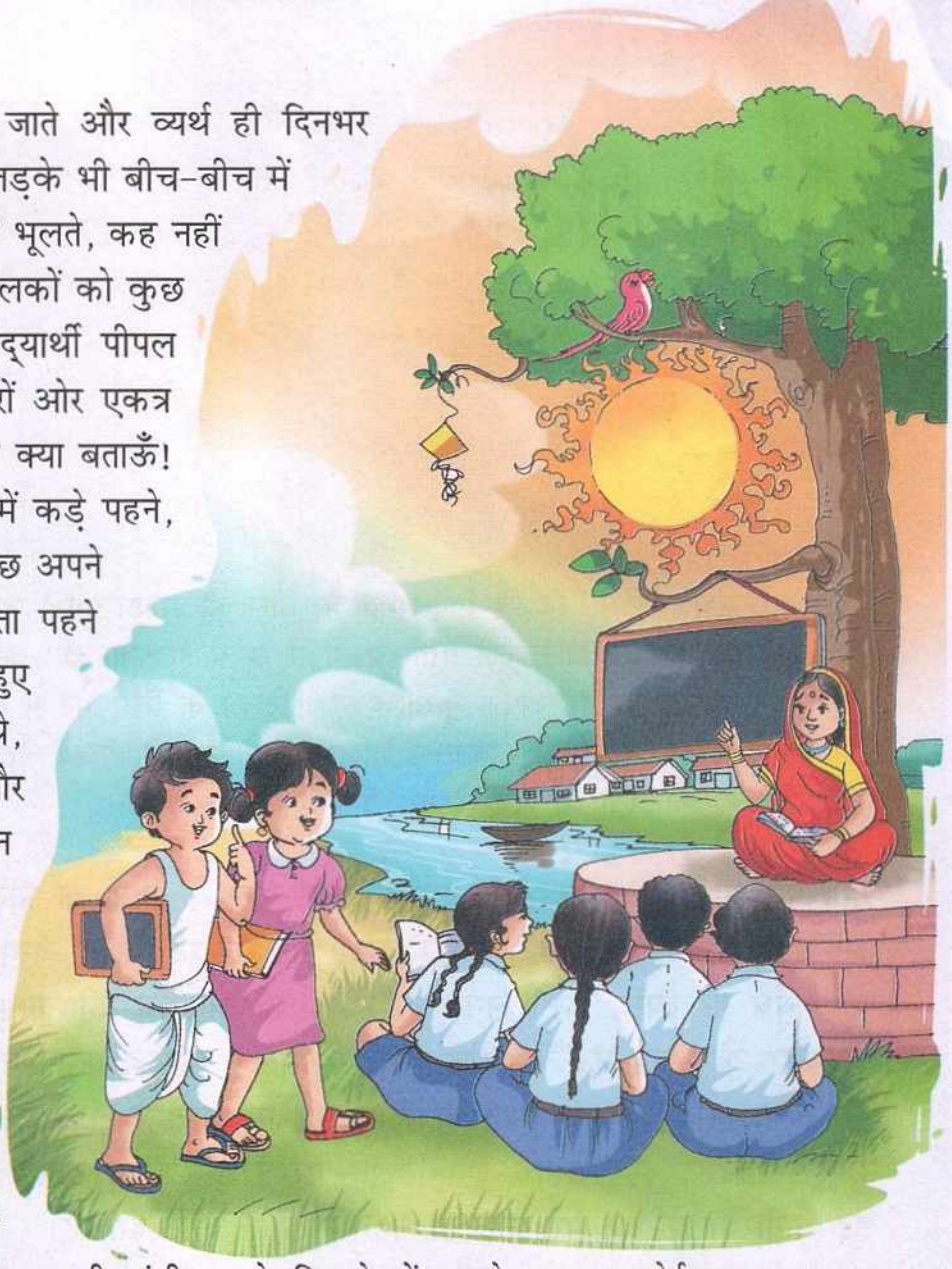

शब्दार्थ–**निठल्ले**–बेकार (idle), **जिज्ञासु**–जानने की इच्छा रखनेवाला (curious), **दुर्बल**–कमज़ोर (weak), **उत्तरदायित्व**–ज़िम्मेदारी (responsibility), **शीतलपाटी**–एक प्रकार की पतली और चिकनी चटाई (mat), **कोटर**–पेड़ के तने में खुदा हुआ गड्ढा (hollow of a tree)

मुझे आज भी वह दिन नहीं भूलता, जब मैंने बिना कपड़ों का प्रबंध किए हुए ही उन बेचारों को सफ़ाई का महत्व समझाते-समझाते थका डालने की मूर्खता की। दूसरे इतवार को सब जैसे-के-तैसे ही सामने थे। केवल कुछ गंगा जी में मुँह इस तरह धो आए थे कि मैल अनेक रेखाओं में विभक्त हो गया था। कुछ के हाथ-पाँव ऐसे घिसे थे कि शेष मलिन शरीर के साथ वे अलग जोड़े हुए-से लगते थे और कुछ मैले फटे कुरते घर ही छोड़कर ऐसे अस्थि-पंजरमय रूप में आ उपस्थित हुए थे; पर घीसा गायब था। पता चला कि कल रात को माँ को मज़दूरी के पैसे मिले और आज सवेरे वह सब काम छोड़कर पहले साबुन लेने गई। अभी लौटी है, अत: घीसा कपड़े धो रहा है क्योंकि गुरु साहब ने कहा था कि नहा-धोकर साफ़ कपड़े पहनकर आना और अभागे के पास कपड़े ही क्या थे! जब घीसा नहाकर गीला अँगोछा लपेटे और आधा भीगा कुरता पहने अपराधी के समान मेरे सामने आ खड़ा हुआ, तब आँखें ही नहीं, मेरा रोम-रोम गीला हो गया। उस समय नहीं समझ में आया कि द्रोणाचार्य ने अपने भील शिष्य से अँगूठा कैसे कटवा लिया था।

होली के पहले की एक घटना तो मेरी स्मृति में ऐसे गहरे रंगों से अंकित है, जिसका धुल सकना सहज नहीं। उन दिनों हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य धीरे-धीरे बढ़ रहा था। घीसा दो सप्ताह से ज्वर में पड़ा था। दो-चार दिन उसकी माँ स्वयं बैठी रही, फिर एक अंधी बुढ़िया को बैठाकर काम पर जाने लगी। इतवार की साँझ को मैं बच्चों को विदा दे, घीसा को देखने चली, परंतु पीपल से पचास पग दूर पहुँचते-पहुँचते, उसी को डगमगाते पैरों से गिरते-पड़ते अपनी ओर आते देख मेरा मन उद्विग्न हो उठा। वह प्यास से जाग गया था। इतने में मुल्लू के काका ने नदी पार से लौटकर दरवाज़े से ही अंधी बुढ़िया को बताया कि शहर में दंगा हो रहा है, तब घीसा को गुरु साहब का ध्यान आया। मुल्लू के काका के हटते ही वह ऐसे हौले-हौले उठा कि बुढ़िया को पता ही न चला और कभी दीवार, कभी पेड़ का सहारा लेता-लेता इस ओर भागा। वह सोचकर आया था कि अब वह गुरु साहब को किसी तरह भी न जाने देगा।

जब मुझे उन लोगों को छोड़ जाना था, तब मेरा मन बहुत-ही अस्थिर हो उठा। कुछ बालक उदास थे और कुछ पढ़ने की छुट्टी से प्रसन्न। कुछ जानना चाहते थे कि छुट्टियों के दिन चूने की टिपकियाँ रखकर गिने जाएँ या कोयले की लकीरें खींचकर। कुछ के सामने बरसात में चूते हुए घर में आठ पृष्ठ की पुस्तक बचा रखने का प्रश्न था और कुछ कागज़ों पर चूहों के आक्रमण की ही समस्या का समाधान चाहते थे। तब मैंने बहुत दूर एक छोटा-सा काला धब्बा आगे बढ़ते देखा। वह कुछ और नहीं बल्कि घीसा एक बड़ा तरबूज़ दोनों हाथों में सँभाले आ रहा था, जिसमें बीच के

शब्दार्थ–**विभक्त**–बँटा हुआ, विभाजित (divided in pieces), **मलिन**–मैला (dirty), **अस्थि-पंजरमय**–हड्डियों के ढाँचे के समान, कंकाल के समान (skeleton), **स्मृति**–याददाश्त (memory), **वैमनस्य**–मनमुटाव, दुश्मनी (rivalry), **ज्वर**–बुखार (fever), **उद्विग्न**–आकुल, खिन्न (irritate), **हौले-हौले**–धीरे-धीरे (slow)

कुछ कटे भाग में से भीतर की ईषत-लक्ष्य ललाई चारों ओर के गहरे हरेपन में कुछ बंद गुलाबी फूल जैसी जान पड़ती थी।

घीसा के पास न पैसा था, न खेत–तब क्या वह इसे चुरा लाया है? घीसा गुरु साहब से झूठ बोलना भगवान जी से झूठ बोलना समझता है। वह तरबूज़ कई दिन पहले देख आया था। माँ के लौटने में जाने क्यों देर हो गई, तब उसे अकेले ही खेत पर जाना पड़ा। वहाँ खेतवाले का लड़का था, जिसकी नज़र उसके नए कुरते पर बहुत दिन से थी। उसने कहा–"पैसा नहीं है, तो कुरता दे जाओ।" और आज घीसा तरबूज़ न लेता, तो कल उसका क्या करता। इसलिए कुरता दे आया, पर गुरु साहब को चिंता करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि गरमी में वह कुरता पहनता ही नहीं और आने-जाने के लिए पुराना ठीक रहेगा। तरबूज़ सफ़ेद न हो, इसलिए कटवाना पड़ा–मीठा है या नहीं, यह देखने के लिए उँगली से कुछ निकाल भी लेना पड़ा।

गुरु साहब न लें, तो घीसा रात-भर रोएगा। ले जाएँ तो वह रोज़ नहा-धोकर पेड़ के नीचे पढ़ा हुआ पाठ दोहराता रहेगा और छुट्टी के बाद पूरी किताब पट्टी पर लिखकर दिखा सकेगा।

उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक के सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।

जब फिर उस ओर जाने का मुझे अवकाश मिल सका, तब पता चला कि घीसा को उसके भगवान जी ने सदा के लिए पढ़ने से अवकाश दे दिया था। आज वह कहानी दोहराने की मुझमें शक्ति नहीं है। अभी मेरे लिए इतना ही पर्याप्त है कि मैं अन्य मलिन मुखों में उसकी छाया ढूँढ़ती रहूँ।

–महादेवी वर्मा

शब्दार्थ–ईषत–थोड़ा, अल्प, आंशिक रूप में (small), **आदान-प्रदान**–लेन-देन (give-take)

लेखिका परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में सन् 1907 में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा प्रयाग में हुई थी। वे प्रयाग के महिला विद्यापीठ में प्राचार्या के पद पर भी कार्यरत रहीं। इस पद पर कार्य करते हुए उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफ़ी प्रयत्न किए। सन् 1987 में इनका निधन हो गया।

महादेवी जी छायावाद की प्रमुख आधार स्तंभों में से एक थीं। पद्य एवं गद्य दोनों विधाओं पर उन्हें समानाधिकार था। इनकी साहित्य-साधना में एक ओर स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा है, तो दूसरी ओर समाज में नारी की वास्तविक स्थिति का चित्रण है। इन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' तथा 'पद्म विभूषण' से अलंकृत किया गया। *नीरजा, नीहार, दीपशिखा, यामा, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ* आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनकी भाषा-शैली सरल, स्पष्ट एवं चित्रात्मक है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) सप्ताह के किस दिन घीसा पीपल की छाया को गोबर-मिट्टी से लीपकर चिकनाकर आता था?

(ख) लेखिका ने बिना सोचे-समझे किसका महत्व समझाने की मूर्खता की थी?

(ग) मज़दूरी के पैसे मिलने पर माँ सब काम छोड़ क्या खरीदने गई?

(घ) घीसा ने लेखिका को क्या उपहार दिया?

(ङ) घीसा का गाँव कहाँ बसा हुआ था?

(च) लेखिका की पाठशाला कहाँ लगती थी?

(छ) 'घीसा' पाठ की विधा कौन-सी है?

लिखित

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

होली के पहले की एक घटना तो मेरी स्मृति में ऐसे गहरे रंगों से अंकित है, जिसका धुल सकना सहज नहीं। उन दिनों हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य धीरे-धीरे बढ़ रहा था। घीसा दो सप्ताह से ज्वर में पड़ा था। दो-चार दिन उसकी माँ स्वयं बैठी रही। फिर एक अंधी बुढ़िया को बैठाकर काम पर जाने लगी। इतवार की साँझ को मैं बच्चों को विदा दे, घीसा को देखने चली, परंतु पीपल से पचास पग दूर पहुँचते-पहुँचते, उसी को डगमगाते पैरों से गिरते-पड़ते अपनी ओर आते देख मेरा मन उद्विग्न हो उठा। वह प्यास से जाग गया था। इतने में मुल्लू के काका ने नदी पार से लौटकर दरवाज़े से ही अंधी बुढ़िया को बताया कि शहर में दंगा हो रहा है, तब घीसा को गुरु साहब का ध्यान आया। मुल्लू के काका के हटते ही वह ऐसे हौले-हौले उठा कि बुढ़िया को पता ही न चला और कभी दीवार, कभी पेड़ का सहारा लेता-लेता इस ओर भागा। वह सोचकर आया था कि अब वह गुरु साहब को किसी तरह भी न जाने देगा।

(क) हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य का क्या अर्थ है?

(ख) घीसा कितने सप्ताह से ज्वर में पड़ा था?

(ग) शहर में दंगे की खबर किसने दी?

(घ) घीसा गुरु जी के पास क्यों जाने लगा?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) घीसा अन्य बच्चों से कैसे भिन्न था?

(ख) गुरु जी के वापस जाने पर घीसा ने उन्हें गुरुदक्षिणा में क्या दिया? यह दक्षिणा सबसे अनूठी क्यों थी?

(ग) 'होली के पहले की...सहज नहीं।' इस अधूरे वाक्य को पूरा कीजिए और लिखकर बताइए कि लेखिका ने ऐसा क्यों लिखा होगा?

(घ) घीसा को गीला अँगोछा लपेटे और आधा भीगा कुरता पहने देख लेखिका को किसकी याद आई?

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–**

(क) गुरु जी ने सभी बच्चों को सफ़ाई का महत्व समझाया, उसका असर अलग-अलग रूप में घीसा और अन्य बच्चों पर कैसे पड़ा? लिखिए।

(ख) घीसा ने तरबूज़ का इंतज़ाम कैसे किया?

भाषा ज्ञान

1. आप जानते हैं कि किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

पाठ से लिए गए निम्नलिखित गद्यांश से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए–

गंगा पार झूँसी के खंडहर और उसके आस-पास के गाँवों के प्रति मेरा जैसा अकारण आकर्षण रहा है, उसे देखकर भी संभवत: लोग जन्म-जन्मांतर के संबंध पर व्यंग्य करने लगते हैं। है भी तो आश्चर्य की बात! जिस अवकाश के समय को लोग इष्ट-मित्रों से मिलने, उत्सवों में सम्मिलित होने तथा अन्य आमोद-प्रमोद के लिए सुरक्षित रखते हैं, उसी को मैं इस खंडहर और उसके क्षत-विक्षत चरणों पर पछाड़े खाती हुई भागीरथी के तट पर काट ही नहीं, सुख से काट देती हूँ।

....

....

2. पाठ में 'गिल्ली' तथा 'ज्वर' जैसे अनेक द्वित्व व्यंजन वाले तथा संयुक्ताक्षर वाले शब्दों का प्रयोग हुआ है।

पाठ से ऐसे कुछ शब्द छाँटकर लिखिए–

द्वित्व व्यंजन वाले शब्द– ....

....

संयुक्ताक्षर वाले शब्द– ....

....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. घीसा ने लेखिका के मन को छू लिया था। इसी संदर्भ में वर्तमान समय में गुरु-शिष्य संबंध पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
2. आज के युग में गुरुदक्षिणा की अपेक्षा करना कहाँ तक सार्थक है? इस विषय पर आप अपने विचार लिखिए।
3. गुरु के लिए सबसे श्रेष्ठ 'दक्षिणा' क्या हो सकती है? आप अपने गुरु को गुरुदक्षिणा में क्या दोगे? इस संबंध में कुछ संकेत बिंदु लिखिए।

क्रियाकलाप

1. महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'मेरा परिवार' तथा 'अतीत के चलचित्र' पुस्तकालय से लेकर पढ़ें। उन पढ़े हुए रेखाचित्र तथा संस्मरणों पर विचार-विमर्श कीजिए।
2. यह सोना कहानी का चित्र है। इस कहानी को संक्षिप्त करके लिखिए।

15 भक्ति धारा

चिंतन-मनन

भक्ति भगवान को अपने पास बुलाने का एक माध्यम है। सूरदास, रसखान, युगलप्रिया ने अपनी भक्ति में भगवान को अपना मित्र, सखा, प्रियतम आदि माना है। यहाँ तीनों द्वारा रचित भक्ति-रस से परिपूर्ण पद दिए गए हैं, जो पाठकों को भक्ति-धारा में पूर्ण रूप से सराबोर करते हैं।

सबसे ऊँची प्रेम सगाई।
दुर्योधन को मेवा त्यागो साग विदुर घर पाई।।
जूठे फल शबरी के खाए बहुविधि प्रेम लगाई।
प्रेम के बस नृप सेवा कीन्हीं आप बने हरि नाई।।
राजसुयज्ञ युधिष्ठिर कीन्हों तामें जूठ उठाई।
प्रेम के बस अर्जुन-रथ हाक्यो भूल गए ठकुराई।।
ऐसी प्रीत बढ़ी वृंदावन गोपिन नाच नचाई।
सूर क्रूर इस लायक नाहीं कहँ लगि करौ बड़ाई।।

(सूरदास)

धूरि-भरि अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत-खात फिरै अँगना, पग पैजनी बाजति, पीरी कछोटी।।
वा छवि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सो लै गयो माखन रोटी।।

(रसखान)

शब्दार्थ–**मेवा**–सूखा मेवा (बादाम, काजू आदि) (dry fruits), **तामें**–जिसमें (within), **हाक्यो**–हाँकना (drive), **धूरि**–धूल (dust), **सोभित**–शोभायमान (beautiful), **पग**–पाँव (foot), **पैजनी**–पाजेब (anklet), **पीरी**–पीली (yellow), **कछोटी**–धोती (dhoti), **बिलोकत**–देखना (to see), **वारत**–न्योछावर करना (sacrifice), **काम**–कामदेव (cupid), **काग**–कौआ (crow)

स्याम स्वरूप बस्यो हिय में, फिर और नहिं जग भावै री।
कहा कहूँ को माने मेरी, सिर बीती सो जानै री।।
रसना-रसना सब रस फीके, दृगनि न और रंग लागै री।
स्रवनानि दूजी कथा न भावै, सुरत सदा प्रिय को जागै री।।
बढ़ऽयो बिरत अनुराग अनोखो, लगन लागी मन नहीं लागै री।
जुगल प्रिय के रोम-रोम तें, स्याम ध्यान नहिं पल त्यागै री।।
(युगलप्रिया)

शब्दार्थ–**बस्यो**–बसना (to settle), **हिय**–हृदय, मन (heart), **दृगनि**–नेत्रों, आँखों में (in eyes), **स्रवनानि**–कानों को (to ears), **दूजी**–दूसरी (second), **जुगल प्रिय**–कवि का नाम (poets name)

कवि परिचय

सूरदास–सूरदास जी का जन्म 1478 ई० में दिल्ली के निकट ब्रज की ओर स्थित 'सीही' नामक गाँव में सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके जन्मांध होने या बाद में अंधत्व प्राप्त करने के विषय में अनेक किंवदंतियाँ हैं। सूरदास की रचनाओं में सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी, सूरपचीसी, सूररामायण, सूरसाठी और राधारसकेलि प्रकाशित हो चुकी हैं। वस्तुतः सूरसागर और साहित्यलहरी ही उनकी श्रेष्ठ कृतियाँ हैं। सूरदास की रचना ब्रजभाषा में है। अवधी और पूरबी हिंदी के शब्द भी उनकी भाषा में हैं। उन्होंने राधा-कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन सूरसागर में किया है। साहित्यलहरी सूरदास के सुप्रसिद्ध दृष्टकूट-पदों का संग्रह है। इनकी मृत्यु 1583 ई० में हुई थी।

रसखान–रसखान का वास्तविक नाम सैयद इब्राहिम था। इनका जन्म पिहानी के एक संपन्न पठान परिवार में सन् 1548 में हुआ था। बचपन में ही ये दिल्ली चले गए। वहाँ रहते हुए सन् 1556-57 में पड़े भीषण अकाल और गदर को देखकर वे ब्रज चले गए। वहाँ ये बहुत दिनों तक रामचरित मानस का पाठ सुनते रहे। संभवतः रामचरित मानस के प्रभाव ने इन्हें काव्य-रचना की ओर प्रवृत्त किया। इन्होंने कृष्ण को आधार बनाकर ब्रज में रहते हुए कृष्ण-भक्ति के पद लिखे। रसखान के कवित्त-सवैये अपने माधुर्य, पद-योजना और छंद-भंगिमा के कारण प्रभावपूर्ण बन गए। प्रेमवाटिका, रसखान शतक और सुजान रसखान इनकी उपलब्ध पुस्तकें हैं। रसखान रचनावली के नाम से इनकी रचनाओं का संग्रह भी मिलता है। रसखान जी की मृत्यु सन् 1628 में हुई।

युगलप्रिया–भक्ति काव्यधारा के भक्त कवि युगलप्रिया वैष्णव संप्रदाय के संत कवि थे। कुछ लोगों का मानना है कि श्री भट्ट जी ही युगलप्रिया कहलाते थे। कहा जाता है कि श्री भट्ट जी इन पदों के गान के समय आत्मविभोर हो जाते थे और उन क्षणों में उन्हें भगवान के युगलरूप के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाते थे। ब्रजभाषा में रचित इनका ग्रंथ 'युगल शतक' प्रसिद्ध ग्रंथ है। इस काव्य में कवि ने राधा-कृष्ण के प्रेम की मधुर व्यंजना की है। प्रस्तुत पद में भक्त का भाव गोपी-भाव या सख्य-भाव है। इस पुस्तक में प्रस्तुत पद का राग है–मेघरंजनी ताल, झप ताल श्रीकृष्ण की बालरूप-माधुरी का वर्णन उनकी अनन्य भक्ति व आसक्ति का प्रतीक है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) श्रीकृष्ण ने किसका 'मेवा' त्याग दिया?

(ख) राजसूय यज्ञ किसने किया था?

(ग) सबसे ऊँची क्या है?

(घ) शबरी ने झूठे बेर किसे खिलाए?

(ङ) हरि के हाथ से माखन रोटी कौन ले गया?

(च) श्रीकृष्ण किसके सारथी बने?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) ऐसी प्रीत बढ़ी ..... गोपिन नाच नचाई।

(ख) ..... सब रस फीके, दृगनि न और रंग लागै री।

(ग) वा ..... को रसखानि बिलोकत।

2. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(क) वा छवि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।

(ख) बढ़ऽयो बिरत अनुराग अनोखो, लगन लागी मन नहीं लागै री।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि ने 'प्रेम सगाई' को सबसे ऊँचा क्यों माना है?

(ख) श्रीकृष्ण ने प्रेम के वशीभूत होकर क्या-क्या किया? क्या यह उचित था?

(ग) कवि को श्रीकृष्ण के अलावा और कोई क्यों नहीं भाता?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) "सबसे ऊँची प्रेम सगाई...." पद का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

(ख) "स्याम स्वरूप बस्यो हिय में, फिर और नहिं जग भावै री।" में निहित भक्ति भाव को वर्णित कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. खेलत-खात फिरै अँगना, पग पैजनी बाजति, पीरी कछोटी। (अलंकार छाँटिए।)

.....

2. दुर्योधन को मेवा त्यागो, साग विदुर घर पाई। (शैली की दृष्टि से कोई एक विशेषता बताइए।)

.....

3. कहा कहूँ को माने मेरी, सिर बीती सो जानै री। (पंक्ति में छिपे मुहावरे को छाँटिए।)

.....

4. भक्ति-धारा में दिए गए तीनों पदों में भाषा, भाव और रचना-काल की दृष्टि से क्या समानता है?

.....

.....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. राजसूय यज्ञ के भव्य उत्सव की कल्पना कीजिए।
2. शबरी और राम के बीच हुए संवादों को अपनी कल्पना से लिखिए।

क्रियाकलाप

- निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़िए और चित्रों को पहचानकर नाम लिखिए–

(क) चमक उठी थी सत्तावन में
उसकी तलवार
डर जाते सैनिक देखकर
तलवार की धार,
बुंदेले के हर लब पर थी
उस महान ललना की बात।
बताओ कौन?

(ख) चक्षु नहीं पाए पर पाया काव्य ज्ञान,
माखन चोर की चेष्टाएँ लिख बने महान।
हिंदी साहित्य जगत् के लिए,
वे है सूर समान।

(ग) गोदान से लेकर कर्मभूमि तक
कफ़न से लेकर सवा सेर गेहूँ तक
जमींदारों की उधेड़ते रहे खाल
पहले थे धनपतराय बाद में कहलाए उपन्यास सम्राट।

(घ) अंतरिक्ष जगत् का तारा वह,
गुरुभक्ति में आरूणि वह,
भारत माँ को 'विजन' बताने वाला
मिसाइल मैन वह–बताओ कौन?

....

16 बूढ़ी अम्मा

चिंतन-मनन

माँ प्रथम गुरु है तो घर पहली पाठशाला होती है। व्यक्ति की नींव के रूप में घर में संस्कार के बीज बोए जाते हैं। आगे चलकर वही संस्कार सही दिशा में जाने पर एक अच्छे नागरिक का निर्माण करते हैं।

अरे ओ बीनू! उधर कहाँ जा रहा है?

इधर आ, वर्ना उस झोपड़ी में एक बुढ़िया डायन रहती है। वह तुझे खा जाएगी। चल जल्दी भाग कर इधर आ। नहीं तो वो तुझे झोपड़ी के भीतर खींच कर ले जाएगी।

बीनू–नहीं मेरी बॉल झोपड़ी के अंदर चली गयी है। माँ मुझे डाँटेगी। मैं बॉल लेने जा रहा हूँ।

न जा, न जा, सारे बच्चे एक साथ चिल्ला उठे।

गाँव में मैदान वाले किनारे पर, जहाँ बच्चे क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, खो-खो इत्यादि खेल खेलते थे। वहीं कुछ दूर किनारे पर, एक झोपड़ी थी, जिसमें एक वृद्धा औरत रहती थी। गाँव का कोई भी व्यक्ति उस झोपड़ी के पास नहीं जाता था। बच्चे भी अकसर मनगढ़ंत कहानियाँ गढ़ते और बातें बनाते रहते थे। उस झोपड़ी में एक बुढ़िया डायन रहती है। बच्चे कभी भी उस झोपड़ी के इर्द-गिर्द नहीं जाते। संयोग बस आज बीनू की बॉल बूढ़ी अम्मा की उस झोपड़ी में चली गई थी। बीनू 10 वर्ष का लड़का था। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान था। अकसर खिलौने बीनू ही लाता और सारे बच्चे साथ में खेलते। बीनू डाँट खाने के भय से हिम्मत जुटाकर झोपड़ी की ओर बढ़ रहा था। सारे बच्चे उसे झोपड़ी के भीतर जाने से मना कर रहे थे। किंतु बीनू को किसी भी हालत में वह बॉल चाहिए था। अतः उसने झोपड़ी के भीतर प्रवेश किया। भीतर झोपड़ी में एक पुरानी चारपाई पड़ी हुई थी। उस पर फटी हुई एक गुदड़ी बिछी हुई थी। बूढ़ी अम्मा आँखें मूँदकर उस पर लेटी हुई थी। आहट हुई तो आँखें खोलकर देखी तो सामने बीनू खड़ा था। बूढ़ी अम्मा के दोनों आँखों की कोरों से अश्रु प्रवाहित हो रहे थे। उसने एक चादर ओढ़ रखी थी। चादर की अवस्था लगभग जर्जर

शब्दार्थ–डायन–छोटे बच्चों को डराने के लिए रखा नाम (witch, beldam),
प्रवाहित–बहना (flowing)

हो चुकी थी। खाट के पास मिट्टी के दो बरतन पड़े हुए थे। एक बरतन कुछ थाली जैसा था जो कि किनारे पर थोड़ा-सा टूट गया था। पानी का कुल्हड़ भी ठीक अवस्था में नहीं था। घर में कुछ खाने-पीने की चीज़ें भी नहीं दिखाई दे रही थी। बीनू ने चारों तरफ़ अपनी निगाहें दौड़ाई। बॉल कहीं नज़र नहीं आई। बीनू ने झुककर चारपाई के नीचे देखा तो बॉल वहीं पड़ी हुई थी। बीनू जैसे ही चारपाई के नीचे झाँकने को झुका, बूढ़ी अम्मा ने उसका हाथ पकड़कर कहा–"बेटा, उस मिट्टी के चुक्कड़ में पानी लाकर दे, दो। मेरा गला सूख गया है, थोड़ा पानी पिला दो बेटा।" वृद्धा ने आग्रह पूर्वक कहा। जैसे ही वृद्धा ने बीनू का हाथ पकड़ा, बीनू भय से काँपने लगा।

बूढ़ी अम्मा ने कहा–"डरो मत बेटा, मैं एक बेसहारा वृद्धा हूँ। तुम मुझे पानी पिला दो ईश्वर की तुम पर बड़ी कृपा होगी।"

बीनू थोड़ा सामान्य और सहज होते हुए बोला–"जी अम्मा अभी लाता हूँ आपके लिए पानी।" फिर पीछे मुड़कर बोला–"बूढ़ी अम्मा आपको तो ज्वर है। मैं आपके लिए दवा लेकर आता हूँ।" झोपड़ी से कुछ दूरी पर एक नल था। बीनू ने नल से चुक्कड़ में पानी भरकर बूढ़ी अम्मा को पिलाया। बूढ़ी अम्मा ने बीनू को प्यार से पुचकारकर बहुत सारा आशीष दिया।

शब्दार्थ–चुक्कड़–पानी पीने का मिट्टी का बरतन (clay pot), **वृद्धा**–बुर्ज़ुग महिला (old lady), **बेसहारा**–बिना सहारे (helpless), **ज्वर**–बुखार (fever)

बीनू बॉल लेकर अपने घर तो चला गया लेकिन वह अनमना-सा था। उसे हर वक्त बूढ़ी अम्मा दिखाई दे रही थी। पलभर के लिए भी उसके दृष्टिपटल से झोपड़ी वाला दृश्य ओझल नहीं हो रही थी। वह अपनी माँ से बोला–"माँ मुझे बहुत ज़ोर की भूख लग रही है, मुझे खाना दो।" माँ ने बीनू को खाना दिया तो बीनू बोला–"ये क्या माँ? तुमने मुझे बस चावल सब्ज़ी दिया है? दाल और साग नहीं दिया?"

माँ अचरज से दीदे फाड़कर बीनू को निहार रही थी। तुझे क्या हो गया है? आज तू दाल और साग भी माँग रहा है?

बीनू ने कहाँ–"हाँ, माँ! आज मुझे दाल और साग खाने का मन हो रहा है।"

माँ बोली–"मेरे लाल! मुझसे ज़्यादा खुश और कौन होगा, जो तू दाल और साग खाने लगे। मैं तो तुझे समझा-बुझाकर थक चुकी हूँ। आज में बहुत खुश हूँ।"

बीनू एक बड़े गिलास में पानी और थाली में भात, सब्ज़ी, साग और कटोरी में दाल लेकर उस झोपड़ी की ओर चल पड़ा।

माँ को कुछ दिनों पूर्व बुखार आया था तो बुखार की दवाई माँ ने आलमारी पर रख दी थी, उसे भी साथ ले गया था। उसने बूढ़ी अम्मा के पास पहुँचकर भोजन की थाली और पानी का गिलास नीचे रख अपने दोनों हाथों का सहारा देकर बूढ़ी माँ को उठाया, फिर चारपाई पर ही भोजन की थाली रख दी। बीच-बीच में वह पानी भी पिलाता रहा। भोजन के पश्चात उसने बूढ़ी अम्मा को दवाई भी खिलाई। उसने बूढ़ी अम्मा से कहा–"बूढ़ी अम्मा अब आप सो जाओ, आप जल्दी ठीक हो जाओगी।

शब्दार्थ–**दृष्टिपटल**–आँखों के सामने (retina), **निहार**–देखना (to see)

मैं, आपसे रोज़ मिलने आऊँगा और आप के लिए खाना भी लेकर आऊँगा। आप चिंता मत करना।" बूढ़ी अम्मा भोजन, जलपान कर तृप्त हो खुशी के आँसू बहाने लगीं और आशीर्वचनों की बौछार करने लगी।

बीनू ने बूढ़ी अम्मा से कहा–"आपको किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो तो आप मुझे बता देना, मैं आपके लिए लेकर आऊँगा।" बीनू जब झोपड़ी से बाहर निकला तो देखा कि तिमिरमाली (सूर्य) बादलों के साए में ओझल हो गए हैं। आसमान में अब तिमिर निशा घिर आई है। सितारे जगमग-जगमग दीप ज्योति की भाँति शुभ मंगल सूचनाएँ दे रहे हैं। बीनू बड़े-बड़े डग भरते हुए अपने घर की ओर प्रस्थित हो रहा है।

माँ हैरान-परेशान सी अपने 10 वर्ष के बीनू की राह तक रही है। आस-पड़ोस में जा-जाकर पूछ भी आई थी, "हमारा बीनू तो नहीं आया इधर?"

सबने एक ही जवाब दिया, "नहीं"।

माँ का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, तभी बीनू सामने से आता हुआ दिखाई पड़ा। जब माँ की बीनू पर नज़र पड़ी, तो माँ हड़बड़ाई हुई, बीनू पर खिझती हुई बौखलाए स्वर में बोली–"बीनू तू कहाँ गया था? मेरी तो जान पे बन आई थी। तुझे पता है? तू मेरे जिगर का टुकड़ा है? तुझे मैं अपनी आँखों से ओझल नहीं देख सकती। बता कहाँ गया था? अब तलक? रात होने को आई है और तू न जाने कहाँ-कहाँ भटक रहा है? थोड़ी देर आने में जो और विलंब करता तो मेरी जान ही निकल जाती।"

बीनू ने कहा–"माँ मैंने आप से एक बात छिपाई है, बोलो आप मुझे डाँटोगी तो नहीं, तो मैं आपको बताऊँ?"

"नहीं मेरे लाल, तू बता मैं कुछ न बोलूँगी।"

"माँ! मैं उस बूढ़ी अम्मा की झोपड़ी में गया था, उन्हें बहुत तेज़ बुखार था, मैंने अपना खाना और आपने जो दवाई रखी थी, उन्हें ले जाकर दे दी।" बीनू ने सारी कहानी माँ को सुना दी। माँ ने आँखों में गंगा-जमुना भर बीनू को सीने से लगाकर कहा–"बेटा तू तो बहुत बड़ा हो गया है।"

बीनू ने कहा–"माँ आप रोज़ बूढ़ी अम्मा के लिए खाना देना, मैं नित्य लेकर जाऊँगा।"

माँ ने कहा–"हाँ क्यों नहीं बेटा, अवश्य लेकर जाना। ईश्वर हर माँ को तेरे जैसी औलाद दें। खुशी की निर्झरिणी बहाती अक्षु पलकों से, बेटे को गले से लगा लिया।

–आर्यावर्ती सरोज 'आर्या'

शब्दार्थ–आशीर्वचन–आर्शीवाद (blessings)

लेखिका परिचय

आर्यावर्ती सरोज 'आर्या' ने हिंदी साहित्य में अपना अनोखा योगदान दिया है। इनकी माता का नाम करुणा देवी तथा पिता का नाम श्री सूर्यभान मिश्र है। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें कहानी, काव्य, उपन्यास आदि समाविष्ट हैं। इन्होंने गीत, गज़ल, संस्मण, निबंध में भी लेखनी चलाई है। इन्हें नारी गौरव सम्मान, साहित्य गौरव सम्मान, युग सुरभि सम्मान से सम्मानित किया गया है। ये 'द इंडियन एरा' तथा 'अखंड भारत' में सहसंपादन का कार्य कर रही हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) बच्चे झोपड़ी के अंदर जाने से क्यों डरते थे?

(ख) गाँव के मैदान में बच्चे कौन-सा खेल खेलते थे?

(ग) बीनू ने झोपड़ी के अंदर क्या देखा?

(घ) बुढ़िया ने बीनू से क्या कहा?

(ङ) बीनू की माँ अचरज में क्यों पड़ गई?

लिखित

1. चरित्र चित्रण कीजिए–

(क) बूढ़ी अम्मा

(ख) बीनू

2. रिक्त स्थान भरिए–

(क) अम्मा की आँखों से ..... प्रवाहित हो रहे थे।

(ख) डरो मत बेटा, मैं एक बेसहारा ..... हूँ।

(ग) बूढ़ी अम्मा को तेज़ ..... था।

(घ) ईश्वर हर माँ को तेरी जैसी ..... दे।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) बूढ़ी अम्मा की झोपड़ी में जाने से लोग क्यों कतराते थे?

(ख) बीनू ने बूढ़ी अम्मा की मदद कैसे की?

(ग) बीनू की हरकत देखकर माँ ने क्या कहा?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'बूढ़ी अम्मा' कहानी क्या संदेश देती है?

(ख) 'बूढ़ी अम्मा' कहानी पढ़कर आपने क्या सीख ली और इसे अपने जीवन में कैसे अपनाएँगे?

भाषा ज्ञान

1. विलोम शब्द लिखिए–

(क) जल्दी – ..... (ख) अंदर – .....

(ग) पुरानी – ..... (घ) पास – .....

(ङ) भय – ..... (च) आज – .....

2. कहानी में आए निम्नलिखित शब्द-युग्मों से वाक्य बनाइए–

(क) खाना-पीना – .....

(ख) बीच-बीच – .....

(ग) ज़ोर-ज़ोर – .....

(घ) जगमग-जगमग – .....

(ङ) बड़े-बड़े – .....

(च) कहाँ-कहाँ – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. कहानी में वर्णित बूढ़ी अम्मा जैसे लोगों के लिए सरकार को क्या प्रयास करने चाहिए?
2. अगर आप बीनू की जगह होते तो क्या करते? **(मूल्यपरक प्रश्न)**

क्रियाकलाप

1. गरीब लोगों की मदद के लिए कुछ समाज सेवी संस्थाएँ निरंतर कार्यरत हैं। इंटरनेट के माध्यम से इसकी जानकारी हासिल कर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. वह आता–
   दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
   पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
   चल रहा लकुटिया टेक,
   मुट्ठी-भर दाने को–भूख मिटाने को
   मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता–
   दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
   साथ दो बच्चे भी हैं, सदा हाथ फैलाए,
   बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
   और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।
   भूख से सूख ओंठ जब जाते
   दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते?
   घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
   चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
   और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

   (क) इस कविता को पढ़ने के बाद आपके मन में क्या भाव उठते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

   (ख) आप 'भिक्षावृत्ति' को किस प्रकार दूर करने का प्रयास करेंगे?

परियोजना-1

प्रस्ताव-लेखन

परीक्षा में प्रस्ताव लिखने के लिए आते हैं। प्रस्ताव के विषय प्रायः विचारात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक तथा वर्णनात्मक होते हैं। इनके द्वारा विद्यार्थियों की भाषा एवं अनुभूति, कल्पनाशक्ति और उनके ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। प्रस्ताव लेखन में विद्यार्थी को अपनी सूझ-बूझ, विषय पर पकड़, तारतम्यता तथा अभिव्यक्ति की स्पष्टता का परिचय देना होता है। इस योग्यता को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को बाह्य जगत के निरीक्षण, सामान्य ज्ञान तथा समसामयिक विषयों की जानकारी होनी आवश्यक होती है। जो देखा, अनुभव किया और समझा, उसी को वह अपनी लेखनी से उतार सकता है।

उदाहरण–

1. **'जब किसी भवन में आग लगी हो।' इस दृश्य का वर्णन कीजिए।**

जून के महीने की बात है। दोपहर के दो बजे थे। आसमान से आग बरस रही थी। माँ की तबीयत खराब थी। उनकी दवा खत्म हो चुकी थी। वह दवा चाँदनी चौक से मिलती थी। मैं तैयार होकर चाँदनी चौक की ओर चल पड़ा। गरमी की भयंकरता को देखकर माँ ने मुझे रोकना चाहा परंतु भला मैं कैसे रुक सकता था! जैसे ही मैं लाल किले की ओर से चाँदनी चौक की ओर मुड़ा, मुझे अचानक बड़ी तेज़ 'टन-टन' की आवाज़ सुनाई दी। मैंने मुड़कर देखा कि सड़क पर लाल रंग की चार गाड़ियाँ दनदनाती हुई चली आ रही थीं। मैं घबराकर पीछे हट गया और पटरी पर खड़ा हो गया। कुछ लोग चिल्लाने लगे– "हट जाओ, हट जाओ, कहीं आग लगी है।" गाड़ियाँ थोड़ी ही दूर जाकर रुक गईं। कुछ लोग गाड़ियों की ओर भागने लगे। मैं भी उनके पीछे-पीछे चल दिया। गाड़ियों के निकट पहुँचकर मैंने देखा कि एक तीन मंज़िला मकान में आग लगी थी। ऐसी भयंकर आग मैंने पहले कभी नहीं देखी थी।

यद्यपि आग पहली मंज़िल पर लगी थी परंतु दूसरी और तीसरी मंज़िल के लोग भी अपना-अपना सामान निकालकर बाहर सड़क पर फेंक रहे थे। दमकल विभाग के

कर्मचारी पानी के पाइपों से आग बुझाने की भरसक चेष्टा कर रहे थे परंतु आग बुझने का नाम ही न लेती थी। साँप की तरह फन फैलाकर ऊपर की ओर बढ़ती ही जा रही थी। 'चटाक-चटाक' की आवाज़ों के साथ आग के छोटे-छोटे पिंड उछलकर इधर-उधर गिर रहे थे। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। दमकल विभाग के कुछ कर्मचारी स्त्रियों और बच्चों को मकान से बाहर निकालने में सहायता कर रहे थे। कुछ अधिकारी लोगों को पीछे हटने के लिए कह रहे थे।

आग बुझाने वाले कर्मचारियों का भी बुरा हाल था। वे ऊँची-ऊँची सीढ़ियों पर खड़े होकर आग पर पानी की वर्षा कर रहे थे परंतु आग काबू में नहीं आ रही थी। यदि एक स्थान की आग बुझती, तो कई नए स्थानों पर फैली हुई दिखाई देती। मकान बहुत पुराना था। लकड़ी की खिड़कियाँ और दरवाज़े धू-धू करके जल रहे थे। गाड़ियों की टंकियों में पानी का दवाब कम होने के साथ-साथ कर्मचारियों के हाथ-पैर फूलते जा रहे थे। देखते-ही-देखते आग तीसरी मंज़िल तक जा पहुँची। आकाश में दिखाई पड़ने वाली लपटों को देखकर ऐसा लगता था, मानो आग अपनी विजय-पताका फहरा रही हो।

इतने में ही दमकल विभाग की चार गाड़ियाँ और आ पहुँचीं। नए साथियों के आने से कर्मचारियों का साहस दुगना हो गया। वे नए उत्साह के साथ आग बुझाने में लग गए। नई गाड़ियों में से बड़े-बड़े पाइप खोलकर तीसरी मंज़िल पर पानी वितरण की व्यवस्था बढ़ा दी गई। उन विशालकाय पाइपों को देखकर ऐसा लगता था, मानो बड़े-बड़े अजगर उस मकान को घेरकर अपनी फुँकारों से जल की धार फेंक रहे हों। धीरे-धीरे आग की तेज़ी घटने लगी। आग की तेज़ी के घटने के साथ ही दमकल विभाग के कर्मचारियों का उत्साह और बढ़ गया और थोड़ी ही देर में पानी की मार के आगे आग ने दम तोड़ दिया।

थोड़ी देर में ही 'हटो-हटो', 'चलो-चलो' का शोर मचने लगा। पुलिस ने वहाँ आकर लोगों की भीड़ को हटाना शुरू कर दिया था। इसी बीच मेरे कानों में रोने-चिल्लाने की आवाज़ें पड़ीं। मैंने उधर जाकर देखा कि स्त्रियाँ और बच्चे बिलख-बिलखकर रो रहे थे। उनकी चीत्कार को सुनकर मेरा दिल बैठ गया और मैं माँ की दवाई खरीदे बिना ही अपने घर लौट आया।

घर आकर मैंने विचार किया कि यदि हम पहले से ही सावधान रहें तथा अपने घरों और कार्यालयों में आग बुझाने वाले यंत्र, रेत, पानी आदि अग्नि से बचाव के समुचित प्रबंध रखें तो इस प्रकार की भीषण दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

2. एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो–

अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत

मनुष्य के पास बुद्धि है। वह समय को पहचानकर काम करता है। पर कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं, जब उसे अपने किए हुए काम पर पछताना पड़ता है। एक बार समय चूक जाए तो पश्चाताप करने से कोई लाभ नहीं होता। रहीम ने कहा है कि जब तक दूध, दूध है, तब तक ही उसको मथकर मक्खन निकाल लेना चाहिए। बिगड़ जाने पर उसे कितना ही मथा जाए उसमें से मक्खन नहीं निकलेगा। जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने समय की गति को पहचानकर काम किए, तभी उन्हें सफलता मिली। इसलिए बिना सोचे-समझे काम नहीं करना चाहिए। अविवेक विपत्तियों की जड़ होता है। सही अवसर को पहचानकर उसका सही उपयोग करना चाहिए, नहीं तो अवसर भी समय की तरह फिर वापस नहीं आता है।

सेठ करमचंद के चार बेटे थे–कृष्णचंद, भालचंद, रामदास और मोहनदास। सेठ करमचंद फलों के बहुत बड़े व्यापारी थे। सेठ जी ने अपना धंधा बहुत छोटे पैमाने पर शुरू किया था परंतु अपनी मेहनत और लगन से थोड़े ही दिनों में सेठ करमचंद शहर के जाने-माने प्रतिष्ठित व्यापारियों की गिनती में आ गए। दूर-दूर से नाना प्रकार के फलों का आयात करते तथा न केवल अपने शहर में बल्कि शहर के आस-पास के छोटे शहरों के थोक व्यापारियों को भी फलों की पूर्ति करते थे। बेटों के बड़े होने पर उन्होंने उन्हें भी अपने ही धंधे में शामिल कर लिया। चारों भाइयों में आपस में बहुत प्रेम था परंतु उनकी पत्नियों में आपस में नहीं बनती थी। कोई भी अपने को दूसरे से कम न समझती थी। यहाँ तक कि बच्चों के लालन-पालन में भी होड़ लगी रहती थी। कीमती वस्त्र, जूते, खिलौने आदि सभी में प्रतिस्पर्धा रहती। सभी बच्चों को शहर के प्रतिष्ठित स्कूलों में दाखिल कराया गया। रामदास के इकलौते बेटे अमित में अक्ल कम और शान ज़्यादा थी। पैसे की अधिकता के कारण उसने कई गलत आदतें पाल ली थीं। वह सारा दिन मौज-मस्ती करता, चलचित्र देखने जाता, नए-नए फ़ैशन के कपड़े पहनता। उसका मन पढ़ने में नहीं लगता था। शुरू में तो उसकी माँ उसे अंधाधुंध रुपये देती तथा उसकी प्रत्येक माँग पूरी करती थी। उन्होंने इसके नतीजे पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। अमित ने स्कूल में अपने से बड़ी उम्र के लड़कों से दोस्ती कर ली। वे सदा अमित से रुपये माँगते तथा उसके अमीर होने का लाभ उठाते। यदि अमित उनकी माँग पूरी न कर पाता तो वे उसे डराते-धमकाते। अब वह स्कूल जाने के नाम से डरने लगा। उसका मन पढ़ाई-लिखाई से बिलकुल उचट गया। अपनी फिजूलखर्ची के लिए उसने घर में चोरी करना शुरू कर

दिया। माँ बहुत परेशान थी परंतु कुछ नहीं कर सकती थी। अमित ने स्कूल छोड़ दिया और आस-पास के निकम्मे लड़कों से दोस्ती कर ली। इस गलत संगति के प्रभाव में आकर उसने घर से बाहर भी चोरी करना शुरू कर दिया। शुरू-शुरू में तो वह साफ़ बच गया। एक दिन उसने सबके साथ मिलकर पड़ोसी की ही कार पर हाथ साफ़ कर दिया। रिपोर्ट थाने में दर्ज़ हुई और अमित पकड़ा गया। इस चोरी के साथ-साथ उसके बहुत-से अन्य गलत कार्यों का भी पर्दाफ़ाश हो गया। उसे जेल हो गई, तब उसकी माँ को होश आया कि यदि उसने अमित की गलत आदतों पर पहले ही रोक लगाई होती तो आज यह नौबत न आती।

इसीलिए कहते हैं कि समय रहते ही यदि सावधानी से काम न किया जाए तो वह अवसर पछताने से लौटता नहीं है। लोहे को भी तभी पीटना चाहिए, जब वह गरम होता है। जब वह ठंडा हो जाता है तो उससे अपने इच्छानुसार वस्तुएँ नहीं बना सकते। प्यास लगने पर कुआँ खोदने वाला व्यक्ति अपना समय भी बरबाद करता है और अपनी प्यास भी नहीं बुझा पाता है। इसीलिए कहते हैं–

"अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत"

3. चित्र पर आधारित प्रस्ताव लेखन

चित्र पर आधारित प्रस्ताव लिखना भी एक कला है। चित्र को देखकर हम अपने भावों, विचारों और घटनाओं को व्यक्त करते हैं। छात्रों के अभिव्यक्ति कौशल के विकास के लिए चित्र आधारित लेखन का अभ्यास अत्यंत आवश्यक है। चित्र पर आधारित प्रस्ताव लिखते समय चित्र का सूक्ष्म अवलोकन करके मन में उठे भावों को कहानी, जीवनी, निबंध अथवा आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

चित्र आधारित लेखन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए–

1. चित्र को सूक्ष्मता से देखकर उसमें छिपी बारीकियों का अवलोकन करें।
2. मन में विभिन्न प्रकार के प्रश्न एवं उत्तर बना-बनाकर चित्र को कुछ देर तक अवश्य देखें।
3. चित्र में दिखाई देने वाले लोगों के चेहरे के भावों और क्रियाओं पर ध्यान दें।
4. चित्र वर्णन करते समय वास्तविक तथा मूल घटनाओं से दूर न जाएँ।
5. चित्र का सिलसिलेवार वर्णन करते हुए प्रस्ताव से जुड़ें।
6. चित्रों का सजीव, रोचक एवं प्रभावशाली भाषा में वर्णन करें।
7. वाक्य छोटे-छोटे हों और प्रत्येक नवीन विचार नए अनुच्छेद से प्रारंभ हो।

उदाहरण–

- **दिए गए चित्र को देखिए। उस पर आधारित कोई ऐसा प्रस्ताव या कहानी लिखिए जिसका सीधा संबंध चित्र से हो।**

यह चित्र बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का है। बाढ़ प्राकृतिक विनाश का एक प्रबल रूप माना जाता है। चारों ओर जल-प्लावन और विनाश का भयानक दृश्य।

जब अत्यधिक वर्षा या बर्फ़ पिघलने के कारण पृथ्वी के धरातल पर बड़ी मात्रा में जल आ जाता है तो इतने जल की मात्रा को मिट्टी या वनस्पति सोख नहीं पाती। सोखा न गया जल भूमि पर बहने लगता है जिसे 'धरातलीय बहाव' कहते हैं। यह जल नदियों में जा गिरता है और कई बार नदी-तट भी इसे रोक नहीं पाते। तब यह जल किनारे तोड़कर बहने लगता है।

बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में कई प्रकार की क्षति होती है। कई विनाशक बाढ़ें ऐसी होती हैं, जिनमें मानव तथा जीव-जंतु भारी संख्या में मारे जाते हैं। निचले क्षेत्रों में जब रात्रि में या अचानक जल स्तर बढ़ने लगता है तो बच निकलने का मार्ग नहीं रहता।

जल स्तर बढ़ने से सड़क व रेल-यातायात अवरुद्ध हो जाता है। प्राय: सड़कों को भारी क्षति होती है। वे या तो जल में डूब जाती हैं या फिर तीव्र बहाव द्वारा बहाकर ले जाई जाती हैं। रेलवे की पटरियों की भी ऐसी ही दशा हो जाती है। संचार सुविधाएँ ठप्प हो जाती हैं; बिजली व संचार की आपूर्ति बाधित हो जाती है; खंभे उखड़ जाते हैं; डाक-उपकरण बह जाते हैं; पेड़ों के उखड़ने व गिरने से तार टूट जाते हैं। ऐसी स्थिति में उस बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का संपर्क देश के अन्य क्षेत्रों से पूर्णत: कट जाता है।

बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में कृषि-क्षेत्र की भारी क्षति होती है। फ़सलें कई दिनों तक जलमग्न रहने के कारण नष्ट हो जाती हैं। उपजाऊ भूमि जल के बहाव द्वारा संदूषित या खंडित हो जाती है।

बाढ़ से इतना विनाश होता है कि वह क्षेत्र कई वर्ष तक उबर नहीं पाता। लोग चारों ओर से मृत पशुओं व पक्षियों से घिर जाते हैं। इससे कई प्रकार की महामारियाँ फैलती हैं; जैसे– अतिसार तथा पीलिया। ये दोनों जलीय रोग हैं जो प्राय: बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में रातों-रात फैलकर महाकाल का रूप धारण कर जाते हैं। सरकारी तथा गैर सरकारी स्वयंसेवी संगठन ऐसे क्षेत्रों में शिविर लगाकर लोगों को खाद्य-सामग्री व उपचार-सुविधाएँ प्रदान करते हैं। कई बार जल-स्तर अधिक होने पर सरकारें उस क्षेत्र में हवाई मार्ग से खाद्य-सामग्री व दवाइयों के पैकेट गिराने की व्यवस्था करती हैं।

भारी वर्षा तथा वन-कटान बाढ़ के मुख्य कारण हैं। इसे रोकने के लिए कई विधियाँ अपनाई जाती हैं। परंपरागत विधियों में–तटबंधों का निर्माण, बाढ़ के जल बहाव को मोड़ने के लिए कृत्रिम नहरों का प्रावधान, जलभंडारों व बाँधों का निर्माण आदि हैं। आजकल बहुउद्देश्यीय परियोजनाएँ अच्छी समझी जाती हैं क्योंकि इससे न केवल नदी का जल नियंत्रित होता है अपितु संग्रहीत जल को नहरों के द्वारा भी नियंत्रित किया जा सकता है। इस प्रकार के उपायों द्वारा बाढ़ की संभावना को कम किया जा सकता है।

अभ्यास के लिए

दिए गए उदाहरणों के अनुसार निम्नलिखित विषयों पर प्रस्ताव लिखिए–

1. भीड़-भाड़ वाले बाज़ार में कार, स्कूटर इत्यादि चलाने में क्या-क्या परेशानियाँ आती हैं, उनका वर्णन कीजिए।
2. एक दिन आप स्कूल से लौट रहे थे। एक छोटा बालक सड़क पार करते समय एक कार से टकरा गया। संक्षेप में बताइए कि वह दुर्घटना क्यों हुई, उस दुर्घटनाग्रस्त बालक के लिए आपने क्या किया तथा उस दुर्घटना का क्या परिणाम निकला?
3. सड़क पर एक दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को समयाभाव होते हुए भी अस्पताल पहुँचाकर आपने जो आंतरिक आनंद प्राप्त किया, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
4. निम्नलिखित उक्ति के आधार पर कोई प्रस्ताव या कहानी लिखिए–
'का बरखा जब कृषि सुखाने। समय चूकि पुनि का पछताने।'

गतिविधि

प्रस्ताव-लेखन

वाहनों की अधिकता, टूटी-फूटी सड़कें, घूमते लावारिस पशु तथा असावधानी के कारण सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं। सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत कीजिए।

परियोजना-2

सार-लेखन

दिए गए अनुच्छेद, गद्यांश या अवतरण के मूल भावों की रक्षा करते हुए उसे संक्षिप्त करना ही सार-लेखन कहलाता है।

सार-लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए–

1. गद्यांश को भली-भाँति समझने के लिए उसे दो-तीन बार अवश्य पढ़ना चाहिए।
2. उसका मुख्य भाव समझने का प्रयास करना चाहिए।
3. गद्यांश के मुख्य भावों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
4. सार का आकार दिए गए गद्यांश के एक-तिहाई से अधिक न हो तथा मुख्य विषय से संबंधित कोई बात छूटने भी न पाए।
5. शीर्षक का चुनाव केंद्रीय भाव के आधार पर हो। शीर्षक उचित तथा छोटा हो।
6. सार में अपनी ओर से उदाहरण न दिए जाएँ तथा अलंकार, मुहावरे, विशेषण, क्रियाविशेषण, दुहराव, उद्धरण, उदाहरण आदि को भी हटा दिया जाए।

उदाहरण–

साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

प्रश्न–

(क) उपर्युक्त अनुच्छेद का शीर्षक लिखिए।

(ख) उपर्युक्त अनुच्छेद का सार लिखिए।

उत्तर–

(क) साहस और ज़िंदगी।

(ख) साहसी मनुष्य निर्भीक होता है। वह साधारण जनमत की उपेक्षा करता है और निडरता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है। ऐसे ही लोग समाज में क्रांति लाते हैं और नई दिशा प्रदान करते हैं।

अभ्यास के लिए

1. मन के सशक्त होने पर शरीर में शक्ति और स्फूर्ति आती है। यदि मन दुर्बल है, तो शरीर निष्क्रिय और निरुद्यम ही रहेगा। यह संसार शक्तिशाली का है। दुर्बल का इस संसार में कहीं ठिकाना नहीं। कायर व्यक्ति मृत्यु से पहले भी सहस्त्रों बार मरता है। कायरता का संबंध मन से है। कायरता और निरुत्साह का दूसरा नाम मन की हार है। परिणामत: मन की हार अत्यंत भयंकर है। मनुष्य स्वयं भाग्य का निर्माता है, पर कायर पुरुष नहीं। सबल ही भाग्य-निर्माता का सामर्थ्य रखता है। कायर तो 'दैव-दैव' ही पुकारता है। साहसी व्यक्ति को अपने मानसिक बल पर अभिमान होता है।

प्रश्न–

(क) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

(ख) उपर्युक्त गद्यांश का सार लिखिए।

2. जब किसी समाज के सदस्यों की संख्या बढ़ती है, तो उसे उनके भरण-पोषण के लिए जीवनोपयोगी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है परंतु वस्तुओं का उत्पादन तो गणितीय क्रम से होता है और जनसंख्या रेखागणित की दर से बढ़ती है। फलस्वरूप जनसंख्या और उत्पादन-दर में चोर-सिपाही का खेल शुरू हो जाता है। आगे-आगे जनसंख्या दौड़ती है और पीछे-पीछे उत्पादन-वृद्धि। वास्तविकता यह है कि उत्पादन-वृद्धि के सारे लाभ को जनसंख्या की वृद्धि व्यर्थ कर देती है। जिसके परिणामस्वरूप वस्तुएँ अलभ्य हो जाती हैं। महँगाई निरंतर बढ़ती रहती है। जीवन-स्तर गिरता जाता है। गरीबी, अशिक्षा, बेकारी चली आती है। देश वहीं-का-वहीं पड़ा रहता है।

प्रश्न–

(क) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

(ख) उपर्युक्त गद्यांश का सार लिखिए।

गतिविधि

सार-लेखन

वहाँ उसे एक स्त्री सिर पर गठ्ठर ढोती हुई मिली। उसके कपड़े मैले और फटे हुए थे। उसने उसका नाम पूछा। स्त्री ने अपना नाम 'धनलक्ष्मी' बताया। इसके बाद पापक ने उसका काम पूछा स्त्री ने कहा–"मैं एक गरीब स्त्री हूँ, मेहनत-मज़दूरी करके पेट पालती हूँ।" पापक को आश्चर्य हुआ–'नाम तो धनलक्ष्मी और रुपयों के लिए तरसती है।' उसने स्त्री से पूछा, "आप तो धनलक्ष्मी हैं फिर भी निर्धन क्यों?" स्त्री बोली, "बेटा, नाम से क्या होता, है, वह तो एक पहचान के लिए है, तुम नाम के धोखे में न पड़ो। संसार में कर्म प्रधान है, नाम नहीं।

प्रश्न–

(क) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

(ख) उपर्युक्त गद्यांश का सार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

परियोजना-3

सूचना-लेखन

किसी विशेष विषय को लेकर हम विद्यालय में सूचना-पत्र देखते हैं। इसके द्वारा किसी विशेष कार्यक्रम, निर्धारित कार्यक्रम में परिवर्तन तथा घटना आदि की सूचना दी जाती है।

सूचना पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. सूचना पत्र में केवल महत्वपूर्ण बातों का वर्णन करें।
2. सूचना सटीक और विषय से संबंधित हो।
3. कम-से-कम शब्दों का प्रयोग हो।
4. सूचना को पढ़ते ही विषय की जानकारी प्राप्त होनी चाहिए।

सूचना लेखन के कुछ उदाहरण–

कंप्यूटर विभाग

दसवीं और बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी अपने-अपने प्रोजक्ट (परियोजना) तैयार करके 12 दिसंबर तक जमा करें।

श्रीमती ममता जैन
कंप्यूटर विभागाध्यक्षा

नूतन विद्यालय (अमृतसर)

विद्यालय में अनुशासन एवं सफाई की समस्याओं पर छात्र-परिषद् की बैठक आज मध्यावकाश में प्रधानाचार्य के कार्यालय में होगी।

8 दिसंबर, 20XX **–प्रधानाचार्य**

सूचना लेखन के कुछ महत्वपूर्ण विषय–

1. विद्यालय में हुए स्वाधीनता दिवस समारोह का सूचना लेखन।
2. विद्यालय में आयोजित निबंध-लेखन प्रतियोगिता का सूचना लेखन।
3. विद्यालय में आयोजित खेल-प्रतियोगिता पर सूचना लेखन।
4. सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन इस विषय को सूचना लेखन।

गतिविधि

सूचना-लेखन

विद्यालय से वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है–छात्र-संपादक होने के नाते एक सूचना पत्र तैयार कीजिए, जिसमें छात्र/छात्राओं को योगदान देने की बात कही हो।

परियोजना-4

कहानी-लेखन

साहित्य की विभिन्न विधाओं में सबसे रोचक विधा कहानी है। कहानी के मुख्य चार अंग होते हैं–

कथावस्तु–यथार्थ या काल्पनिक
पात्र अथवा चरित्र–जीवित या जड़ वस्तु
उद्देश्य–अत्यावश्यक तत्व
कथोपकथन–वार्तालाप

कहानी लिखते समय निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए–

1. विषय-वस्तु वाचक वर्ग के वय एवं रुचि के अनुसार हो।
2. कहानी का आरंभ आकर्षक होना चाहिए।
3. कहानी सकारात्मक हो।
4. भाषा सहज, सरल एवं सुबोध हो।
5. कहानी का अंत सहज ढंग से होना चाहिए।

गतिविधि

संकेतों के आधार पर कहानी लिखना–

रामपुर नामक गाँव ..... लकड़हारा ..... लकड़ी काटते समय कुल्हाड़ी का नदी में गिरना ..... नदी का गहरा होना ..... कुल्हाड़ी न मिलना ..... प्रार्थना ..... परी का सोने, चांदी की कुल्हाड़ी देना ..... लेने से इनकार ..... लोहे की कुल्हाड़ी ..... लेना ..... खुश होना ..... ईमानदारी देखकर सभी कुल्हाड़ियाँ देना।

शब्दकोश का प्रयोग

'डिक्शनरी' शब्द को हिंदी में शब्दकोश कहते हैं। शब्दकोश अर्थात् शब्दों का खज़ाना। जिस पुस्तक में हज़ारों शब्द तथा उनके अर्थ भी हों, उसे ही शब्दकोश कहते हैं। यदि शब्द को भाषा का शरीर माना जाता है, तो अर्थ उसकी आत्मा है।

कोई भी पाठ पूरी तरह से तब समझ में आता है, जब हमें हर शब्द का अर्थ पता हो। कोई कितना भी ज्ञानी हो, कभी-न-कभी किसी शब्द के अर्थ से अनभिज्ञ रहता है, तब शब्दकोश काम आता है। यदि आपको भी किसी शब्द का अर्थ नहीं पता हो, तो आप शब्दकोश में से पता कर सकते हैं।

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने से आप किसी भी शब्द का अर्थ आसानी से ढूँढ़ सकेंगे–

(क) शब्दकोश में शब्दों का एक विशेष क्रम होता है। शब्द के पहले अक्षर का क्रम वही रखा गया है, जो देवनागरी वर्णमाला का है।

(ख) पहले स्वरों का क्रम आता है; जैसे–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

(ग) स्वरों के बाद व्यंजन आते हैं, हर व्यंजन के साथ स्वर मात्रा के रूप में लगते हैं। शब्दकोश में इनका क्रम इस प्रकार दिया जाता है–

क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न
प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह	क्ष त्र ज्ञ श्र

(घ) अं/अँ, अः को अलग अक्षर नहीं माना गया है, ये दोनों ध्वनियाँ 'अ' के साथ ही आएँगी।

(ङ) ङ, ञ, ण से कोई भी शब्द आरंभ नहीं होता।

(च) दूसरे अक्षर के रूप में निम्नलिखित क्रम होगा–
अं/अँ, अः, अक, अख, अग, अघ, अच, अछ, अज, अझ, अट, अठ, अड, अढ, अत, अथ, अद, अध, अन आदि।

(छ) इस क्रम के बाद उस आदि (आरंभ) अक्षर के साथ मात्राएँ लगने का क्रम होगा; जैसे–
का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ।

(ज) मात्राओं के बाद संयुक्त अक्षर अपने क्रम में होंगे; जैसे–
क्क, क्ख, क्च, क्थ, क्न, क्प, क्म, क्य, क्र, क्व, क्ल, क्श, क्ष, क्ष (क्ष) क्स।

हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

हिंदी, भारतीय संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा के रूप में स्वीकृत है, इसलिए इसका मानक रूप निश्चित करना बहुत आवश्यक है। भारत सरकार द्वारा स्थापित विभाग हिंदी निदेशालय ने वर्तनी संबंधी समस्याओं के समाधान तथा एकरूपता की दृष्टि से सराहनीय कार्य किया है।

आइए, मानक हिंदी वर्तनी संबंधी मुख्य बिंदुओं पर विचार करें–

- खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई (।) को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए; जैसे–ख्याति, लग्न, विघ्न, कच्चा, छज्जा, नगण्य, कुत्ता, पथ्य, ध्वनि, न्यास, प्यास, डिब्बा, शय्या, उल्लेख, व्यास, श्लोक, राष्ट्रीय, स्वीकृत आदि।
- 'क' और 'फ/फ़' के संयुक्ताक्षर– संयुक्त, पक्का, दफ़्तर आदि की तरह बनाए जाएँ।
- ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ; जैसे–वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि।
- संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत ही रहेंगे; जैसे–प्रकार, धर्म, राष्ट्र।
- विभक्ति-कारक या चिह्न संज्ञा शब्दों से अलग लिखे जाएँ; जैसे–मोहन ने, मोहन को, मोहन से आदि।
- विभक्ति-कारक या चिह्न सर्वनाम शब्दों से मिलाकर लिखे जाएँ; जैसे–उसने, उसको, उससे आदि। मेरेको, मेरेसे आदि रूप व्याकरण सम्मत नहीं हैं।
- सर्वनाम के साथ यदि दो विभक्ति-चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा अलग लिखा जाए; जैसे–उसके लिए, इसमें से आदि।
- सम्मान हेतु शब्द 'श्री' और 'जी' अव्यय पृथक् लिखे जाएँ; जैसे–श्री मनोहर लाल जी, महात्मा जी आदि।
- समस्त पदों में प्रति, मात्र, यथा आदि अव्यय अलग नहीं लिखे जाएँ; जैसे–प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, निमित्तमात्र, यथासमय, यथोचित आदि।
- क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि में 'य', 'व' की जगह स्वरात्मक प्रयोग किया जाए; जैसे–नयी-नई, हुवा-हुआ। गए, किए, आए, नई, हुआ आदि मानक रूप हैं।
- जहाँ 'य' शब्द का मूल रूप हो वहाँ वह 'य' ही रहेगा; जैसे–स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि।
- कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। दोनों रूपों की एक-सी मान्यता है; जैसे–गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बिलकुल/बिल्कुल, सरदी/सर्दी, भरती/भर्ती, फ़ुरसत/फ़ुर्सत, वापस/वापिस, बरतन/बर्तन, दुबारा/दोबारा आदि। इन वैकल्पिक रूपों में से पहले वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।
- तत्सम शब्द के अंत का हल् चिह्न हिंदी में लुप्त हो चुका है; जैसे–महान, सन, भगवान आदि।
- पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए; जैसे–मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर, दौड़कर-पढ़कर आदि।

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

- विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं, जैसे– पाठ्यपुस्तक में किसी पक्षी के बारे में पढ़कर पक्षियों पर लिखी गई सालिम अली की किताब पढ़कर चर्चा करते हैं।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र/पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते/सुनते हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं।
- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों, जैसे– जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाज़ों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं, जैसे– अपने मोहल्ले के लोगों से त्योहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना।
- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे– अपने आसपास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं– रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती?
- विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे– कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।
- कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे– वर्णनात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।
- विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प की सराहना करते हैं और अपने स्तरानुकूल मौखिक, लिखित, ब्रेल/सांकेतिक रूप में उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे– शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं।
- अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे– कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे– स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फिर अपने गाँव के मेले के दुकानदारों से बातचीत।
- अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं, जैसे– विभिन्न तरीकों से (कहानी, कविता, निबंध आदि) कोई अनुभव लिखना।
- दैनिक जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे– सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि।
- विविध कलाओं, जैसे– हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा (रजिस्टर) का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं, जैसे– कला के बीज बोना, मनमोहक मुद्राएँ, रस की अनुभूति।
- अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं, जैसे– कविता, कहानी, निबंध आदि।